महामति श्री प्राणनाथजी प्रणीत

श्री सिन्धी

श्री राज श्यामाजी

प्रकाशक
श्री ५ नवतनपुरीधाम
जामनगर

निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराज

महामति श्री प्राणनाथजी महाराज

श्री सिन्धी

आखर वेरा उथणजी, आंई रूहें छडे जा रांद ।
उथी बिच अरसजे, कोड करे मिडूं कांध ॥ १

आखर = आखरका, वेरा = समय, उथणजी = उठनेका, आंई = तुम, रूहें = आत्माओ, छडे जा = छोडकर, रांद = खेल, उथी = उठकर, बिच = में, अरसजे = परमधाममें, कोड = हर्ष पूर्वक, करे = करके, मिडूं = मिलो, कांध = प्रियतम ।

आत्म जागृतिके लिए अन्तिम समय आ गया है । हे आत्माओ ! अब तुम नश्वर खेलके मोहको त्याग दो एवं परमधाममें जागृत हो कर हृदयमें उल्लास लेकर अपने प्रियतम धनीसे मिलो ।

धणी मूंहजी रूहजा, हांणे चुआं कींय करे ।
रूहके डिंन्यो परडेहडो, चओ सो दिल धरे ॥ २

धणी = प्रीतम, मूंहजी = मेरे, रूहजा = आत्माके, हांडे = अब, चुआं = कहूं, कींय = कैसे, करे = करके, रूहके = आत्माको, डिंन्यो = दिया, परडेहडो = परदेश (संसार), चओ = कहेगे, सो– वह, दिल = मनमे, धरे = धारण करूंगा ।

हे मेरे आत्माके धनी ! अब मैं आपसे कैसे कहूँ ? आपने मेरी आत्माको

परदेश भेज दिया है। अब आप जो कहेंगे मैं उसीको अपने हृदयमें धारण करूँगी।

इसक डिंने तूं, तो रे इसक न अचे।
घणुएं करियां आंऊं, कूड न उडे रे सचे॥ ३

इसक = प्रेम, डिंने = दिया, तूं = आपने, तो, आपके, रे = बिना, इसक = प्रेम, न = नहीं, अचे = आता, घणुए = बहुत, करी = करूं, आऊं = मैं, कुड = झूठ, न = नहीं, उडे = उडता, रे = बिना, सचे = सत्य।

हे धनी ! आपने ही मुझे अपना प्रेम प्रदान किया है। आपके बिना हृदयमें प्रेम प्रकट नहीं होता है। मैंने अनेक प्रयत्न किए किन्तु सत्यकी प्राप्तिके बिना यह मिथ्या संसार छूटता नहीं है।

कीं करियां केडा वंजां, चुआं कींय करे।
न पेराइयां पडूतर, न अची सगां गरे॥ ४

की = कैसे, करियां = करूं, केडा = कहां, वंजां = जाऊं, चुआं = कहूं, कींय = कैसे, करे = करके, न = नहीं, पेराइयां = पाती हूं, पडूतर = जवाब, न = नहीं, अची = आ, सगा = सकती, गरे = परमधाममें (आपके पास)।

हे धनी ! मैं क्या करूँ, कहाँ जाऊँ, कैसे कहूँ ? न मुझे प्रत्युत्तर प्राप्त होता है और न ही मैं अपने घर (परमधाममें) आ सकती हूँ।

सजण मूंहजी रूहजा, तांजे डिए रूह सांजाए।
त हिकै आहि अरवाह के, पेरे तरे पुजाए॥ ५

सजण = प्रियतम, मूंहजी = मेरी, रूहजा = आत्माके, तांजे = यदि, डिए = दिया हुआ, रूह = आत्माको, त = तो, हिकै = एक ही, आहि = आह, अरवाह के = आत्माओंको, पेरे = चरणोंमें, तरे = तले, पुजाए = पहुंचाए।

हे मेरी आत्माके धनी ! आपकी कृपासे यदि मेरी आत्मा आपको पहचान ले तो हृदयसे निकली हुई एक ही आह उसे आपके श्रीचरणों तक पहुँचा देगी।

धणी मूंहजी रूहजा, गिंनी वेई बिसराई ।
पेइस ते पेचन में, बडी जार बडाई ॥ ६

धणी = प्रीतम, मूंहजी = मेरी, रूहजा = आत्माके, गिंनी = ले, वेई = गई, बिसराई = भूल (माया), पेइस = पडी हूं, ते = उन, पेचन में = फंदोमें, बडी = बडी, जार = जाल (जाली), बडाई = बडप्पन ।

हे मेरी आत्माके धनी ! यह माया मुझे अपनी ओर खींच कर ले गई है । मैं इसकी प्रतिष्ठाके चक्रमें फँसकर उलझ गई हूँ ।

मूं मंगी आं डेखारई, करिया गाल केई ।
हांणे चोराइए त चुआं थी, गाल गरी थी पेई ॥ ७

मूं = मैने, मंगी = मांगी, आं = आपने, डेखारई = दिखाई, करिया = करूं, गाल = बात, केई = कौन सी, हांणे = अब, चोराईए = बुलाते हो, त = तो, चूआंथी = बोलती हूं, गाल = बात, गरी = भारी, थी = होकर, पेई = पडी ।

मैंने खेल देखनेकी माँग की और आपने इसे दिखा दिया. अब मैं आपसे क्या बात करूँ ? इतना भी आप कहलाते हैं इसलिए कह रही हूँ । अब मुझे अपनी माँग ही भारी पड़ रही है ।

तरसाइए त तरसण मोहके, मूं मंझा कीं न सरयो ।
सभ गाल्यूं आंजे हथमें, जाणे तीयं कर्‌यो ॥ ८

तरसाइए = विलखवाते, त = तो, तरसण = विलखती हूं, मोहके = मुझको, मूं = मुझ, मंझा = बिचसे, कीं = कुछ, न = नहीं, सरयो = हुआ, सभ = सब, गाल्यूं = बातें, आंजे = आपके, हथमें = हाथमें, जाण = जानो, तींय = वैसा, कर्‌यो = करो ।

आप मुझे अपने दर्शनोंके लिए तरसाते हैं इसलिए मैं तरस रही हूँ । अन्यथा मुझसे तो कुछ भी नहीं हो सकता है । सब कुछ आपके ही हाथमें है इसलिए जैसा आप उचित समझें वैसा करें ।

सिकाईए त सिकां, मूं में सिकण न कीं ।
रोहोंदिस तेही हालमें, अंईं रखंदा जीं ॥ ९

सिकाईए = तरसाते हो, त = तो, सिकां = तडपती हूं, मूं में = मुझमें, सिकण = तडपना, न = नहीं, कीं = कुछ, रोहोंदिस = रहूंगी, तेही = उसी, हालमें = दशामें, अईं = आप, रखंदा = रखोगे, जीं = जिस तरह ।

आप मुझे (दर्शनोंके लिए) तरसा रहे हैं इसलिए मैं तरस रही हूँ । अन्यथा मैं स्वयं तरस भी नहीं सकती । आप मुझे जिस स्थितिमें रखेंगे मैं उसी स्थितिमें रहूँगी ।

हिक सिकां तोहिजे सुखके, जे से संभरे सुख ।
से सुख हिन बिसारियां, हे जे डिठम डुख ॥ १०

हिक = एक, सिकां = तडपन, तोहीजे = आपके, सुखके = सुखमें लिए, जेसे = जिससे, संभरे = याद आवे, सुख = सुख, से = जिससे, सुख = आराम, हिन = इस मायामे, विसारिया = भूला दी, हे जे = यह जो, डिठम = देखा डुख = दुःख ।

मैं आपके मिलनके सुखके लिए तड़प रही हूँ, जिससे परमधामके सुखोंका स्मरण हो जाए । क्योंकि इस जगतके दुःखोंने परमधामके सुख भुला दिए हैं ।

हिन सुखे संदियूं गालियूं, आइन अलेखे ।
हियडो मूं सुजो थियो, हिए न अचे ते ॥ ११

हिक = एक, सुखे = सुख, संदियू = की, गालियूं = बातें, आइन = है, अलेखे = बेशुमार, हियडो = हृदय, मूं = मेरा, सुजो = शून्य, थिया = हुआ, हिए = हृदय, न = न, अचे = आता, ते = वह ।

आपके इन सुखोंकी बातें अपार हैं किन्तु मेरा हृदय अब शून्य हो गया है । कोई भी बात उसके ध्यानमें नहीं आ रही है ।

जे सुख तोहिजी अंखिएं, डिंना असांके तो ।
से सुख कंने मूं सुआं, सुजो हियो न झल्ले सो ॥ १२

जे = जो, सुख = आनन्द, तोहिजी = आपकी, अंखिएं = नेत्रोंसे, डिंना = दिये, असांके = हमें, तो = आपने, से = सो, सुख = आनन्द, कंने = कानोंसे, मूं = मैंने, सुआं = सुना, सुजो = शून्य, हियो = हृदय, न = नहीं, झल्ले = पकडता, सो = वह ।

आप हमें परमधाममें अपने नयनोंके जो सुख प्रदान करते थे, उनको हमने सद्‌गुरु श्रीदेवचन्द्रजी महाराजके मुखारविन्दसे सुना किन्तु हृदयकी शून्यताके कारण ग्रहण न कर पाए ।

जे सुख तोहिजे अरसमें, डिंना तो गालिन ।
से सभ बियम बिसरी, सुजे हियडे न चढिन ॥ १३

जे = जो, सुख = आनन्द, तोहिजे = आपके, अरसमें = धाममें है, डिंना = दिये, तो = आपने, गालिन = बातोंसे, से = सो, सभ = सम्पूर्ण, बियम = गई, बिसरी = भूल, सुजे = शून्य, हियडे = हृदयमें, न = नहीं, चढिन = चढ़ते हैं ।

अपने मधुर वचनोंसे आपने हमें परमधाममें जो सुख प्रदान किए हैं हम उन सभीको भूल गईं । हमारे शून्य हृदयमें वे अङ्कित ही नहीं हुए ।

के पडूतर मूं केयां, के तो केयां कांध ।
से सुजे हिएं न संभरे, बिसर्‌या मयरांद ॥ १४

के = कौन, पडूतर = जवाब, मूं = मैंने, केयां = किया, से = सो, सुजे = शून्य, के = कौन, तो = आपने, केयां = किये, कांध = धनी, संभरे = याद आता है, बिसर्‌या = भूल गया, हिएं = हृदयमें, न = नहीं, मय = बीच, रांद = खेलके

हे धनी ! आपने हमें कौन-से वचन कहे और हमने आपको क्या उत्तर दिया ? वे सभी बातें शून्य हृदयमें याद नहीं आ रहीं हैं । इस खेलमें आ कर हम सब भूल गईं हैं ।

हिएं चढाइए तूं, त सभ सुख हियो झल्ले ।
जे सुख डिए मेहेर करे, त बेयो केर पल्ले ॥ १५

हिएं = हृदयमें, चढाइये = चढाओ, तूं = आप, त = तो, सभ = संपूर्ण, सुख = आनन्द, हियो = हृदय, झल्ले = पकड़े, जे = जो, सुख = आनन्द, डिए = देते हो, मेहेर = कृपा, करे = करके, त = तो, बेओ = दूसरा, केर = कौन, पल्ले = पकड़े ।

यदि आप इन सुखोंको मेरे हृदयमें अङ्कित करना चाहें तो मेरा हृदय उन सभीको ग्रहण कर पाएगा । यदि आप कृपापूर्वक सुख प्रदान करना चाहते हैं तो आपको कौन रोक सकता है ?

तो तरसांएं तरसण, तोके पसण नेंण ।
कोड थिए कननके, तोहिजा सुणन मिठडा वेंण ॥ १६

तो = आपके, तरसांएं = बिलखाएं, तरसण = बिलखती हूं, तोके = आपको, पसण = देखनेके लिए, नेंण = नैनोंसे, कोड = हर्ष, थिए = होता है, कननके = काँनोको, तोहिजा = आपका, सुणन = सुननेके लिए, मिठडा = मधुर, वेंण = वाणी ।

आपके तरसाने पर ही मेरे नेत्र आपके दर्शनके लिए तरसते हैं । मेरे कान भी आपके मधुर वचनोंको सुननेके लिए उत्कण्ठित हो रहे हैं ।

तो तरसांएं तरसण, हियडो मिडन के ।
ए डिंनो अचे मासूकजो, इसक अरसमें जे ॥ १७

तो = आपका, तरसांए = तडपानेसे, तरसण = तडपता हूं, हियडो = हृदयसे, मिडन = मिलने के लिए, के = लिए, ए = यह प्रेम, डिंनो = दिया, अचे = आता है, मासूकजो = प्रीतमको, इसक = प्रेम, अरसमें = परमधाममें, जे = जो ।

आप तरसाते हैं तो मेरा हृदय आपसे मिलनेके लिए तरसता है क्योंकि परमधामका प्रेम तो आप प्रियतम धनीके द्वारा प्रदान करने पर ही प्राप्त होता है ।

बिहारे वट ओडडी, मथें डिंनों परडेह ।
डिसां न सुणीयां गालडी, कीं करियां चुआं केकेह ॥ १८

बिहारे = बैठायके, वट = पासमें, ओडडी = नजदिक, मथें = ऊपरसे, डिंनो = दिया, परडेह = परदेश, डिंसा = देखती, न = नहीं, सुणियां = सुनती, गालडी = बात, कीं = कैसे, करियां = करूं, चुआं = कहूं, केकेह = किससे ।

एक ओर आपने मुझे अपने चरणोंमें बैठाया है, दूसरी ओर मेरी सुरताको नश्वर जगतमें डाल कर मुझे परदेश दिया है. इस नश्वर जगतमें बैठी हुई मैं न आपको देख सकती हूँ और न ही आपकी बातें सुन सकती हूँ. आप ही बताएँ ! अब मैं क्या करूँ, किससे कहूँ ?

जो अरवाहें अरसज्यूं, से सभ मूं अडां न्हारीन ।
आंऊं पसां आं अडूं, हे बिठ्यू जर हारीन ॥ १९

जो = जो, अरवाहें = सखियां, अरसज्यूं = धामकी, से = सो, सभ = संपूर्ण, मूं = मेरे, अडां = तरफ, न्हारीन = देखती हैं, आंऊं = मैं, पसां = देखती हूं, आं = आपकी, अडूं = तरफ, हे = ए, बिठ्यू = बैठी, जर = आंसू, हारीन = बहाती हैं ।

परमधामकी सभी आत्माएँ मेरी ओर देख रहीं हैं और आँसू बहा रहीं हैं । मैं आपकी ओर देख रही हूँ ।

तो लिख्यो फुरमानमें, मूं अरस दिल मोमन ।
से सुणी वेंण फुरमानजा, मूंजो झल्यो दिल रूहन ॥ २०

तो = आपने, लिख्यो = लिखा, फुरमानमें = संदेशमें, मूं = मेरा, अरस = धाम, दिल = दिल है, मोमन = सखियाँ, से = सो, सुणी = सुनके, वेंण = वचन, फुरमानजा = संदेशका, मूंजो = मेरा, झल्यो = पकडा, दिल = दिल, रूहन = ब्रह्मसृष्टियोंने ।

आपने ही अपने सन्देशमें लिख कर भेजा है कि ब्रह्मात्माओंका हृदय मेरा परमधाम है । आपके सन्देशके इन वचनोंको सुनकर सभी ब्रह्मात्माओंने मेरा हृदय पकड़ रखा है (वे मेरे हृदयमें आपके दर्शन करना चाहतीं हैं) ।

त केहो पडूतर मूंहके, चुआं कुरो रूहन ।
रूहें उमेदूं मूंमें, आंके सभ रोसन ॥ २१

त = तो, केहो = कौन, पडूतर = जवाब, मूंहके = मुझे, चुआं = कहूँ, कुरो = क्या, रूहन = सखियोंको, रूहें = ब्रह्मसृष्टिकी, उमेदूं = चाहनाएं, मूंमें = मेरेमें है, आंके = आपको, सभ = सम्पूर्ण, रोसन = जाहिर है ।

हे धनी ! आप मुझे क्या उत्तर दे रहे हैं ? मैं ब्रह्मात्माओंको क्या कहूँ ? ब्रह्मात्माएँ मुझसे अपेक्षा रख रहीं हैं. आपको यह सब ज्ञात ही है ।

हाणे केहडो हाल मूंहजो, रूहें केहडो हाल ।
न डेखारे न डिठम, बेओ तो रे नूरजमाल ॥ २२

हांणे = अब, केहडो = कौन, हाल = हाल है, मूंहजो = मेरा, रूहें = सखियोंका, केहडो = कौन, हाल = हाल है, न = नहीं, डेखारे = दिखाते हो, न = नहीं, डिठम = देखती हूं, बेओ = दूसरा, तो रे = आपके बिना, नूरजमाल = धामधनी ।

हे धनी ! अब मेरी तथा ब्रह्मात्माओंकी क्या दशा हो रही है ? आपने अपने चिन्मय स्वरूपके अतिरिक्त न किसीको दिखाया है और न ही हमने किसीको देखा है ।

तो डिंनी सोहेली करे, नतां बाट घणु विषम ।
हेआं हल्लों सभ सुखनमें, रूहें घुरें एह खसम ॥ २३

तो = आपने, डिंनो = दिया, सोहेली = सरलता, करे = करके, नतां = नहीं तो, बाट = रास्ता प्रेमका, घणुं = बहुत, बिषम = कठिन है, हेआं = यहाँसे, हल्लों = चलें, सभ = संपूर्ण, सुखनमें = सुखानन्दमें, रूहें = आत्मायें, घुरें = मांगती हैं, एह = यह, खसम = प्रीतमजी ।

हे धनी ! आपने बड़ी सरलतासे हमें प्रेमका मार्ग दिखा दिया है । अन्यथा यह तो अति कठिन है । ब्रह्मात्माएँ माँग करतीं हैं कि अब यहाँसे परमधामके सुखोंकी ओर चलें ।

तो पाण डेखारे डिठम, बिओ कोए न रखे हंद ।
सेहेरग से डेखारे ओडडो, कित करणों पेओ न पंध ॥ २४

तो = तुमने, पांण = आप ही, डेखारे = दिखाया सो, डिठम = देखा, बिओ = दूसरा, कोए = कोई भी, न = नहीं, रखे = रखा, हंद = ठिकाना, सेहेरग से = ज्ञानके द्वारा, डेखारे = दिखाया, ओडडो = नजदिक, कित = कहीं, करणों = करने, पेओ = पडा, न = नहीं, पंध = रास्ता ।

आपने मुझे अपने (जिस) स्वरूपके दर्शन करवाए, मैंने उसीके दर्शन किए हैं । मैंने आपके अतिरिक्त अन्य कोई आश्रय ही नहीं रखा है । आपने स्वयंको प्राणनलीसे भी निकट दिखाया, इसलिए मुझे कहीं दूर जाना भी नहीं पड़ा ।

तो चुआंयों चुआंथी, मूंजी या उमत ।
असीं इंदासी कोठियां, कोठीने जे भत ॥ २५

तो = आपको चुआंयों = कहलवाते हो, चुआंथी = कहती हूं, मूंजी = मेरी, कोठियां = बुलानेसे, कोठीने = बुलाओ, या = अर्थात्, उमत = साथकी, असीं = हम, इंदासी = आएंगी, जे = जिस, भत = तरहसे ।

आपके कहलानेसे ही मैं मेरी तथा सुन्दरसाथकी बात कह रही हूँ. आप हमें परमधाममें जिस प्रकार बुलाएँगे हम उसी प्रकार लौट आएँगी ।

रूहें असीं निद्रमें, नतां घणां लाड घुरन ।
अंई जाणोथा सभ कीं, जे हाल आए रूहन ॥ २६

रूहें = सखियाँ, असीं = हम, निद्रमें = नींदमें हैं, नतां = नहीं तो, घणां = बहुत, लाड़ = प्यार, घुरन = मांगें, अंई = तुम, जाणोथा = जानते हो, सभ कीं = संपूर्ण, जे = जो, हाल = दशा, आए = है, रूहन = ब्रह्मसृष्टियोंकी ।

सभी ब्रह्मात्माएँ अज्ञानकी नींदमें हैं, अन्यथा आपसे अधिक प्रेम माँगतीं. यहाँ पर ब्रह्मात्माओंकी जो परिस्थिति है आप उसे पूर्णरूपसे जानते हैं ।

चायो आंजो चुआंथी, मूं हंद न्हाए कुछण ।
संग बीयम बिसरी, छडिंम ते घुरण ॥ २७

चायो = कहलाया, आंजो = आपका, चुंआ = कहती, थी = हूं, मूं = मेरा, हंद = ठिकाना, न्हाए = नहीं है, कुछण = बोलनेका, संग = संबन्ध, बीयम = गई, बिसरी = भूल गई, छडिंम = छोडदिया, ते = इस कारण, घुरण = मांगना ।

आपके कहलाने पर ही मैं कह रही हूँ । अन्यथा मेरे लिए कहनेका कोई स्थान ही नहीं है. मैं तो अपना सम्बन्ध ही भूल गई हूँ, इसीलिए माँगना भी छोड़ दिया है ।

घुरण अचे दिल में, पण द्रजां तोहिए द्राए ।
लाड करे त घुरां, जे पसां संग सांजाए ॥ २८

घुरण = मांगना, अचे = आता है, दिलमें = दिलमें, पण = परन्तु, त = तब, घुरां = मागूं, जे = जो, तोहिजे = आपके, द्राए = डराने से, लाड = प्यार, करे = करके, पसां = देखो, संग = संबन्धकी, सांजाए = पहचान ।

मेरे मनमें माँगनेकी इच्छा तो होती है किन्तु मैं आपके भयसे डरती हूँ । यदि मुझे आपके सम्बन्धकी पहचान हो जाए तो मैं आपसे प्रेमपूर्वक माँग लेती ।

रूहें चोंण सभे मूंहके, हांणे आंऊं चुआं केकेह ।
न पसां न सुणीयां संडेहडो, डिंने पेरें हेठ परडेह ॥ २९

रूहें = ब्रह्मसृष्टि, चोंण = कहती हैं, समे = संपूर्ण, मूंहके = मूझे, हांणे = अब, आंऊं = मैं, चुआं = कहूं, केकेह = किनको, न = नहिं, पसां = देखती हूं, संडेहडो = संदेशा, डिंने = दिया, पेरें = चरणोंके, हेठ = तले, परडेह = परदेश ।

सभी ब्रह्मात्माएँ मुझसे कहतीं हैं । अब मैं किससे कहूँ । मैं न आपके दर्शन कर सकती हूँ और न ही आपका सन्देश सुन सकती हूँ क्योंकि आपने मुझे अपने चरणोंमें बैठाकर भी परदेश दे दिया है ।

सचो सोंणे जीं थेयो, भाईयां सोणो थेयो सचो ।
लाड कोड के सें करियां, अंखिएं जां न अचो ॥ ३०

सचो = सच्चा धाम, सोंणे = सुपने, जीं = जैसे, थेयो = हुआ, भाइयां = जानो, सोणो = सपना, थेयो = हुआ, सचो = साँचा, लाड = प्यार, कोड = हर्ष, केसे = किनसे, करियां = करूं, अंखिएँ = दृष्टिमें, जां = जहाँतक, न = नहीं, अचो = आते ।

अब मेरी स्थिति ऐसी हो गई है कि मुझे सत्य परमधाम स्वप्नके समान लगने लगा और यह स्वप्नका संसार सत्य दिखाई देने लगा । जब तक आप हमारी दृष्टिमें नहीं आते हैं तब तक हम आपसे कैसे प्रेम कर सकतीं हैं ?

कीं करियां गालडी, जां न पसां पांहिजे नेंण ।
जे सुणाईए त सुणां, मिठडा तोहिजा वेंण ॥ ३१

कीं = कैसे, करियां = करूं, गालडी = बातें, जां = जहाँतक, न = नहीं, पसां = देखूं, पांहिजे = अपने, नेंण = आँखोंसे, जे = जो, सुणाइए = सुनाओ, त = तो, सुणां = सुनूं, मिठडा = मधुर, तोहिजा = आपके, वेंण = वचन ।

जब तक मैं अपनी आँखोंसे आपके दर्शन न कर लूँ तब तक आपसे बातें कैसे करूँ ? यदि आप अपने मधुर वचन सुनाना चाहेंगे तभी मैं उन्हें सुन पाऊँगी ।

सुख तोहिजा सिपरी, अचे ना लेखे में ।
पार न अचे अपारजो, कडी न गणया के ॥ ३२

सुख = आनन्द, तोहिजा = आपका, सिपरी = हे प्रीतम, अचे = आता है, न = नहीं, लेखे = शुमारके, में = बीचमें, पार = शुमार, न = नहीं, अचे = आता है, अपार = बे शुमारका, जो = जिसको, कडी = कभी, न = नहीं, गणया = हिसाब किया, के = किसी ने ।

हे प्रियतम धनी ! आपके असंख्य सुखोंका कोई पारावार नहीं है । अपार होनेके कारण आज तक किसीने भी उनकी गणना नहीं की है ।

गुझांदर रूहन जो, सभे तूं जांणे ।
कुरो चुआं बिच बडी थेई, मूं पांहिजेडी न पांणे ॥ ३३

गुझांदर = छिपा दिल, रूहन = सखियों, जो = का, समे = संपूर्ण, तूं = आप, जांणे = जानते हो, कुरो = क्या, चुआं = कहूं, बिच = बीचमें, बडी = आगेवान, थेई = होकर, मूं = मैं, पांहिजेडी = आप जैसी, न = नहीं, पांणे = स्वयं ।

आप ब्रह्मात्माओंके हृदयकी सभी गुप्त बातें भी जानते हैं । उन ब्रह्मात्माओंके मध्य उनकी अग्रणी बन कर मैं क्या कहूँ ? मैं स्वयं तो आपके समान नहीं बन सकती ।

जा कांध न करे पांहिजो, ऊभी बियनके चोए ।
डे सुहाग बियनके, पांण अंगण ऊभी रोए ॥ ३४

जा = जहाँतक, कांध = प्रीतमको, न = नहीं, करे = बनावें, पांहिजो = अपना, ऊभी = खडी होकर, बियन के = दूसरोंको, चोए = कहे, डे = देवें, सुहाग = सुख, बियन = दूसरी, के = को, पांण = आप, अंगण = आंगन में, ऊभी = खडी होकर, रोए = रोवे ।

जो अङ्गना अपने धनीको अपना बना नहीं पाती और दूसरी अङ्गनाओंको शिक्षा देती है, वह दूसरोंसे तो सुहागिनीके सुखकी बात करती है किन्तु स्वयं अपने आँगनमें खड़ी-खड़ी रोती है ।

बेओ जमारो बडाईमें, बेठी खोए उमर ।
डे वडाइयूं बियनके, पांण न खुल्यो दर ॥ ३५

बेओ = गई, जमारो = उमर, बड़ाई = बडप्पन, में = में, बेठी = बैठके, खोए = गँवाया, उमर = उमर, डे = देवे, बडाइयूं = अभिमान, बियन = दूसरे, के = को, पांण = अपना, न = नहीं, खुल्यो = खुल्ला, दर = दरवाजा ।

इसी बड़प्पनमें मेरी पूरी आयु व्यतीत हो गई । मैंने दूसरोंको तो शिक्षाएँ दीं किन्तु मेरा स्वयंका द्वार नहीं खुला ।

थेई धणीसे सरखरू, सोई सुहागिण होए ।
सा मर गिंने पांणसे, जे आडो पट न कोए ॥ ३६

थेई = होवे, धणी = प्रीयतम, से = सों, सरखरू = सम्मुख, सोई = सोई(वह ही), पांणसे = आपको, जे = जिनको, आडो = बीचमें, सुहागिण = सुहागन, होए = होवे, सा = वह, मर = भले, गिंने = लेवें, पट = परदा, न = नहीं है, कोए = कोई ।

जो आत्मा अपने प्रियतम धनीसे सम्मान प्राप्त करती है वही सुहागिनी कहलाती है. वही आत्मा सुख प्राप्त कर सकती है जिसका स्वयं और परमात्माके बीच कोई आवरण नहीं है ।

आंऊं पांहिजी परमें, कीं कीं पांणके भाइयां ।
बडी थीयन बिचमें, छेडो छडाइयां ॥ ३७

आंऊं = मैं, पांहिजी = अपनी, परमें = तरहसे, कीं कीं = कुछ कुछ, पांणके = आपको, भाइयां = जानती हूं, बडी = बड़ी, थीयन = होनेको (होकर), बिचमें = बीचमें, छेडो = पल्ला, छडाइयां = छुडाती हूं ।

मैं स्वयंको कुछ-कुछ पहचानती हूँ, इसलिए सबसे बड़ी होनेका उत्तरदायित्व अर्थात् बड़प्पनके भारसे बचनेके लिए स्वयंको अलग कर रही हूँ ।

गाल्यूं मूंजे दिलज्यूं, सभ तूं ही सुजांणे ।
हे सभेई तोहिज्यूं, तो करायूं पांणे ॥ ३८

गाल्यूं = बातें, मूंजे = मेरे, दिल्ज्यूं = दिलकी, सभ = संपूर्ण, तूं = ही (आप ही), सुजांणे = जानते हो, हे = यह, सभेई = सम्पूर्ण, तोहिज्यूं = आपने, करायूं = कराया, पांणे = आप ही ।

हे स्वामी ! आप मेरे अन्तरकी सभी बातोंसे परिचित हैं । यह जो कुछ हुआ है सब आपकी ही प्रेरणासे हुआ है ।

मथे आंऊं त गिंना, जे कीं मूंमें होए ।
आंऊं गुझ जाणा पांण बिच जो, बेयो न जांणे कोए ॥ ३९

मथे = ऊपर, आंऊं = मैं, त = तब, गिंना = लेऊं, जे = जो, कीं = कुछ, मूंमें = मुझमें, होए = हो, आंऊं = मैं, गुझ = छिपा, जाणा = जानती

हूं, पांण = आपके, बिच जो = बीचमें, बेओ = दूसरा, न = नहीं, जाणे = जानता है, कोए = कोई ।

मैं तभी अपने ऊपर उत्तरदायित्व लूँगी जब मुझमें कुछ सामर्थ्य हो. मैं आपके अन्तरकी गुह्य बातें जानती हूँ । मेरे अतिरिक्त भला अन्य कौन जानेगा ?

मूंके बडी बधारिए, डिंने सभनी में सुहाग ।
कीं डिठम कीं डिसंदिस, जेडो कंने भाग ॥ ४०

मूंके = मुझे, बडी = बड़ा, बधारिए = बनाया, डिंने = दिया, सभनी = सभीके, में = बीचमें, सुहाग = सुहाग, कीं = कुछ, डिठम = देखा, कीं = कुछ, डिसंदिस = देखूंगी, जेडो = जैसे, कंने = करोगे, भाग = नसीबमें ।

हे धनी ! आपने अपना सुहाग प्रदान कर मुझे सभी आत्माओंके मध्य सम्मानित किया है । आपने जिस प्रकार हमारे भाग्यका निर्माण किया है मैंने उसीके अनुरूप कुछ देखा है और भविष्यमें भी कुछ देखूँगी ।

त केहो जवाब रूहनके, बिच करियां कीं आंऊं ।
न कीं सुणाइए गुझ में, न पांइंदडे धांऊं ॥ ४१

त = तो, केहो = कौन, जवाब = उत्तर, रूहन = सखियों, के = को, बिच = बीचमें, करियां = करूं, कीअ = कैसे, आंऊं = मैं, न = नहीं, कीं = कुछ, सुणाइए = सुनाते हो, गुझमें = छिपकर, न = नहीं, पांइदंडे = करते, धांऊं = पुकार ।

अब मैं सभी आत्माओंको क्या उत्तर दूँ, उनके मध्य मैं क्या कहूँ ? आप मुझे न कोई गुप्त बातें सुनाते हैं और न ही मैं अपनी पुकारका उत्तर पाती हूँ ।

तो मूंके ईं बुझाइयो, जे तूं हेकली थिए ।
त तोसे करियां गालडी, दीदार पण डिए ॥ ४२

तो = आपने, मूंके = मुझे, ईं = इस प्रकार, बुझाइयो = समझाया, जे = जो, तूं = तुम, हेकली = अकेली, थिए = हो, त = तो, तोसे = तुमसे,

करियां = करूं, गालड़ी = बातें और, दीदार = दर्शन, पण = भी, डिए = दूं ।

आपने मुझे इस प्रकार समझाया, हे इन्द्रावती ! जब तू अकेली होगी तब मैं तेरे साथ बातें करूँगा और तुझे दर्शन भी दूँगा ।

आंऊं हेकली कीं थियां, बी लगाई तो ।
तो रे आएको कितईं, जे हिनके पल्ले सो ॥ ४३

आंऊं = मैं, हेकली = अकेली, कीं = कैसे, थियां = होऊँ, बी = दूसरी, लगाई = लगाया, तो = आपने, तो रे = आपके बिना, आए = है, को = कौन, कितईं = कहीं, जे = जो, हिनके = इनके, पल्ले = पकडे, सो = सोई ।

किन्तु मैं अकेली कैसे हो सकती हूँ, आपने अन्य ब्रह्मात्माओंको भी मेरे साथ जोड दिया है. आपके अतिरिक्त अन्य कौन है, जो उनका हाथ पकड़ सके ?

से बस न्हाए मूंहजे, जे कीं करिए से तूं ।
जे कीं जाण्यो से कर्‌यो, मूं में रही न मूं ॥ ४४

से = वह, बस = वश, न्हाए = नहीं है, मूंहजे = मेरे, जे = जो, कीं = कुछ, करिए = करते हो, से = वह, तूं = आप, जे = जो, कीं = कुछ, जाण्यो = जानो, से = वही, करयो = करो, मूं मे = मुझमें, रही = रहा, न = नहीं, मूं = मैं पना ।

मेरे वशमें तो कुछ भी नहीं है । जो कुछ कर रहे हैं आप ही कर रहे हैं । आप अपनी इच्छानुसार करें । मुझमें तो अब कोई स्वाभिमान (मैं पना) ही नहीं रहा है ।

थी न सगां हेकली, बी तो लगाई ।
छूटे न तोहिजी तोह रे, मूंजी फिरे न फिराई ॥ ४५

थी = हो, न = नहीं, सगां = सकती, हेकली = अकेली, बी = दूसरी, तो = आपने, लगाई = लगाई, छुटे = छुटती, न = नहीं है, तोहिजी =

आपकी, तोह रे = आपके बिना, मूंजी = मेरी, फिरे = फिरती है, न = नहीं, फिराई = फिराने से ।

मैं अकेली भी नहीं हो सकती हूँ. क्योंकि आपने मेरे साथ मायाको जोड दिया है । आपकी यह माया आपके बिना नहीं छूट सकती है । वह मेरे हटाने पर भी नहीं हटती है ।

गोता खेंदे वेई उमर, पट सुके रे पांणी ।
जे तो डिंनी हेत करे, सा टरे न सत्रांणी ॥ ४६

गोता = डुबकी, खेंदे = खाते, वेई = गई, उमर = उमर, पट = जमीन, सूके = सुख गई, रे = बिना, पांणी = पानीके, जे = जो, तो = आपने, डिंनी = दिया, हेत = प्यार, करे = करके, सा = वह, टरे = हटती, न = नहीं, सत्रांणी = दुश्मन ।

जल हीन भूमि अर्थात् मृगजलमें डुबकियाँ लगाते हुए जीवन व्यतीत हो गया । आपने मुझे जिसको प्रेमपूर्वक प्रदान किया है वह माया अब मेरे लिए शत्रु बन गई है और हटाने पर भी नहीं हटती है ।

हे जा पेयम फांई जोर जी, से जा लाहियां जोर करे ।
झल्ले पेर पिरनजा, पण मूंजी टारी कीं न टरे ॥ ४७

हे = यह, जा = जो, पेयम = पड़ी है,फांई = फाँसी, जोरजी = जोरकी, से = वह, जा = जो, लाहियां = उतारती हूं, जोर = ताकत, करे = करके, झल्ले = कपड़ करके, पेर = चरणारविंद, पिरनजा = प्रियतमके, पण = परंतु, मूंजी = मेरी, टारी = हटाई, कीं = किसी तरहसे, न = नहीं, टरें = हटती है ।

मायाका यह फन्दा अति जोरसे लगा (पड़ा) हुआ है । मैं आपके चरणोंको ग्रहण कर उसे बलपूर्वक हटाना (उतारना) चाहती हूँ । किन्तु मेरे हटानेसे भी वह नहीं हटता है ।

धणी मूंहजी रूहजा, मूंसे हित गालाए ।
पिरी पसण जीं थिए, से तूंहीं डिए उपाए ॥ ४८

धणी = प्रीतम, मूंहजी = मेरी, रूहजा = आत्माके, मूंसे = मुझसे, हित

= यहाँ, गालाए = बातें करो, पिरी = प्रियतमको, पसण = देखनेके लिए, जीं = जिस तरह, थिए = हो, से = वह, तूंही = आप ही, डिए = देते हो, उपाए = उपाय ।

हे मेरी आत्माके स्वामी ! आप यहीं पर आकर मुझसे बातें करें । मैं जिस प्रकार आपका दर्शन कर सकूँ, वह उपाय भी आप ही करें ।

हे डात्यूं सभ तोहिज्यूं, इसक जोस अकल ।
मूरा बुझाइए मूंहके, आखर लग असल ॥ ४९

हे = यह, डात्यूं = देन(दातव्य), सभ = सम्पूर्ण, तोहिज्यूं = आपका, इसक = प्रेम, जोस = आवेश, अकल = बुद्धि, मूरा = मूलसे ही, बुझाइए = समझाया, मूंहके = मुझे, आखर = अन्त, लग = तक, असल = परमधामसे ।

प्रेम, जोश और बुद्धि ये सभी निधियाँ आपकी ही दी हुईं हैं । परमधामसे लेकर खेल तककी सम्पूर्ण बातें आपने मुझे पहलेसे ही समझा दी थी ।

आंऊं अव्वल न आखर, सभनी हंदे तूं ।
ए मूराई भली भतें, ए तो डेखारई मूं ॥ ५०

आंऊं = मैं, अव्वल = पहले से, न = नहीं, आखर = अन्त तक, सभनी = समग्र, हंद = ठिकाने, तूं = आप हो, ए = यह, मूराई = मूलसे ही, भली = अच्छी, भतें = तरहसे, ए = यह, तो = आपने, डेखारई = दिखाया, मूं = मुझे ।

आरम्भसे लेकर अन्त तक मेरा कोई प्रभुत्व नहीं है । सर्वत्र आपका ही प्रभुत्व है । मैं मूलसे ही भलीभाँति समझ गई कि आपने ही मुझे यह खेल दिखाया है ।

अरज पांहिजी रूहनजी, सभ तूंहीं कराइए ।
बाहेर मंझ अंतर, सभ तूंहीं आइए ॥ ५१

अरज = विनती, पांहिजी = अपनी, रूहनजी = सखियोंकी, सभ = संपूर्ण, तूंही = आपही, कराइए = कराते हो, बाहेर = देहमें, मंझ = दिलमें, अंतर = आत्मामें, सभ = समग्रमें, तूं ही = आप ही, आइए = हो ।

मेरी ओरसे या ब्रह्मआत्माओंकी ओरसे जो प्रार्थना हो रही है वह भी आप ही करवा रहे हैं। हमारे शरीर (बाहर) या आत्मामें (अन्दर) सर्वत्र आपका ही प्रभुत्व है।

जीं कढे तूं हियां, जीं पुजाईने घर।
हल्ले न जरे जेतरी, बी केहजी फिकर ॥ ५२

जीं = जैसे, कडे = निकालो, तूं = आप, हियां = यहाँसे, जीं = जैसे, पुजाईने = पहुंचाके, घर = धाममें, हल्ले = चलती, न = नहीं, जरे = जरा सा, जेतरी = जितना, बी = दूसरा, केहजी = किसीका भी, फिकर = विचार।

आप हमें जिस प्रकार जगतके बन्धनसे मुक्त कर परमधाम पहुँचाना चाहते हैं, उसी प्रकार पहुँचाएँ। आपके अतिरिक्त अन्य किसीका तो लेश मात्र भी वश ही नहीं चलता है। इसलिए मैं दूसरे किसकी चिन्ता करूँ ?

तूं करिए तूं कराइए, तूं पुजाइए पांण।
जा मथे गिंने तिर जेतरी, सा जोए बडी अजांण ॥ ५३

तूं = आप, करिए = करते हो, तूं = आप ही, कराइए = कराते हो, पुजाईए = पहुँचाओ, पांण = आप, जा = जो, मथें = सिरके उपर, गिंने = लेवे, तिर = थोड़ा सा, जेतरी = जितनी, सा = वह, जोए = स्त्री, बडी = बहुत, अजांण = ना समझ है।

जो कुछ हो रहा है उसको करनेवाले भी आप हैं और करवानेवाले भी आप ही हैं। हमें अपने घरोंमें पहुँचानेवाले भी आप ही हैं। जो अङ्गना थोड़ा-सा भी उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेती है वह अज्ञानी है।

सिकण सडण जीरे मरण, से सभ हथ धणी।
तो चंगी पेरे डेखारियो, त मूं न्हार्‌यो नेंण खणी ॥ ५४

सिकण = दुखी होना, सडण = बुलाना, जीरे = जीना, मरण = मरना, से = वह, सभ = सम्पूर्ण, हथ = हाथ, धणी = प्रियतम, तो = आपने, चंगी = अच्छी, पेरे = तरहसे, डेखारियो = दिखाया, त = तो, मूं = मैने, न्हारयो = देखा, नेंण = आँख, खणी = उठाकर।

हे प्रियतम धनी ! ललचाना, बुलाना, जिलाना, मारना यह सब आपके ही हाथोंमें है । आपने इस रहस्यकी भलीभाँति पहचान करवा दी है और मैंने भी इसे आँखें खोलकर देख लिया है अर्थात् भलीभाँति समझ लिया है ।

हांणे गाल्यूं मूंजे हालज्यूं, कंदिस आंसे आंऊं ।
बेओ केर सुणीदो तो रे, जे करियां बड्यूं धांऊं ॥ ५५

हांणे = अब, गाल्यूं = बाते, मूंजे = मेरे, हालज्यूं = दशा की, कंदिस = करूंगी, आंसे = आपसे, आंऊ = मैं (इन्द्रावती), बेओ = दूसरा, केर = कौन, सुणीदो = सुनेगा, तो रे = आपके बिना, जे = जो, करियां = करूं, बड्यूं = बहुत ही, धांऊं = पुकार ।

हे धनी ! अब मैं आपको मेरी स्थिति (दशा) की बातें कहूँगी. मैं चाहे जितनी पुकार करूँ किन्तु आपके अतिरिक्त सुननेवाला भी दूसरा कौन है ?

तो न डेखार्‌यो मूरथी, कोए हंद बेओ ।
मूंजी रूहके नूरजमाल रे, हंद जरो न कित रेओ ॥ ५६

तो = आपने, न = नहीं, डेखारयो = दिखाया, मूरथी = मूलसे ही, कोए = कोई, हंद = ठिकाना, बेओ = दूसरा, मूंजी = मेरे, रूहके = आत्माके, नूरजमाल = धामधनीके, रे = बिना, हंद = ठिकाना, जरो = जरा सा, न = नहीं, कित = कहीं भी, रेओ = रहा ।

आपने प्रारम्भसे ही मुझे कोई दूसरा आश्रयस्थान नहीं दिखाया है । हे मेरी आत्माके धनी ! आपके चिन्मय स्वरूपके अतिरिक्त मेरे लिए अन्य कोई स्थान ही नहीं रहा है ।

महामत चोए मेहेबूबजी, जे उपटिए द्वार ।
रूहें गिंनी अचां पांणसे, जीं अची करियां करार ॥ ५७

महामत = महामति, चोए = कहती हैं, मेहेबूबजी = धनीजी, जे = जो, उपटिए = खोलो, द्वार = दरवाजा, रूहें = सखियां, गिंनी = लेकर, अचां = आऊं, पांणसे = आप सहित, जी = जिससे, अची = आकर के, करियां = करूं, करार = आराम ।

महामति कहते हैं, हे प्रियतम धनी ! यदि आप द्वार खोलें तो मैं ब्रह्मात्माओंको साथ लेकर आऊँ और आपके पास आकर शान्तिका अनुभव करूँ ।

प्रकरण १ चौपाई ५७

रे पिरीयम, हथ तोहिजडे हाल ।
आएडी वेरा उथणजी, हांणे पसां नूरजमाल ॥ १

रे = हे, पिरीयम = प्रीतम, हथ = हाथ, तोहिजडे- आपके, हाल = दशा, आएड़ी = आया, वेरा = बखत, उथण = उठने, जी = का, हांणे = अब, पसां = देखो, नूरजमाल = धनीको ।

हे प्रियतम धनी ! मेरी स्थिति आपके हाथोंमें है । जागृत होनेका समय आ गया है । अब मैं आपके चिन्मय स्वरूपकी ओर देख रही हूँ ।

अरवाहें जा हिन अरस जी, कीं छडे खिलवत हक ।
जा डेखारिए रूहके, तेमें जरो न सक ॥ २

अरवाहें = ब्रह्मात्माएँ, जा = जो, हिन = इस, अरस जी = धामकी हैं, कीं = कैसे, छडे = छोडे, खिलवत = मूलमिलावा, हक = परमात्मा, जा = जो, डेखारिए = दिखाते हो, रूहके = आत्माओंको, तेमें = उसमें, जरो = कुछ भी, न = नहीं, सक = शंका ।

जो आत्माएँ दिव्य परमधामकी हैं, वे अपने धनी तथा एकान्त स्थल-मूलमिलावाको कैसे छोड़ सकतीं हैं ? आप अपनी आत्माओंको इसी मूलमिलावाका दर्शन करवा रहे हैं इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं है ।

हिन अरसजे बाग में, आयूं मूद्यूं मींह ।
हिन वेरा असां के, जुद्यूं रख्यूं कींह ॥ ३

हिन = इन, अरस = परमधाम, जे = के, बागमें = बगीचोंमें, आयूं = आई, मुदयूं = ऋतु, मींह = बरसातकी, हिन = इस, बेरा = समयमें, असां = हम, के = को, जुदयूं = अलग, रख्यूं = अलग, कींह = कैसे ।

परम पावन परमधामकी समस्त भूमि तथा वन-उपवनोंमें वर्षा ऋतु आ पहुँची है । ऐसे अवसर पर हमें क्यों अलग रखा गया है ?

बडे अरसजे मोहलमें, मिडावा रूहन ।
आयासी मोहोल बागजे, मथडा मींह झबन ॥ ४

बडे = श्रेष्ठ, अरस = परमधाम, जे = के, मोहोलमें = महलमें, मिडावा = मिलाप, रूहन = आत्माओंका, आयासी = आकाशी, मोहोल = महल, बागमें = बगीचोंमें, मथड़ा = ऊपर, मींह = बादल, झबन = बरसता है ।

दिव्य परमधामके विशाल प्रासाद (रङ्गभवन) में हम ब्रह्मसृष्टियोंकी बैठक है । उसकी चाँदनी पर स्थित उपवनमें ऊपरसे वर्षा हो रही है ।

अरस बागजे मोहोलमें, झरोखे झांखन ।
तो डिंने असांजे दिलमें, ए सुख याद अचन ॥ ५

अरस = परमधामके, बागजे = बगीचोंके, मोहोलमें = रंगमहलमें, झरोखे = झरोखोंसे, झांखन = देखना है, तो = आपके, डिंने = दिये, असांजे = हमारे, ए = यह, सुख = सुख, अचन = आता है ।

परमधाम रङ्गमहलके उपवन (बगीचों) में तथा झरोखासे झाँकते हुए आपने हमें जो सुख प्रदान किए हैं, अब वे हमारे हृदय (स्मृति) में आ रहे हैं ।

चढीनी आयूं सेरडियूं, कपरियूं गजन ।
ए सुख डिए रूहन के, बनमें विज्यूं खेवन ॥ ६

चढ़ीनी = चढ़करके, आयूं = आई है, सेरडियूं = बदलियां, कपरियूं = आसमान, गजन = गरजता है, ए = यह, सुख = सुख, डिए = दिए, रूहन = आत्माओं, के = को, बनमें = बगिचोंमें, बिज्यूं = बिजली, खेवन = चमकती है ।

आकाशमें बादल चढ़ आए हैं और गर्जना हो रही है। वनोंमें बिजली चमक रही है । आपने ब्रह्मात्माओंको ऐसे समयके सुख प्रदान किए हैं ।

चढी झरोखे न्हारजे, मींह बसे मथें बन ।
वीटी वरियूं वडरियूं, हिन वेरा बाग सोहन ॥ ७

चढ़ी = चढ़के, झरोखो = झरोखोंसे, न्हारजे = देखिए, मींह = वर्षा, बसे = बरसती है, मथें = ऊपर, बन = बगिचोंके, बिटी = घेरकर, बरियूं =

लिया है, बडरियूं = बादलोंने, हिन = इस, वेरां = समयमें, बाग = बगीचा, सोहन = शोभा दे रहे हैं ।

झरोखे पर चढ़ कर देखते हैं तो वनमें ऊपरसे वर्षा हो रही दिखाई देती है । इस समय बादलोंसे घिरे हुए वन-उपवन अति सुन्दर दिखाई देते हैं ।

अरस अग्यां चांदनी, चई चोतरन ।
हिन मूद्यूं मींह संदियूं, दोडे चढे ठेकन ॥ ८

अरश = धामके, अग्यां = आगे, चांदनी = चांदनी चौक है, चई = चार, चोतरन = चबूतरें है, हिन = इन, मुदयूं = ऋतु, मींह = बरसात, संदयूं = की, दोडे = दौडती है, चढे = चढ़ती है, ठेकन = उछलती है ।

रङ्गभवनके सम्मुख चाँदनी चौक तथा चार चबूतरे हैं । वर्षाके समय ब्रह्मात्माएँ दौड़ कर तथा कूद कर उस पर चढ़ जातीं हैं ।

अग्यां अरस बागमें, करे कोइलडी टहुंकार ।
ढेली मोर कणकींयां, जमुना जोए किनार ॥ ९

अग्यां = आगे, अरस = धामके, बाग = बगीचों, में = में, करे = करती है, कोइलड़ी = कोयल, टहुंकार = कूकना, ढेली = मोरनी, मोर = मोर, कणकियां = किलोल करना, जमुना = जमुनाजी, जोए = के, किनार = तटपर ।

परमधामके आगे बागमें कोयल कूक रही है । यमुनाजीके किनारे पर मोरनी, मोर और पक्षीगण किलकिलाहट कर रहे हैं ।

मथेनी वसे मींहडो, वानर मोर कुंडन ।
कैनी जातूं जानवर, कै जातूं पसुअन ॥ १०

मथें = ऊपर, नी = से, बसे = बरसती है, मींहडो = बर्षात, वानर = बंदर, मोर = मयुर, कुडन = हर्षित होते है, कैनी = कितने, जातूं = जातके, जानवर = जानवर, कै = कई, जातूं = जातके, पसुअन = पशुएं ।

ऊपर (आकाश) से वर्षा होती है तो वानर, मयूर आदि प्रसन्न होते हैं । यहाँ पर अनेक जातिके पशु तथा पक्षीगण हैं ।

पसु पंखी हिन अरसजा, ते कीं चुआं चित्राम ।
मिठी मोहें मिठी जिकर, ए डिए रूहें आराम ॥ ११

पसु = पशु, पंखी = पंक्षी, हिन = इन, अरस = परमधाम, जा = के, ते = उनकी, कीं = कैसे, चुआं = कहूं, चित्राम = चित्रकारी, मिठी = मधुर, मोहें = मुख, मिठी = मधुर, जिकरें = बातें, ए = यह, डिए = देते हैं, रूहें = आत्माएं, आराम = सुख ।

परमधामके इन पशु-पक्षियोंकी चित्रकारीकी सुन्दरताका वर्णन किस प्रकार करूँ ? वे मधुर वाणीमें श्रीराजजीका गुण-गान कर ब्रह्मात्माओंको मुग्ध करते हुए आनन्दित करते हैं ।

वाओ अचे बागनमें, डालरियूं उलरन ।
रूहें रांद करीदियूं, मथें चढयूं लुडन ॥ १२

वाओ = पवन, अचे = आता है, बागनमें = बगिचोंमें, डालरियूं = डालें, उलरन = उछलती हैं, रूहें = सखियाँ, रांद = खेल, करीदियूं = करती है, मथें = ऊपर, चढ्यूं = चढ़के, लुड़न = झूलती हैं ।

हवाके झोकोंके कारण उपवनके वृक्षोंकी शाखाएँ झूमने लगतीं हैं. ब्रह्मात्माएँ आनन्द पूर्वक क्रीड़ा करती हुई पुनः शाखाओं पर चढ़ कर झूलतीं हैं ।

जानवर जे हिन बागजा, डारी डारी त्रपन ।
मिठडी चूंजे मिठी वाणियां, ए रांदिका रूहन ॥ १३

जानवर = जानवर, जे = जो, हिन = इन, बाग = बगीचों, जा = के, डारी = डाली, डारी = डाली, त्रपन = उछलते हैं, मिठडी = मीठी, चूंजें = चोंचे, मिठी = मधुर, वाणियाँ = उच्चारण है, हे = यही, रांदिका = खिलौने, रूहन = सखियों के हैं ।

इन उपवनोंके पशु-पक्षी यहाँके वृक्षोंकी एक शाखासे दूसरी शाखामें कूदते हैं. इनकी चोंच तथा वाणी सुन्दर एवं मधुर हैं । ये सभी ब्रह्मात्माओंके खिलौने हैं ।

हिन मुद्यूं मींह संदियूं, रूहें रांद करीन ।
दोडे कूडे मींहमें, पांहिजे साथ पिरीन ॥ १४

हिन = इन, मुंदयूं = ऋतु, मींह = मेघ, संदियूं = की, रूहें = सखियाँ, रांद = खेल, करीन = करती हैं, दोडे = दौडती है, कुडे = कूदती है, मींह = बरसातके, में = बीचमें, पांहिजे = अपने, साथ = संग, पिरीन = प्रियतमके ।

वर्षा ऋतुमें ब्रह्मात्माएँ विभिन्न प्रकारकी क्रीड़ाएँ करती हुई अपने प्रियतमके साथ वर्षाके समय दौड़तीं एवं कूदतीं हैं ।

सुखडा जे हिन अरसजा, आईन सभे कमाल ।
रूहें बडी रूह बिचमें, धणी सो नूरजमाल ॥ १५

सुखडा = आनन्द, जे = जो, हिन = इन, अरस = धाम, जा = का, आईन = है, सभे = सम्पूर्ण, कमाल = श्रेष्ठ, रूहें = सखियाँ, बडो = बुजर्ग, रूह = श्रीश्यामाजी है, बिच = बीच, में = मैं, धणी = प्रियतम, सो = वे ही, नूरजमाल = श्री राजजी है ।

परमधामके ये सभी सुख अत्यन्त श्रेष्ठ हैं । इन लीलाओंमें श्रीश्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओंके मध्यमें श्रीराजजी शोभायमान होते हैं ।

सेहेर्यूं कपरियूं नूरज्यूं, मिठडा नूर गजन ।
वसेथ्यूं नूर वडरियूं, वीजडीयूं नूर खेवन ॥ १६

सेहेरयूं = घटायें, कपरियूं = आसमानमें, नूर = प्रकाश, ज्यूं = की है, मिठड़ा = मधुर, नूर = नूरकी, गजन = गर्जना होती है, वसेज्यूं = बरसती है, नूर = प्रकाशकी, बडरियूं = मेघमंडल, बीजडियूं = बिजली, नूर = नूरकी, खेवन = चमकती है ।

आकाशमें तेजो (नूर) मय बादल मधुर ध्वनिसे गर्जना करते हैं । उस समय तेजोमयी बिजली चमकती है एवं तेजोमय बादलोंसे तेजोमयी वर्षा होती है।

मिठडो वाओ नूरजो, अचे नूर खुसबोए ।
ए सुख अरस बागमें, कीं चुआं किनारे जोए ॥ १७

मिठडो = मधुर, बाओ = पवन, नूरजो = नूरकी, अचे = आती है, नूर

= नूरकी, खुसबोए = सुगंध, ए = यह, सुख = आनन्द, अरस = धामके, बागमें = बगीचोंमें, कीं = कैसे, चुआं = कहूं, किनारे = किनारा, जोए = जमुनाजीका ।

इस समय शीतल तथा सुगन्धित तेजोमयी हवा मन्द-मन्द बहती है । परमधामके वन-उपवन तथा यमुना तटके इन सुखोंका वर्णन कैसे करूँ ?

महामत चोए मेहेबूबजी, तो पसाएं पसन ।
अंखियूंनी आसा एतियूं, मूंजी रूहजी या रूहन ॥ १८

महामत = महामति, चोए = कहते हैं, मेहेबूबजी = हे धनी, तो = आपके, पसांएं = दिखानेसे, पसण = देखूं, अखियूंनी = नैनोंकी, आसा = चाहना, एतियुं = इतनी है, मूंजी = मेरी, रूहजी = आत्माकी, या = अर्थात्, रूहन = सखियोंकी ।

महामति कहते हैं, हे प्रियतम धनी ! आपके दिखाने पर ही हम इन दृश्योंको देख सकतीं हैं । मेरे तथा ब्रह्मात्माओंके नयनोंकी यही चाहना है ।

प्रकरण २ चौपाई ७५

रे पिरीयम, मंगां सो लाड करे ।
एहेडी किज कां मुदसे, खिलंदडी लगां गरे ॥ १

रे = हे, पिरीयम = धामधनी, मंगां = मांगती हूं, सो = सो मिलाप, लाड़ = प्यार, करे = करके, एहेडी = ऐसी, किजकां = करो, मुदसे = मुझसे, खिलंदडी = हँसकर, लगां = लगूं, गरे = कंठसे ।

हे मेरे प्रियतम ! मैं प्रेमपूर्वक माँगती हूँ. आप मुझ पर ऐसी कृपा करें जिससे मैं हँसती हुई आपके गले लग जाऊं ।

तो मूंके चयो तूं मूंहजी हेडी करे निसबत ।
धणी मूंहजे धामजा, आंऊं हांणे को हिन भत ॥ २

तो = आपने, मूंके = मुझे, चयो = कहा, तूं = तुम, मूंहजी = मेरी हो, हेडी = ऐसा, करे = करके, निसबत = संबन्ध, धणी = प्रियतम, मूंहजे = मेरे, धामजा = परमधामके, आंऊं = मैं, हांणे = अब, को = क्यों, हिन = इस, भत = प्रकार हूं ।

आपने मुझे कहा था, तू मेरी अङ्गना है । हे मेरे धामके धनी ! अब ऐसा सम्बन्ध प्राप्त करने पर भी मैं आपसे वियुक्त क्यों हूँ ?

एहेडो संग करे मूंहसे, अची डिंनिएं सांजाए ।
इलम डिंने बेसक जो, त आंऊं को बेठिस ही पाए ॥ ३

एहेडो = ऐसा, संग = संबन्ध, करे = करके, मूंहसे = मुझसे, अची = आकरके, डिंनिएं = देते हो, सांजाए = पहिचान, इलम = ज्ञान, डिंने = दिया, बेसक = निः संदेह, जो = का, त = तो, आंऊं = मैं, को = क्यों, बेठिस = बैठी रही, ही = यहाँ, पाए = अपने आपको समर्पण करके ।

मेरे साथ ऐसा सम्बन्ध स्थापित कर आपने स्वयं सद्गुरुके रूपमें आ कर अपना परिचय दिया । ऐसा सन्देह रहित (तारतम) ज्ञान दिया कि इसे प्राप्त करने पर भी मैं यहाँ पर कैसे बैठी रही ?

इलम डिंने पांहिजो, जेमें सक न कांए ।
डिंनिए संग साहेबी, हित जाणजे कीं न सांजाए ॥ ४

इलम = ज्ञान, डिंने = दिया, पांहिजो = अपना, जेमें = जिसमें, सक = शंका, न = नहीं, कांए = कुछ भी, डिंनिए = देकर, संग = संबन्ध, साहेबी = बडप्पन, हित = यहाँ, जांणजे = जानती हूं, कीं = कुछ भी, न = नहीं है, सांजाए = पहिचान ।

आपने अपना ऐसा ज्ञान दिया जिसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं है । आपने मुझे अपनी अङ्गनाकी प्रतिष्ठा भी दी । यह सब जानते हुए भी मुझे यहाँ पर आपकी कोई पहचान नहीं है ।

जे आंऊं चाहियां दिलमें, से को न कर्‌यो आंई हित ।
कोठयो को न सुखनसे, जीं थिए न उसीडो हित ॥ ५

जे = जो, आंऊं = मैं, चाहियां = चाहती हूं, दिलमें = दिलमें, से = वह, को = क्यों, न = नहीं, करयो = करते हो, आंई = आप, हित = यहीं पर, कोठयो = बुलाते, को = क्यों, न = नहीं, सुखनसे = आनन्दसे, जीं = जिससे, थिए = हो, न = नहीं, उसीडो = उदासी, हित = यहाँ ।

हे मेरे स्वामी ! मेरे हृदयमें जो चाह (इच्छा) है उसे आप यहाँ आकर क्यों पूर्ण नहीं कर रहे हैं ? आप मुझे सुख पूर्वक क्यों नहीं बुलाते हैं जिससे यहाँ पर मेरी उदासी न रहे ।

मूंके केयज सरखरू, से लखे भाइयां भाल ।
रूहें कोठे अचां आं अडू, जीं खिल्ली करियां गाल ॥ ६

मूंके = मुझे, केयज = किया, सरखरू = समान, से = वह, लखे = लाखों, भाइयां = जानू, भाल = अहसान, रूहें = ब्रह्मसृष्टियोंको, कोठे = बुलाकर, अचां = आंऊं, आं = आपके, अडू = तरफ, जीं = जिससे, खिल्ली = हंसकर, करियां = करूं, गाल = बातें ।

आपने मुझे अपने समान प्रतिष्ठा दी है इसलिए मैं आपका लाखों उपकार मानती हूँ । अब मैं समस्त ब्रह्मसृष्टियोंको जागृतकर आपके पास आती हूँ जिससे आपके साथ आनन्दपूर्वक बात कर सकूँ ।

डिठम सुख सोणेंमें, हिक आंझो तोहिजो आए ।
मूसे संग केइए हिन भूंअमें, जे डिए हित सांजाए ॥ ७

डिठम = देखा, सुख = आनन्द, सोणेमें = स्वप्नमें, हिक = एक, आंझो = भरोसा, तोहिजो = आपका ही, आए = है, मूंसे = मुझसे, संग = संबन्ध, केइए = किया, हिन = इस, भूंअमें = पृथ्वी पर, जे = जो, डिए = दिया है तो, हित = यहाँ, सांजाय = पहिचान (पहचान) ।

इस प्रकार स्वप्नवत् जगतमें भी मैंने आपका सुख प्राप्त किया है । यहाँ पर एक आपका ही भरोसा है । इस स्वप्नकी भूमिमें भी आपने मुझसे सम्बन्ध स्थापित किया और अपनी पहचान करवा दी ।

तूं धणी तूं कांध तूं, मूंजो तूं खसम ।
ही मंगांथी लाडमें, जाणी मूर रसम ॥ ८

तूं = आप, धणी–मालिक, तूं = आप, कांध = प्रियतम, तूं = आप, मूंजा = मेरे, तूं = आप, खसम = पति हो, ही = यह, मंगाथी = मांगती हूं, लाड़में = प्यार कर, जाणी = जानके, मूर = मूलकी, रसम = रिवाज (रीति) ।

आप ही मेरे धनी हैं, प्रियतम हैं, स्वामी हैं। परमधामका मूल सम्बन्ध समझ कर मैं आपसे प्यार माँगती हूँ।

कुछाइए त कुछांथी, माठ कराइए तूं।
को न पसांथी कितईं, मथें अभ तरें थी भूं ॥ ९

कुछाइए = बुलाते, त = तो, कुछांथी = बोलती हूं, माठ = चुप भी, कराइए = कराते हो, तूं = आप, को = कोई, न = नहीं, पसांथी = देखती हूं, कितईं = कहीं भी, मथे = ऊपर, अभ = आकाश, तरें = नीचे, थी = है, भूं = पृथ्वी।

आपके बुलवाने पर मैं बोलती हूँ. मुझे चुप कराने वाले भी आप ही हैं। मैं आपके अतिरिक्त कहीं भी कुछ नहीं देख रही हूँ। यहाँ पर तो ऊपर आकाश और नीचे पृथ्वी है।

ए सभ तो सिखाइयूं, आंऊं मुराई अजांण।
जे कंने जे केइए, से सभ तूंहीं पांण ॥ १०

ए = यह, सभ = संपूर्ण, तो = आपने, सिखाइयूं = सिखाया, आंऊं = मैं, मुराई = मूलसे ही, अजांण = अज्ञान, जे = जो, कंने = करोगे, जे = जो, केइए = किया है, से = वह, सभ = सम्पूर्ण, तूंहीं = आपने, पांण = आपही।

यह सब तो आपने ही सिखाया है. अन्यथा मैं तो प्रारम्भसे ही अनभिज्ञ थी। अब भविष्यमें भी आप ही करेंगे और भूतकालमें भी आपने जो किया है, यह सब आप स्वयं पर ही निर्भर है।

घणुए भाइयां न कुछं, पण कुछाइए थो तूं।
इसक रे कुछण कीं रहे, न डिंनी सबूरी मूं ॥ ११

घणुए = बहुत ही, भाइयां = जानती हूं, न = नहीं, कुछं = बोलूं, पण = परंतु, कुछाइए = बुलवाते, थो = हो, तूं = आपही, इसक = प्रेमके, रे = बिना, कुछण = बोलना, कीं = क्या, रहे = रहता है, न = नहीं, डिंनी = दिया, सबूरी = शांति, मूं = मुझे।

मैंने कुछ भी न बोलनेके लिए अनेक प्रयत्न किए हैं। किन्तु आप ही मुझसे बुलवाते हैं। प्रेमके बिना बोलना भी क्या रहता है किन्तु आपने ही मुझे शान्ति नहीं दी है।

पिरी मथें बेही करे, डेखारयाई हे ख्याल।
खिल्लण खसम रूहन मथां, पसी असांजा हाल ॥ १२

पिरी = प्रीतम, मथें = ऊपर, बेही = बैठ, करे = कर, डेखारयाई = दिखाते हो, हे = यह, ख्याल = खेल, खिल्लण = हँस सकें, खसम = प्रियतम, रूहन = आत्माओंके, मथां = ऊपर, पसी = देखकर, असांजा = हमारा, हाल = दशा।

प्रियतम धनी परमधाममें बैठकर यह खेल दिखा रहे हैं। हमारी यह दशा देख कर अपनी अङ्गनाओं पर हँसी करनेके लिए ही उन्होंने ऐसा किया है।

असीं हथ हुकम जे, तो केयूं फरामोस।
जीं नचाए तीं नचियूं, कीं करियूं रे होस ॥ १३

असीं = हम, हथ = हाथ, हुकम = आज्ञा, जे = जो, तो = आपने, केयूं = किये हैं, फरामोस = भूलन, जीं = जिस तरह, नचाए = नचाते हो, तीं = उसी तरह, नचियूं = नाचती हूं, कीं = क्या, करियूं = करूं, रे = बिना, होस = खबर।

हम आपकी आज्ञाके अधीन हैं। आपने ही हम पर भ्रम (माया) का आवरण डाल दिया है। आप जिस प्रकार नचा रहे हैं हम उसी प्रकार नाच रहीं हैं। सुधि (होश) के बिना हम कर भी क्या सकतीं हैं ?

हुकम कर्‌यो था जेतरो, तीं फिरे असल अकल।
अकल फिराए सोणे के, तीं फिरे असांजा दिल ॥ १४

हुकम = आज्ञा, करयो = करते, था = हो, जेतरी = जितनी, तीं = उसी तरह, फिरे = फिरती है, असल = परमधामसे, अकल = बुद्धि, फिराए = फिराकर, सोणे = सुपने, के = की, तीं = वैसी ही, फिरे = फिरता है, असांजा = हमारा, दिल = दिल।

आप जिस प्रकारकी आज्ञा करते हैं उसीके अनुसार हमारी मूल बुद्धि घूमती है। आपने हमारी बुद्धिको स्वप्नके अन्दर जिस प्रकार फिरा दिया है उसीके अनुसार हमारा हृदय भी फिर गया है।

पिरी पांण हित अची करे, बेसक डिंने इलम।
अरस बका हिक हकजो, बेओ जरो न रे हुकम ॥ १५

पिरी = प्रियतम, पांण = आप, हित = यहाँ, अची = आ, करे = करके, बेसक = निःसंदेह, डिंने = दिया, इलम = ज्ञान, अरस = धाम, बका = अखण्ड, हिक = एक, हकजो = अक्षरातीतके, बेओ = दूसरा, जरो = किंचित, न = नहीं है, रे = बिना, हुकम = आज्ञाके।

हे प्रियतम धनी ! आपने यहाँ पर सद्गुरुके रूपमें आकर हमें सन्देह रहित तारतम ज्ञान प्रदान किया। आपके आदेशने हमें यह पहचान करवाया है कि अखण्ड परमधाम तथा अक्षरातीतके अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं है।

लख गुणा डिए सिर पर, सो बराके ईं गाल।
असीं फरामोस तो हथमें, कौल फैल जे हाल ॥ १६

लख = लाखों, गुणा = दोष, डिए = दिए, सिर- सिरके, पर- ऊपर, सो = सौ, बराके = दावपेचोंकी, ईं = एक ही, गाल = वात है, असीं = हम सखियोंकी, फरामोस = नींद, तो = आपके, हथमें = हाथमें है, कौल = कहनी, फेल = चाल चलन, जे = जो भी, हाल = रहनी।

हे धामधनी ! इस माया नगरीमें आपने हमारे सिर पर लाखों दोष दिए तो भी सौ बातों (दाव-पेंच) का एक ही उत्तर है कि इस भ्रान्तिमें हमारे मन, वचन एवं कर्म सभी आपके हाथमें हैं.

तेहेकीक केयो तो इलमें, तो धारा न कोई बेसक।
अरस रूहें असीं कदमों, कित जरो न तो रे हक ॥ १७

तेहेकीक = निश्चय, केआ = कराया, तो = आपके, इलमें = ज्ञानने, तो = आपके, धारा = बिना, न = नहीं है, कोई = कोई भी, बेसक = निशंक, अरस = परमधाम, रूहें = सखियाँ, असीं = हम, कदमों- चरणोंमें, कित

= कहीं भी, जरो = थोडा-सा, न = नहीं, तोरे = आपके बिना, हक = परमात्मा (सत्य) ।

आप द्वारा प्रदत्त तारतम ज्ञानसे यह निश्चित हो गया कि आपके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है । हम सभी परमधामकी आत्माएँ आपके श्रीचरणोंमें हैं । हे धनी ! आपके अतिरिक्त अन्य कुछ भी सत्य नहीं है ।

गुणा डिठम कै पांहिजा, से लाथा तोहिजे इलम ।
कोए पाक न्हाए हिन दुनीमें, से असांके केयां खसम ॥ १८

गुणा = दोष, डिठम = देखे, के = कई, पांहिजा = अपना, से = वह, लाथा = उतारती हूं, तोहिज = आपके, इलम = ज्ञानसे, कोए = कोई भी, पाक = पवित्र, न्हाए = नहीं है, हिन = इस, दुनीमें = संसारमें, से = वह, असांके = हमको, केआं = किया, खसम = प्रियतमने ।

मैंने अपने अनेक दोष देखे हैं । उनको मैं आपके ज्ञान (तारतम ज्ञान) से दूर करती हूँ। इस जगतमें कोई भी पवित्र नहीं है किन्तु हमारे प्रियतम धनीने हमें (तारतम ज्ञान देकर) पवित्र बना दिया है ।

आसमान जिमी जे बिचमें, के चेयो न बका जो हरफ ।
एहेडो कोए न थेयो, जे तो बका डेखारे तरफ ॥ १९

आसमान = आकाश, जिमी = पृथ्वी, जे = के, बिचमें = बीजमें, के = किसीने, चेओ = कहा, न = नहीं है, बका = अखण्ड, जो = का, हरफ = शब्द, एहेडो = ऐसा, कोए = कोई भी, न = नहीं, थेयो = हुआ, जे = जो, तो = आपके, बका = परमधाम, डेखारे = दिखाया, तरफ = दिशा ।

आकाश और भूमिके मध्य अर्थात् इस जगतमें किसीने भी अखण्ड परमधामके विषयमें एक शब्दका भी उच्चारण नहीं किया है । यहाँ पर ऐसा कोई व्यक्ति ही नहीं हुआ है जो अखण्ड परमधामकी दिशा निर्देश कर सके ।

दुनियां हिन आलम में, कायम न डिठो के ।
से सभ पांण पुकारियां, हिन चौडे तबके में ॥ २०

दुनियां = संसारमें, हिन = इन, आलम = सम्पूर्ण, में = बीचमें, कायम = अखण्डको, न = नहीं, डिठो = देखा, के = किसीने, से = वह, सभ = सम्पूर्ण, पांण = आपने, पुकारियां = पुकार किया, हिन = इन, चौडे = चौदह, तबके = लोक, में = में ।

इस नश्वर जगतमें किसीने भी अखण्ड परमधामको नहीं देखा है । इन चौदह लोकोंमें आप ही पुकार-पुकार कर अखण्डकी चर्चा कर रहे हैं ।

से कायम सभे थेयां, कुडा मोहोरा जे ।
बडी बडाइयूं डिनिएं, असां हथ कराए ॥ २१

से = वह, कायम = अखण्ड, सभे = समग्र, थेयां = हुए, कूडा = झूठे, मोहोरा = आगेवान, जे = जितने हैं, बडी = बहुत, बडाइयूं = महत्वपूर्ण, डिंनिएं = देकर, असां = हमारे, हथ = हाथसे, कराए = कराया ।

इस नश्वर जगतके प्राणी तथा इनके स्वामी (देवी देवता आदि) सभी अखण्ड हो गए हैं । यह कार्य हमारे हाथोंसे करवा कर आपने हमें महती प्रतिष्ठा प्रदान की है ।

कै खेल डेखारे रांद में, इलम डिंने बेसक ।
भिस्त डियारी असां हथां, दुनियां चौडे तबक ॥ २२

कै = कितने, खेल = खेल, डेखारे = दिखाया, रांद = मायावी खेल, में = में, इलम = ज्ञान, डिंने = देकर, बेसक = निसंक, भिस्त = मुक्ति स्थल, डियारी = दिलाया, असां = हमारे, हथां = हाथोंसे, दुनियां = संसार, चौडे = चौदह, तबक = लोकको ।

धामधनीने हमें इस नश्वर जगतके खेलमें अनेक खेल दिखाए, तदुपरान्त सन्देह निवारक तारतम ज्ञान भी प्रदान किया । इतना ही नहीं चौदह लोकोंके जीवोंको भी हमारे हाथोंसे मुक्ति स्थलोंका सुख प्रदान करवाया ।

डिंनिएं बड्यूं बडाइयूं, हांणे जे डिए दीदार ।
मिठा वेंण सुणाइए वलहा, त सुख पसूं संसार ॥ २३

डिंनिए = दिया, बड्यूं = बड़ी, बडाइयूं = बडाई, हाणें = अब, जे = जो, डिये = दिजीए, दीदार = दर्शन, मिठा = मधुर, वेंण = वचन, सुणाइए = सुनाओ, वलहा = प्रियतम, त = तो, सुख = आनन्द, पसूं = देखूं, संसार = संसारके ।

आपने हमें अनेक प्रकारसे महत्ता दी । अब तो आप हमें दर्शन दें । हे धनी ! अब आप अपनी मधुर वचन सुनाएँ, जिससे यह संसार सुखमय दिखाई देने लगे ।

हे पण भूल असांहिजी, जे हिनमें मंगुं सुख ।
बिओ डिसण बडो कुफर, गिंनी इलम बेसक ॥ २४

हे = यह, पण = भी, भूल = भूल, असांहिजी = हमारी है, जे = जो, हिनमें = इस मायामें, मंगूं = मांगती हूं, सुख = आनन्द, विओ = दूसरा, डिसण = देखती हूं, बडो = बडा (भारी), कुफर = दोष, गिंनी = लेकर, इलम = ज्ञान, बेसक = निःसंदेह ।

यह भूल भी हमारी ही है कि मैं इस मायामें सुख माँग रही हूँ । सन्देह निवारक तारतम ज्ञान प्राप्त करने पर इस प्रकार मायामें सुख माँगना यह दूसरा बड़ा दोष है ।

खेल त जरो न्हाए कीं, हे इलमें खोली नजर ।
हित बेही मंगुं सुख अरसजा, धणी मिडन कोठे घर ॥ २५

खेल = मायावी खेल, त = तो, जरो = जरा सा, न्हाए = नहीं है, कीं = कुछ भी, हे = यह, इलमें = ज्ञानने, खोली = खोल दिया, नजर = दृष्टि, हित = यहाँ, बेही = बैठकर, मंगूं = मांगती हूं, सुख = आनन्द, अरसजा = परमधामके, धणी = प्रियतम, मिडन = मिलनेको, कोठे = बुलाते, घर = धाममें ।

इस नश्वर जगतके खेलका कोई भी अस्तित्व नहीं है। तारतम ज्ञानने हमारी दृष्टि खोल दी है तथापि मैं यहीं बैठ कर परमधामके सुख माँग रही हूँ और धामधनी मुझे मिलनेके लिए परमधाममें बुला रहे हैं।

ढील मंगुं घर हल्लणजी, बिओ खेल में मंगां सुख।
हिनमें अचेथो कुफर, आंऊं छडी न सगां रूख ॥ २६

ढील = देरी, मंगुं = मांगती हूं, घर = परमधाममें, हल्लणजी = चलनेकी, बिओ = दूसरा, खेलमें = संसारमें, मंगूं = मांगती हूं, सुख = आनन्द, हिनमें = इस दुनियांमें, अचेथो = आता है, कुफर = दूर्गुण, आंऊं = मैं, छडी = छोड़, न = नहीं, सगां = सकती हूं, रूख = दुःखको।

मैं एक ओर परमधाम जानेके लिए विलम्ब करना चाहती हूँ तथा दूसरी ओर इसी खेलमें सुख माँग रही हूँ। इसमें भी दोष ही लग रहा है कि मैं जगतके दुःखमय खेलको नहीं छोड़ पा रही हूँ।

हिकडी गाल थेई हिन न्हाएमें, असां न्हाए भारी थेयो।
त सुख मंगुं हित अरसजा, जे न्हाए के पसूंथा बेयो ॥ २७

हिकडी = एक, गाल = बात, थेई = हुई, हिन = इन, न्हाएमें = संसारमें, भारी = बड़ा, थेयो = हुआ, त = तब, सुख = आनन्द, मंगूं = मांगती हूं, हित = यहीं पर, अरसजा = परमधामका, जे = जो, न्हाए = इस खेल, के = के, पसूंथा = देखती हूं, बेओ = दूसरा।

इस नश्वर जगतमें एक ऐसी बात बन गई है कि यह जगत हम ब्रह्मात्माओंको भारी पड़ गया। इसलिए मैं यहाँ पर परमधामके सुख माँगती हूँ क्योंकि मैंने इस क्षणभङ्गुर जगतको दूसरे (स्थानके) रूपमें स्वीकर कर लिया है।

आंजी मंगाई मंगांथी, या कुफर या भूल।
हे डोरी आंजे हथमें, असां दिल अकल ॥ २८

आंजी = आपके ही, मंगाई = मगवानेसे, मंगांथी = मांगती हूं, या = यह, कुफर = दोष, या = या, भूल = भूल हो, ह = यह, डोरी = डोरी, आंजे = आपके, हथमें = हाथमें, असां = हमारा, दिल = दिल, अकल = बुद्धिकी।

इसे दोष कहा जाए या भूल, आपके मँगानेसे ही मैंने माँगा है । हमारे हृदय और बुद्धि (दिल और दिमाग) की डोरी आपके हाथमें है ।

जे कीं डिसण बोलण, से तो रे सभ बंधन ।
हक इलम चोए पधरो, जे बिचार करे मोमन ॥ २९

जे = जो, कीं = कुछ, डिसण = देखती हूं, बोलण = बोलती हूं, से = वह, तोरे = आपके बिना, सभ = संपूर्ण, बंधन = बंधनमें, हक = सच्चा, इलम = ज्ञान, चोए = कहती हूं, पधरो = प्रत्यक्ष, जे = जो, विचार = समझ, करे = करें, मोमन = सखियां ।

यहाँ पर मैं जो कुछ देखती हूँ या बोलती हूँ, वह सब आपके बिना मायाका बन्धन ही है । यदि ब्रह्मात्माएँ मिलकर विचार करें तो यह ब्रह्मज्ञान सब कुछ स्पष्ट (सीधा) कहता है ।

धणी मूंहजे धामजा, असां न्हाए चोंणजी गाल ।
असांजा आंजे हथमें, कौल फैल जे हाल ॥ ३०

धणी = प्रियतम, मूंहजे = मेरे, धामजा = धामके, असां = हमें, न्हाए = नहीं है, चोंणजी = कहने की, गाल = बात, असांजा = हमारा, आंजे = आपके, हथमें = हाथमें, कौल = कहना, फैल = करना, जे = जो, हाल = रहता है ।

हे मेरे धामके धनी ! हमारे पास तो कहनेके लिए कोई बात भी नहीं रही है । हमारे मन, वचन एवं कर्म सभी आपके ही हाथोंमें हैं ।

महामत चोए मेहेबूबजी, कर्‌यो जे अचे दिल ।
जीं जांणो तीं कर्‌यो, असांजी अकल ॥ ३१

महामत = महामति, चोए = कहते हैं, मेहेबूबजी = हे धनी जी, कर्‌यो = करो, जे = जो, अचे = आता, दिल = दिलमें, जीं = जैसे, जांणो = जानो, तीं = वैसे ही, करयो = करो, असांजी = हमारी, अकल = बुद्धि ।

महामति कहते हैं, हे प्रियतम धनी ! हृदयसे जो चाहें वह करें । आपको जैसा उचित लगे हमारी बुद्धिको उसीके अनुरूप बना दें ।

प्रकरण ३ चौपाई १०६

रे पिरीयम, मंगां सो लाड करे ।
एहेडी किज कां मुदसे, खिलंदडी लगां गरे ॥ १

रे = हे, पिरीयम = प्रियतम, मंगां = मांगती हूं, सो = वह (मिलाप), लाड = प्यार, करे = करके, एहडी = ऐसी, किज = करो, कां = कुछ, मुदसे = मेरे से (मुझसे), खिलंदडी = हंस करके, लगां = लगो, गरे = गलेसे ।

हे प्रियतम धनी ! मैं आपसे प्रेम पूर्वक वही (मिलाप) माँगती हूँ । आप मेरे साथ कुछ ऐसा करें कि मैं हँसती हुई आपके गले लग सकूँ ।

जगाइए इलमसे, बिच सोणें बिहारे ।
निद्रडी आई जा हुकमें, जागां कींय करे ॥ २

जगाइए = जगाओ, इलम से = ज्ञान से, बिच = में, सोणे = स्वप्न, बिहारे = बिठाकर, निद्रडी = नींद, आई = आई, जा = जो, हुकमें = हुकमसे, जागां = जगे, कींय = कैसे, करे = करके ।

इस स्वप्नवत् जगतमें बैठाकर आप ही मुझे तारतम ज्ञानके द्वारा जागृत कर रहे हैं । यह भ्रमकी नींद भी आपकी ही आज्ञासे आई है, मैं उससे कैसे जागृत हो जाऊँ ?

हे अंगडा सभ सोणेंजा, असल कुडा जे ।
जोर करियां घणी परे, त कीं न पुजे तोके ॥ ३

हे = यह, अंगडा = शरीर, सभ = संपूर्ण, सोणेजा = स्वप्नका, असल = वास्तव में, कुडा = झूठा, जे = जो, जोर = बल, करियां = करती हूं, घणी = अनेक, परे = तरहसे, त = फिर भी, कीं = किसी भी प्रकारसे न = नहीं, पुजें = पहूंच, तोके = आप तक ।

यह शरीर पूर्णतः स्वप्नका होनेसे मूलसे ही मिथ्या है । इस स्वप्नसे जागृत होनेके लिए मैंने अनेक प्रयत्न किए तथापि मेरे प्रयत्न आप तक नहीं पहुँच पाए ।

इलमें न रखी कां सक, मूंजो हल्ले न सोणे में ।
संगडो डेखारे बेसक, आंऊं लाड करियां केसे ॥ ४

इलमें = ज्ञानने, न = नहीं, रखी = रखा, कां = कुछ, सक = शंकाए,

मुजो = मेरा, हल्ले = चलता, न = नहीं, सोणे = स्वप्न, में = में, संगडो = सम्बन्ध, डेखारे = दिखा, बेसक = निशंक, आंऊं = मैं, लाड = प्यार, करियां = करूं, केसे = किस के साथ ।

यद्यपि तारतम ज्ञानने कोई सन्देह रहने नहीं दिया तथापि इस स्वप्नमें मेरा कुछ भी नहीं चलता है । आपने निश्चय ही अपना सम्बन्ध प्रकट कर दिया है फिर मैं आपके अतिरिक्त किससे प्रेम करूँ ?

हे पसां सभ सोंणे में, आंऊं बिच जिमी आसमान ।
से न्हाए चौडे तबके, मूंजो संगडो तूं सुभान ॥ ५

हे = यह, पसां = देख, सभ = संपूर्ण, सोणेमें = स्वप्नमें, आंऊं = मैं, बिच = में, जिमी = धरती, आसमान = आकाश, स = वह, न्हाए = नहीं, चौडे = चौदह, तबके = लोक, मुजो = मेरा, संगडो = सम्बन्ध, तूं = आपका, सुभान = प्रीतम के साथ ।

भूमिसे लेकर आकाश पर्यन्त सर्वत्र मैं यह स्वप्न देखती हूँ. हे मेरे प्रियतम धनी ! मेरा सम्बन्ध आपसे है. आप तो इन चौदह लोकोंसे दूर हैं.

मूं धणी मूं हितईं, ओडो डेखारे इलम ।
हथ घुरींदे न लहां, न डिसां नेंणे खसम ॥ ६

मूं = मेरे, धणी = धनीसे, मूं = मुझे, हितईं = यहीं पर, ओडो = नजदीक, डेखारे = दिखाया, इलम = ज्ञान ने, हथ = हाथ, घुरींदे = मांगती हूं, न = नहीं, लहां = पाया, न = नही, डिसां = देखा, नेणे = आंखों से, खसम = धनीको ।

तारतम ज्ञानने मेरे धनीको यहीं पर (निकट ही) दिखाया है । परन्तु मैं अपने हाथोंसे उनका स्पर्श करनेकी चाहना (माँग) करती हूँ तो वे न प्राप्त होते हैं और न ही आँखोंसे दिखाई देते हैं ।

हे इलम एहेडो आइयो, जेहेडो आइए तूं ।
इलम सोंणेमें को करे, मूंमें रही न मूं ॥ ७

हे = यह, इलम = ज्ञान, एहडो = ऐसा, आइयो = है, जेहडो - जैसे,

आइए = हो, तूं = आप, इलम = ज्ञान (तारतम), सोंणेमें = स्वप्नमें, को करे = क्या करे, मूंमें = मुझमें, रही = रही, न = नहीं, मूं = मैं पना । आप जैसे महान हैं आपका ज्ञान भी उसी प्रकार महान है. जब मुझमें मैं पना (परमधामकी 'मैं') ही नहीं रही तो इस स्वप्नमें यह ब्रह्मज्ञान क्या कर सकेगा ?

रांद सभेई निद्रजी, जीर्‌या मर्‌या वजन ।
सोंणे अंगडा असांहिजा, तोके कीं न पुजन ॥ ८

रांद = खेल, सभेई = संपूर्ण, निद्रजी = नींदका, जीर्‌या = जीना, मर्‌या = मरना, वजन = जाना, सोंणे = स्वप्नका, अंगडा = शरीर, असांहिजा = हमारा, तोके = आपको, कीं = कैसे, न = नहीं, पुजन = पहुंचे ।

संसारका यह खेल पूर्ण निद्रावस्थाका है । यहाँ पर जीने और मरने तकका ही ज्ञान है । हमारे शरीर भी इसी स्वप्नके हैं इसलिए इनके द्वारा किसी भी प्रकार आप तक नहीं पहुँचा जा सकता है ।

हे सोंणो तोहिजे हथ में, तो हथ निद्र इलम ।
तोहिजा सुख सोंणे या जागंदे, सभ हथ तोहिजे हुकम ॥ ९

हे = यह, सोंणो = स्वप्न, तोहिजे = आपके, हथमें = हाथमें, तो = आपके, निद्र = नींद, इलम = ज्ञान, तोहिजा = आपका, सुख = सुख = आनान्द, सोंणे = स्वप्नमें, या = या, जागंदे = जागतेमें, सभ = सम्पूर्ण, हथ = हाथमें, तोहिजे = आपकी, हुकम = आज्ञामें है ।

यह स्वप्न भी आपके हाथमें है और निद्रा एवं ज्ञान भी आपके ही हाथमें हैं । आपके सुख स्वप्नमें मिले या जागृत अवस्थामें मिले सभी आपके ही आदेशके अधीन हैं ।

हेडी गाल अची लगी, जांणेथो सभ तूं ।
तो पांणे पांण डेखार्‌यो हिकडो, आंऊं त पसां तो अडूं ॥ १०

हेडी = ऐसी, गाल = बात, अची = आकर, लगी = अटकी, जाणे = जानते, थो = हो, सभ = सम्पूर्ण, तूं = आप, तो = आप, पांणे =

आपकोही, पांण = आप, डेखार्‌यो = दिखाया, हिकडो = एक, आंऊं = मैं, पसां = देखती हूं, त = तब, तो = आपके, अडूं = तरफ।

यह बात यहीं पर आकर रुक गई है. यह सब आप जानते हैं। आपने केवल अपने ही स्वरूपका बोध करवाया है इसलिए मैं आपकी ओर ही देख रही हूँ।

कीं घुरां आंऊं केकणां, ओडो न अचे तूं।
बेओ को न पसांथी कितईं, आंऊं बिच आसमाने भूं ॥ ११

कीं = कैसे, घुरां = मांगूं, आंऊं = मैं, केकणां = किसके पास, ओडो = नजीक, न = नहीं, अचे = आते हो, तूं = आप, बेओ = दूसरा, को = कोई, न = नहीं, पसांथी = देखती हूं, कितई = कहीं भी, आंऊं = मैं, विच = में, आसमान = आकाश, भूं = धरती।

मैं किसके पास क्या माँगूँ ? आप तो मेरे निकट आते ही नहीं हैं। मैं तो इस जगतमें (आकाश और भूमिके मध्यमें) अकेली हूँ इसलिए अन्य किसीको भी कहीं भी नहीं देख रही हूँ।

बोलां थी तो बोलाई, तो अडां पसाइए तूं।
निद्र इलम या इसक, तो डिंनो अचे मूं ॥ १२

बोलां = बोलती, थी = हूं, तो = आपके, बोलाई = बोलवाने से, तो अंडां = आपकी ओर, पसाईए = दिखाते हो, तूं = आपकी, निद्र = नींद, इलम = ज्ञान, या = तथा, इसक = प्रेम, तो = आपका, डिंनो = दिया हुआ, अचे = आता है, मूं = मूझे।

आप बुलवाते हैं तो मैं बोल पाती हूँ और अपनी ओर दिखाते हैं तो देख पाती हूँ। इसी प्रकार नींद, ज्ञान अथवा प्रेम भी आप देते हैं तभी मुझे प्राप्त होते हैं।

जे चओ त बोलियां, नतां मांठ करे रहां।
जे उपाओथा दिलमें, से तो रे केके चुआं ॥ १३

जे = जो, चओ = कहो, त = तो, बोलिया = बोलु, न = नहीं, ता =

तो, मांठ = चुप, करे = होकर, रहां = रहूं, जे = जो, उपाओ = उत्पन्न कराते, था = हो, दिलमें = मनमें, से = वह, तो = आपके, रे = बिना, केके = किसे, चुआ = कहूं ।

आप कहते हैं तो मैं बोलती हूँ अन्यथा चुप रह जाती हूँ। आप मेरे हृदयमें जो भाव उत्पन्न कराते हैं उनको मैं आपके अतिरिक्त किससे कहूँ ?

हंद न रख्यो कितईं, जेसे करियां गाल ।
तो डेखारी डिस तोहिजी, से लखें तोहिजा भाल ॥ १४

हंद = स्थान, न = नहीं, रख्यो = रखा, कितईं = कहीं भी, जेसे = जिससे, करियां = करूं, गाल = बात, तो = आपने, डेखारी = दिखाई, डिस = दिशा = ओर, तोहिजी = आपकी, से = वह, लखे = लाखों, तोहिजा = आपका, भाल = गुण(ऐहेसान) ।

आपने अन्य कोई स्थान ही नहीं रखा है जिससे मैं बात करूँ। आपने मुझे अपनी दिशा दिखाई है जिसका मैं लाखों उपकार मानती हूँ ।

मूं अवगुण डिठां पांहिजा, गुण डिठम पिरम ।
से बेओ जमारो गेंदे, उमेद ए रियम ॥ १५

मूं = मैंने, अवगुण = अवगुण, डिठां = देखा, पांहिजा = अपना, गुण = एहसान, डिठम = देखा, पिरम = प्रियतमका, से = वह, बेओ = गई, जमारो = जमाना(समय), गेंदे = गाते-गाते, उमेद = चाहाना, ए = यह, रियम = रह गईं ।

मैंने स्वयंके अवगुण तथा आपके गुणोंको देखा है। यद्यपि आपके गुण गाते हुए मेरी आयु ही बीत गई तथापि गुणगानकी चाहना बनी रही है ।

तो उमेदूं पुजाइयूं, जेजो न्हाए सुमार ।
हे तो पांण मंगाइए, तूंहीं डियन हार ॥ १६

तो = आपने, उमेदूं = इच्छाओंके, पुजाइयूं = पूरी की, जेजो = जिनका, न्हाए = नहीं है, सुमार = हिसाब, हे = यह, तो = आप, पांण = आपही, मंगाइए = मंगाते हो, तूंहीं = आपही, डियनहार = देनेवाले हो ।

आपने मेरी सम्पूर्ण चाहना पूर्ण की है जिसकी कोई गणना ही नहीं है । वस्तुतः मँगवानेवाले भी आप ही हैं और देनेवाले भी आप ही हैं ।

लाड कोड तो हथमें, संग या सांजाए ।
जडे तडे तूंहीं डिए, बेओ कोए न कितईं आए ॥ १७

लाड = प्यार, कोड = हर्ष, तो = आपका, हथमें = हाथमें, संग = संबन्ध, या = तथा, सांजाए = पहचान भी, जडे = जब, तडे = तब, तूंही = आपही, डिए = देते हो, बेओ = दूसरा, कोए = कोई, न = नहीं, कितइ = कही भी, आए = है ।

हमारे प्रेम (लाड़), हर्ष, आपका सम्बन्ध तथा आपकी पहचान सभी आपके हाथमें हैं । जब कभी कुछ देते हैं तो आप ही देते हैं । आपके अतिरिक्त दूसरा कोई कहीं नहीं है ।

जडे आंणीने ओडडा, तडे पेरै डिंने लज्जत ।
हे डिंनो अचे सभ तोहिजो, मूंके बुझाइए सौ भत ॥ १८

जडे = जब, आंणीने = लाएंगे, ओडडा = नजीक, तडे = तब, पेरो = पहलेही, डिंने = देते हो, लज्जत = स्वाद, हे = यह, डिंनो = दिया, अचे = आकर, सभ = सभी, तोहिजो = आपका, मूंके = मुझे, बुझाइए = समझाया, सौ भत = सौ प्रकार से ।

आप जब भी मुझे निकट बुलाते हैं उससे पूर्व ही मिलनका आस्वादन करवाते हैं । यह सब आपके देनेसे ही प्राप्त होता है । इसको आपने सौ प्रकारसे समझा दिया है ।

जीं बुझाइए मूंहके, डे तूं मेहेर करे ।
जे न घुरां तो कंने, त को आए बेओ परे ॥ १९

जी = जैसे, बुझाइए = समझाइए, मूंहके = मुझे, डे तूं = दो आपही, मेहेर = कृपा, करे = करते हैं, जे न = जो नहीं, घुरां = मागूं, तो = आपके (आपसे), त को = तो कौन, आए = है, बेओ = दूसरा, परे = आगे ।

आपने मुझे जिस प्रकार समझाया है उसे कृपा पूर्वक प्रदान करें । यदि मैं आपसे न माँगू तो दूसरे किसके आगे माँगू ?

हे तो सिखाई मूं सिखई, को न घुरां धणी गरे ।
मूं थेयूं हजारूं हुजतूं, जडे तो डिंनो संग करे ॥ २०

हे = यह, तो = आपने ही, सिखाई = सिखाई, मूं = मैने, सिखई = सिखली, को न = क्यों नहीं, घुरां = मांगुं, धणी = धनीके, गरे = पास, मूं = मेरे से, थेयूं = हुई, हजारूं = हजारों, हुजतूं = अधिकार(दावा), जडे = जब, तो = आप, डिंनो = दिया (ज्ञान), संग = संबन्ध, करे = करके ।

यह तो आपके सिखाने पर ही सीखी हूँ कि मैं अपने धनीसे क्यों न माँगूँ । जब आपने सम्बन्ध बाँध ही दिया है तो मैंने भी आपसे हजारों बार अपना अधिकार जताया (दावे किए) ।

संगडो डिठम बेसक, मंझां तोहिजे इलम ।
त चुआंथी हुजतूं, जे चाइएथो खसम ॥ २१

संगडो = सम्बन्ध, डिठम = देखा, बेसक = निश्चय, मंझा = बीचमें, तोहिजे = आपके, इलम = ज्ञान द्वारा, त = तो, चुआंथी = कहती हूं, हुजतूं = दावे के साथ, जे = जो, चाइएथो = कहलवाते हो, खसम = प्रियतम ।

आपके द्वारा प्रदत्त ज्ञानसे मैंने आपके सम्बन्धकी पहचान की. इसलिए अधिकार (दावा) के साथ कहती हूँ कि आप मेरे स्वामी कहलाते हैं ।

हांणे चाह डिएथो दिलके, त दिल करेथो चाह ।
अपार मिठाइयूं तोहिज्यूं, ते डिंने पांण हथांए ॥ २२

हांणे = अब, चाह = इच्छा, डिएथो = देते हो (करवाते), दिलके = दिलको, त = तो, दिल = दिल, करथो = करता है, चाह = इच्छा, अपार = बेशुमार, मिठाइयूं = मिठापन, लोहिज्यूं = आपकी वाणीमें, ते = तो, डिंने = देते हो, पांण = अपने, हथांए = हाथसे ।

आप हृदयमें चाहना उत्पन्न करते हैं तभी हमारा हृदय चाहना करता है। आप अपने कर-कमलोंसे जो कुछ प्रदान करते हैं उसमें आपकी अपार मधुरता (मिठास) होती है।

महामत चोए मेहेबूबजी, हे सुणज दिल धरे।
हांणे हेडी डिजम हिंमत, जीं लगी रहां गरे ॥ २३

महामत = महामति, चोए = कहते हैं, मेहेबूबजी = हे धाम धनी, हे = यह, सुणज = सुनिए, दिल = दिल, धरे = देकर, हांणे = अब, हेडी = एसी, डिजम = दो, हिंमत = शक्ति, जीं = सिससे, लगी = लगी, रहां = रहूं, गरे = गले से।

महामति कहते हैं, हे प्रियतम धनी ! यह बात हृदय पूर्वक सुनें। अब मुझे ऐसी शक्ति प्रदान करें जिससे मैं आपके गलेमें निरन्तर लगी रहूँ।

प्रकरण ४ चौपाई १२९

श्री देवचंद्रजीको मिलाप बिछोहा

सांगांए थिंदम धाम संगजी, तडे घुरंदिस लाड करे।
दम न छडियां तोहके, लगी रहां गरे ॥ १

सांगाए = पहचान, थिंदम = होगी, धाम = धामके, संगजी = संबन्धकी, तडे = तब, घुरंदिस = मांगूंगी, लाड = प्यार, करे = कर, दम = क्षणभर, न = नहीं, छडियां = छोडूंगी, तोहके = आपको, लगी = लगी, रहां = रहूंगी, गरे = गलेसे।

जब परमधामके सम्बन्धकी पहचान हो गई तो मैं आपसे प्रेमपूर्वक माँगती हूँ। अब मैं पल मात्रके लिए भी आपको नहीं छोडूँगी और सर्वदा आपके गले लगी रहूँगी।

जासीं संग न सांगाए, त रूह केडी सांजाए।
हे गाल्यूं थियन सभ मथियूं, त कीं लाड करे घुरांए ॥ २

जासीं = जब तक, संग = संबन्ध, न = नहीं, संगाए = पहिचान, त रूह = तब आत्माएँ, केडी = क्या, सांजाए = पहिचान, हे = यह, गाल्यूं =

बातें, थियन = होती है, सभ = सभी, मथियूं = ऊपरकी, त = तब तक, कीं = कैसे, लाड = प्यार, करे = करें, घुरांए = मांगूं ।

जब तक सम्बन्धकी ही पहचान नहीं है तब तक आत्माकी भी पहचान कैसे होगी ? ये सभी बातें हम पर बीत रहीं हैं फिर मैं आपसे प्रेमपूर्वक कैसे माँग सकती हूँ ।

हे सभ सांजायूं तो हथ, लाड सांगाए या संग ।
कौल फैल या हाल जो, तो हथमें नौ अंग ॥ ३

हे = यह, सभ = सब, सांजायूं = पहिचान, तो = आपके, हथ = हाथमें, लाड = प्यार, सांगाए = पहिचान, या = या, संग = संबन्ध, कौल = कहनी, फैल = आचरण, या = या, हाल = रहनी, जो = जो, तो = आपके, हथमें = हाथमें, नौ = नौ (९), अंग = अंग है ।

हमारे प्रेम, परिचय तथा सम्बन्ध इन सबकी सम्पूर्ण पहचान आपके हाथोंमें हैं. हमारे वचन, कर्म तथा परिस्थिति सहित नवों अङ्ग आपके ही हाथोंमें हैं ।

पेरो केयां जा गालडी, सा रूहके पूरी लगी ।
हिक तो रे को न कितईं, हे तोहिजे इलमें सक भगी ॥ ४

पेरो = पहला, केयां = की, जा = जो, गालडी = बातें, सा = वह, रूहके = आत्माको, पूरी = पूर्ण रूपसे, लगी = लगी, हि = एक, तोरे = आपके बिना, को = कोई, न = नहीं, कितईं = कही भी, हे = यह, तोहिजे = आपका, इलमें = ज्ञान से, सक = शंकाएं, भगी = दूर हुई ।

आपने पहले जो बात की थी वह मेरी आत्माको स्पर्श कर गई । वस्तुतः एक आपके अतिरिक्त कहीं भी कोई नहीं है । आपके इस तारतम ज्ञानसे सभी सन्देह मिट गए हैं ।

तो घर न्यारो दुनी से, थेयम तोसे संग ।
आसमान जिमी जे बिचमें, मूंके तो धारा सभ रंज ॥ ५

तो = आपका, घर = घर, न्यारो = न्यारा, दुनीसे = दुनियासे, थेयम =

हुआ, तोसे = आपसे, संग = संबन्ध, आसमान = आकाश, जिमीजे = धरतीके, विचमें = बीचमें, मूंके = मुझे, तो = आपके, धारा = बिना, सभ = सम्पूर्ण, रंज = दुःख ।

मेरा आपसे सम्बन्ध हुआ है किन्तु आपका घर तो इस संसारसे परे (न्यारा) है । इस जगतमें (भूमि और आकाशके मध्य) मुझे आपके बिना सब दुःख ही दुःख दिखाई देता है ।

घणा डींह घारिम कुफरमें, कर कूडे से संग ।
कंने सुणी संग तोहिजो, लगी न रूह जे अंग ॥ ६

घणां = बहुत, डींह = दिन, घारिम = गुमाया, कुफरमें = झूठे संगमे, कर = करके, कुडेसे = झूठमेंसे, संग = संबन्ध, कंने = कानोसे, सुणी = सुन कर, संग = संबन्ध, तोहिजे = आपका, लगी = लगी, न = नहीं, रूहजे = आत्माके, अंग = अंगमें ।

असत्य वस्तुओंका सङ्ग कर मैंने इस मिथ्या जगतमें बहुत दिन व्यतीत किए हैं । आपके सम्बन्धकी बात भी कानसे तो सुन ली थी किन्तु आत्मा तक नहीं पहुँची थी ।

हे दिल आइम तेहेकीक, जे हेकली थियां आंऊं ।
त खिल्ले कूडे मूंह से, थिए दम न अघांऊं ॥ ७

हे = यह, दिल = दिलमें, आइम = है, तेहेकीक = निश्चित, जे = जो, हेकली = अकेली, थियां = होऊं, आंऊं = मैं, त = तो, खिल्ले = हंसेगे, कूडे = सहर्ष, मूंहसे = मुझसे, थिए = हो, दम = पलमात्र, न = नहीं, अघाऊं = दूर (जुदा) ।

अब हृदयमें यह निश्चय हो गया कि यदि मैं अकेली हो जाऊँ तो आप हर्षित होकर मुझसे आनन्दपूर्वक मिलेंगे और मैं क्षणमात्र के लिए भी आपसे दूर नहीं रहूँगी ।

हे तां पांणे पधरी, जे आंऊं हेकली थियां ।
तडे कीं न अचे तो दिलमें, जे आंऊं हिन के सुख डियां ॥ ८

हेतां = यह तो, पांणे = आपही, पधरी = स्पष्ट, जे = जो, आंऊं = मैं, हेकली = अकेली, थियां = होऊं, तडे = तब, कीं = क्यों, न = नहीं, अचे = आएगा, तो = आपके, दिलमें = दिलमें, जे = जो, आंऊं = मैं, हिनके = इनको (इन्द्रावती), सुख = सुख, डियां = दूं ।

यह तो आपको स्पष्ट है कि यदि मैं अकेली हो जाऊँ तो आपके हृदयमें यह भाव क्यों प्रकट नहीं होगा कि मैं इस (इन्द्रावती) को सुख दूँ ।

थियां हेकली हिन रंजमें, मथां अभ तरे थी भूं ।
ईं हाल पसां पांहिजो, त कीं छडे हेकली मूं ॥ ९

थियां = होऊं, हेकली = अकेली, हिन = इस, रंजमें = दुःखमें, मथा = ऊपर, अभ = आकाश, तरे = नीचे, थी = है, भूं = धरती, ईं = इस प्रकारकी, हाल = दशा, पसां = देखकर, पांहिजो = अपना, त = तो, कीं = क्यों, छडे = छोडा, हेकली = अकेली, मूं = मुझे ।

यहाँ तो ऊपर आकाश और नीचे भूमि है । ऐसे दुःखरूप संसारमें यदि मैं अकेली हो जाऊँ तो मेरी ऐसी स्थितिको देखकर आप मुझे अकेली कैसे छोडेंगे ?

धणी मूंहजे अरसजा, चुआं मूं हेकली जो हाल ।
जीं आंऊं गडजी बिछडिस, सा करियां आंसे गाल ॥ १०

धणी = प्रियतम, मूंहजे = मेरे, अरसजा = परमधामके, चुआं = कहती हूं, मूं हेकली = मैं अकेली, जो = का, जीं = जैसे, आंऊं = मैं, गडजी = मिलकर, विछडिस = विछुडी, सा = वह, करियां = करती हूं, आंसे = आपसे, गाल = बात ।

हे मेरे धामके धनी ! मैं अपनी अकेली हो जानेकी दशाका वर्णन करती हूँ । मैं जिस प्रकार (सद्गुरुके रूपमें पधारे हुए) आपसे मिली और पुनः विछुड गई वह बात आपसे कहती हूँ ।

आंऊं हुइस धणी जे कदमों, तडे संग न सांगाए ।
चेयाऊं घणी भतिएं, पण थियम न सांजाए ॥ ११

आंऊं = मैं, हुइस = थी, धणजे = प्रियतमके, कदमों = चरणोंमें, तडे = तब, संग = संबन्ध, न = नहीं, सांगाए = पहिचान, चेयूं = कहा, घणी = अनेक, भतीए = प्रकारसे, पण = किन्तु, थियम = हुई, न = नहीं, सांजाए = पहचान ।

मैं जब सद्‌गुरु धनीके चरणोंमें थी तब मुझे मेरे सम्बन्धकी पहचान नहीं थी । मुझे उन्होंने अनेक प्रकारसे समझाया तथापि मुझे पहचान नहीं हुई ।

तडे धणीएं मूंके चयो, जे ब जण्यूं आंईन ।
खिल्लेथ्यूं न्हारे रांद अडां, तांजे सांगाईन ॥ १२

तडे = तब, धणिए = धनीने, मूंके = मुझे, चयो = कहा, जे = जो, ब = दो, जण्यूं = जनी, आंईन = हैं, खिल्लेथ्यूं = हंसते हुए, न्हारे = देखकर, रांद = खेलके, अडां = तरफ, तांजे = कदाचित्, सांगाईन = पहचान हो ।

तब सद्‌गुरु धनीने मुझे कहा, इस खेलमें दो श्रेष्ठ सखियाँ आईं हैं, वे जगतके खेलकी ओर देख कर हँस रहीं हैं । कदाच (तुम्हारे प्रयत्नसे) उनको पहचान हो जाए ।

रूहअल्लाएं ईं चयो, पांण न्हारे कढयूं तिन ।
पांणसे न्हारे न कढयूं, आंऊं हुइस गालमें हिन ॥ १३

रूहअल्लाएं = श्री देवचन्द्रजीने, ईं चयो = यों कहा, पांण = हमें = अपनेको, न्हारे = देखकर, कढ्यूं = निकालना है, तिन = उन्हें, पाणसे = स्वयं उन्होंने, न्हारे = देखा, न = नहीं, कढ्यूं = निकाला, आंऊं = मैं, हुइस = हुई, गालमें = बातोंमें, हिन = उसमें ।

श्यामास्वरूप सद्‌गुरु धनीने इस प्रकार कहा, तुम स्वयं उनको खोजकर निकालो. उन्होंने स्वयंको खोज (देख) कर जागृत नहीं किया (नहीं निकाला) । मैं सद्‌गुरुके इन वचनोंसे सहमत हो गई ।

पाण बखत हल्लणजे, याद केयांऊं मूंके ।
चेयांऊं ईं जेडिन के, जे कोठे अचो हिनके ॥ १४

पांण = आपने (सद्गुरु), बखत = समय, हल्लाणजे = चलने के, याद = याद, केयाऊं = किया, मूंके = मुझे, चेयाऊं = कहा, ईं = इस प्रकार, जेडिन के = सखियोंको, जो = जो, कोठे = बोला ले, अचो = आओ, हिनके = इनको ।

सद्गुरु धनीने धाम जाते समय मुझे याद किया और इन (बालबाई, रतनबाई आदि) सखियोंसे कहा, इस (इन्द्रावती) को बुला कर ले आओ ।

अची आंऊ पेरे लगी, तडे मूंके चेयांऊं ईं ।
रूह तोहिजी रोएथी, आंऊं पेयां अरसमें कीं ॥ १५

अची = आकर, आंऊं = मैं, पेरे = चरणमें, लगी = लगी, तडे = तब, मूंके = मुझे, चेयाऊं = कहा, ईं = इसप्रकार, रूह = आत्मा, तोहिजी = तुम्हारी, रोएथी = रोती हुई देखकर, आंऊं = मैं, पेयां = प्रवेश करुं, अरसमें = परमधाममें, कीं = कैसे ।

मैं जब आकर सद्गुरुके चरणोंमें लगी तब उन्होंने मुझे इस प्रकार कहा, तेरी आत्मा रो रही है। तुझे रोती हुई छोड़ कर मैं परमधाममें कैसे प्रवेश करूँ ?

दर माधा अरस जे, आंऊं रोंदी पसां हित ।
ते मूं तोके कोठई, आंऊं हल्ली न सगां तित ॥ १६

दर = द्वारके, माधा = आगे, अरसजे = परमधामके, आंऊं = मैं, रोंदी = रोती, पसां = देखकर, हित = यहां, ते = इसलिए, मूं = मैंने, तोके = तुझे, कोठई = बुलाया, आंऊं = मैं, हल्ली = चल, न = नहीं, सगां = सकी, तित = वहां धाम ।

मैं तुझे धामद्वारके सम्मुख (आगे) रोती हुई देख रहा हूँ, मैंने तुझे इसलिए बुलाया है कि मैं (तुझे रोती हुई छोड़कर) परमधाम नहीं जा सकता ।

मूंके चेयांऊं पधरो, सा सुई गाल सभन ।
पर केर परूडे इसारतूं, संदियूं हिन दोसन ॥ १७

मूंके = मुझे, चेयाऊं = कहा, पधरो = स्पष्ट, सा = वह जो, सुई = सुनी, गाल = बात, सभन = सभीने, पर = किन्तु, केर = कौन, परूडे = समझे, इसारतूं = इसारेको, संदियूं = की, हिन = यह, दोसन = मित्रकी ।

उन्होंने मुझे (इस प्रकार) स्पष्ट कहा. वे सब बातें सभीने सुनी. परन्तु इन दोनों मित्रों (सुन्दरबाई तथा इन्द्रावती) की साङ्केतिक बातोंको अन्य कौन समझे ?

करे मेडो चेयांऊं मीठी भतें, पण आंऊं निद्र मंझ ।
पण मूं कीं न परूड्यो, सर छडे उड्या हंज ॥ १८

करे = करके, मेडो = मिलाप, चेयाऊं = कहा, मीठी = मधुर, भतें = भांतिसे, पण = परन्तु, आंऊं = मैं, निद्र = अज्ञानकी नींदमें, मंझ = में थी, पण = किन्तु, मूं = मैने, कीं = कुछ, न = नहीं, परूड्यो = समझी, सर = भवसागर, छडे = छोडकर, उड्या = उडगया, हंज = हंस ।

मिलापके समय उन्होंने मुझे विभिन्न प्रकारसे मीठी-मीठी बातें कहीं, परन्तु उस समय मैं अज्ञानरूपी नींदमें थी । मैं कुछ भी समझ न सकी । सद्‌गुरुरूपी हंस भवसागररूप सरोवरको छोड़ कर उड़ गया ।

ईं थीयस आंऊं हेकली, भोंणां डोरींदी बेई ।
धणीएं जा मूंके चई, तांजे न्हारे कढां सेई ॥ १९

ईं = इस प्रकार, थीयस = हुई, आंऊं = मैं, हेकली = अकेली, भोंणां = फिरती हूं, डोरींदी = ढूड़ते हुए, बेई = दोनोंके, धणीए = धनीने, जा = जो, मूंके = मुझे, चई = कहा, तांजे = कदाचित्, न्हारे = देखकर, कढां = निकालुं, सेई = उन्हें ।

मैं इस प्रकार अकेली हो गई हूँ और अब दोनों सखियों (साकुण्डल, साकुमार) को खोजती हुई फिरती हूँ. सद्‌गुरु धनीने मुझे जिस प्रकार कहा था कदाचित् मैं उनको खोज कर निकाल लूँ ।

डोरींदे जे लधिम, अरवा कै हजार ।
किन जाण्यो घर नूरजो, के नूर घर पार ॥ २०

डोरींदे = खोजतेहुए, जे = जो, लधिम = मिली, अरवा = आत्माएं, कै = अनेक, हजार = हजारों, किन = किसीने, जाण्यो = जाना, घर = घर धाम, नूरजो = अक्षरका, के = कितनोंके, नूर = अक्षरसे, घर = धाम (अक्षरातीत), पार = परे ।

इस प्रकार खोजते हुए हजारों आत्माएँ मिल गईं । इनमें कितनी आत्माओंने अक्षरधामको अपना घर माना और कतिपयने उससे परे परमधामको अपना घर माना ।

हिनीमें जे बे चयूं, सुंदरबाई सिरदार ।
से पण थेयूं निद्र में, तिंनी सुध न सार ॥ २१

हिनीमें = इन दोनोंमे, जे = जो, बे = दो, चयूं = कहा, सुन्दरबाई = सुन्दरबाई, सिरदार = आगेवानने, से = वे दोनों, पण = भी, थेयूं = है, निद्रमें = नींदमें, तिंनी = उन्हें, सुध = सुधि, न = नहीं, सार = पहचान।

ब्रह्मसृष्टियोंमें शिरोमणि सुन्दरबाईने जिन दो श्रेष्ठ आत्माओंके लिए कहा था वे भी अभी तक नींदमें हैं । उनको किसी भी प्रकारकी सुधि नहीं है ।

तिंनी बी में हिकडी, अची गडई मूं ।
जे हाल आए इनजो, से जाणे थो सभ तूं ॥ २२

तिंनी = उन, बी = दोनों, में = में, हिकडी = एक, अची = आकर, गडई = मिली, मूं = मुझे, जे हाल = जैसी दशा, आए = है, हिनजो = इनकी, से = वह, जाणोथो = जानते हो, सभ = सभी, तूं = आप ।

उन दोनों आत्माओंमें-से एक (साकुण्डल) आकर मुझे मिली । उसकी जो स्थिति (हाल) है उसे आप जानते ही हैं ।

आंऊं बेठिस हिनजे घरमें, मूंके रख्याई भली भत ।
केयांई सभे बंदगी, जांणी तोहिजी निसबत ॥ २३

आंऊं = मैं, बेठिस = बेठी, हिनजे = इनके, घरमें = घरमें, मूंके = मुझे,

रख्याई = रखा, भली = अच्छी, भत = प्रकारसे, केयांई = की, सभे = सभी प्रकारकी, बन्दगी = सेवाएं, जाणी = जानकर, तोहिजी = आपका, निसबत = संबन्ध ।

मैं उसी (साकुण्डल) के घरमें बैठी हूँ । उसने मुझे भलीभाँतिसे रखा है । उसने मुझे आपका ही सम्बन्ध जानकर (आपका ही स्वरूप समझकर) मेरी सब प्रकारसे सेवा की ।

हिक हिनजे दिल में, द्रढाव बडो डिठम ।
हांणे माधा हथ तोहिजे, पण हितरो पेरो केयां पिरम ॥ २४

हिक = एक, हिनजे = इनके, दिलमें = दिलमें, द्रढ़ाव = द्रढ़ता, बडो = बडी, डिठम = देखी, हांणे = अब, माधा = आगे, हथ = हाथमें, तोहिजे = आपके, पण = किन्तु, हितरो = इतना, पेरो = पहले, केयां = किया, पिरम = प्रियतमने ।

मैंने एक इसी (साकुण्डल) के हृदयमें बड़ी दृढ़ता देखी । अब आगे आपके हाथमें है । हे धनी ! मैंने पहले इतना ही किया है ।

चेयम हाल हिनजो, जा हिक मूं गडई ।
मूं बेओ जमारो डोरींदे, हुन बी पण खबर सुई ॥ २५

चेयम = कहती हूं, हाल = दशा, हिनजो = इनकी, जा = जो, हिक = एक, मूं = मुझे, गडई = मिली, मूं = मुझे, बेओ = गई, जमारो = उमर(उम्र), डोरींदे = खोजते हुए, हुन = वह, बी = दूसरी (सकुमार), पण = भी, खबर = समाचार, सुई = सुनी ।

मुझे जो एक (साकुण्डल सखी) मिली है । मैं उसीकी स्थितिका वर्णन कर रही हूँ. इन दोनोंको ढूँढ़ते-ढूँढ़ते मेरी पूरी आयु बीत गई । (अब) उस दूसरी (साकुमार) ने भी यह समाचार (आपका सन्देश) सुन लिया है ।

हे बए जण्यूं मिडी करे, मूंकेथ्यूं न्हारीन ।
हुन असिधें ईं न बिचारयो, हो मूं लाएं डुख घारीन ॥ २६

हे = यह, बये = दोनों, जण्यूं = जनी, मिडी = मिलकर, करे = कर,

मूंकेथ्यूं = मेरी है, न्हारीन = देखती, हुन = उसने, असिंधे = बेसुधिमें, ईं न = ऐसा नहीं, विचार्‌यो = विचारकिया, हो = वह, मूं = मेरे, लाए = लिए, डुख = दुःख, घारीन = उठारही है ।

(उसे ज्ञात है कि) ये दोनों (इन्द्रावती और साकुण्डल) मिल कर मुझे ढूँढ रहीं हैं किन्तु उस बेसुध (साकुमार) सखीने इतना भी विचार नहीं किया कि ये दोनों मेरे लिए कितना कष्ट उठा रहीं हैं ।

हो हल्लण के उतावर्यूं, अरस उपटे दर ।
हे कीं रेहेद्‌यूं रंज में, हुन बिसरी न्हाए खबर ॥ २७

हो = वह, हल्लण = चलन, के = को, उतावर्‌यूं = जल्दीमें है, अरस = परमधाम, उपटे = खोलकर, दर = द्वार, हे = यह, कीं = कैसे, रेहेंदियूं = रहेगी, रंजमें = दुःखरूपी संसारमें, हुन = उनको, विसरी = भूलगई, न्हार = नहीं है, खबर = खबर ।

वह (साकुण्डल)घर चलनेके लिए शीघ्रता कर रही है । परमधामका द्वार खुल जाने पर वह इस दुःखमय जगतमें कैसे रह सकेगी ? किन्तु वह दूसरी (साकुमार) इस प्रकार भूल गई कि उसे कोई सुधि ही नहीं है ।

ते लाएं पिरम आंऊं हेकली, मूं बी न गडजी कांए ।
जे तोजो दर उपटे, मूज्यूं आसडियूं पुजाए ॥ २८

ते = इस, लाएं = लिए, पिरम = प्रियतम, आंऊं = मैं, हेकली = अकेली, मूं = मुझे, बी = दूसरी, न = नहीं, गडजी = मिली, कांएं = कहीं भी, जो = जो, तोजो = आपका, दर = द्वार, उपटे = खोलकर, मूज्यूं = मेरी, आसडीयूं = आशाए, पुजाए = पूर्ण करे ।

इसलिए हे धनी ! मैं अकेली हूँ. मुझे ऐसी दूसरी (सखी) कहीं नहीं मिली जो आपके धामके द्वार खोलकर मेरी इच्छा पूर्ण करे ।

पिरम हांणे पांण बिचमें, तूहीं आइए तूं ।
से तूं जांणे सभ कीं, हे तो सुध डिंनी मूं ॥ २९

पिरम = प्रीतम, हाणे = अब, पांण = आपके, विचमें = बीचमें, तूंही =

आपही, आइए = हो, तूं = आप, से = जो, तूं = आप, जाणे = जानो, सभ = सब, कीं = कुछ, हे = यह, तो = आप, सुध = खबर, डिने = दिया, मूं = मुझे ।

हे धनी ! अब आप और मेरे मध्यमें मात्र आप ही हैं । यह सब कुछ आप जानते ही हैं । यह सुधि भी तो मुझे आपने ही दी है ।

धणी तूं पसेथो पांणई, अने कुछाइएथो पांण ।
जा करे गाल रे इसक, सा दानाई सभ अजांण ॥ ३०

धणी = हे धणी, तू = आप, पसेथो = देख रहे हो, पांणई = स्वयं, अने = और, कुछाइथो = कहलवाते हो, पांण = स्वयं, जा = जो, करे = करता है, गाल = बातें, रे = बिना, इसक = प्रेमके, सा = वह, दानाई = चतुराईकी बातें, सभ = संम्पूर्ण, अजाण = अज्ञानता की है ।

हे धनी ! आप स्वयं देख रहे हैं और आप स्वयं ही (मुझसे) यह बुलवा रहे हैं । जो आत्मा प्रेमके बिना मात्र बात ही करती है उसका वह चातुर्य अज्ञानता पूर्ण है ।

दममें चुआं आंऊं हेकली, दम में गडजिम बेई ।
दम में मेडो रूहन जो, न्हारियां थी त्रेई ॥ ३१

दममें = पलभरमें, चुआं = मैं, आंऊं = कहती हूं, हेकली = अकेली, दममें = पलभरमें, गडजिम = मिली, बेई = दूसरी, दममें = परभरमें, मेडो = मिलाप, रूहनजो = आत्माओंका, न्हारिया थी = खोजती हूं, त्रेयई = तीसरी को ।

मैं एक क्षणके लिए कह रही हूँ कि मैं अकेली हूँ, दूसरे क्षण कहती हूँ कि मुझे दूसरी सखी मिल गई है । क्षण भर पश्चात् ब्रह्मात्माओं (सखियों) के मिलनकी बात करती हूँ और तीसरी सखी (साकुमार) को खोजती हूँ।

दम में आंऊं बांझाइंदी, दम में हित नाहियां ।
दम में भाइयां मूंरथी, तोके थीराइयां ॥ ३२

दममें = पलभरमें, आंऊं = मैं, बांझाइंदी = तडपती हूं, दममें = पलभरमें,

हित = यहां, नाहियां = नहीं है, दममें = क्षणभरमें, भाइयां = अनुभव होता है, मूंरथी = मूलसे, तोके = आपको, थीराइयां = स्वीकार करती हूं ।

मैं एक क्षणमें व्याकुल होती हूँ, दूसरे ही क्षण मुझे अनुभव होता है कि मैं यहाँ पर नहीं हूँ, अन्य क्षणमें मुझे निश्चय होता है कि इन सब (घटनाओं) के मूलमें आप ही हैं ।

फिरी पसांजा पांण अडां, त करियां कांध से दानाई ।
तडे अची लिकांथी तो तरे, चुआ हे डिंनी धणीजी आई ॥ ३३

फिरी = फिर, पसांजा = देखती हूं, जा = जो, पांण = अपनी, अडां = ओर, त = तो, करियां = करती हूं, कांधसे = धनीसे, दानाई = चतुराई, तडे = तब, अची = आकर, लिकांथी = छिपती हूं, तो = आपके, तरे = शरणमें-चरणोंमें, चुआं = कहती हूं, हे = यह, डिंनी = दिया हुआ, धणीजी = धनीका, आई = है ।

पुनः मैं अपनी ओर देखती हूँ तो मुझे लगता है कि मैं अपने धनीसे चतुराई कर रही हूँ । जब मैं आपकी शरणागत होती हूँ (आपके पास आकर छिप जाती हूँ) तब मुझे ज्ञात होता है कि यह चातुर्य भी आपका ही दिया हुआ है ।

धणी मूंजी गालीनजी, से सभ तोके आए जांण ।
अव्वल बिच आखर लग, तो डिंनो अचे पांण ॥ ३४

धणी = धनी, मूंजी = मेरे, गालीनजी = बातोंकी, से = वह, सभ = सम्पूर्ण, तोके = आपको, आए = है, जांण = मालूम, अव्वल = पहेलेसे ही, विच = में, आखर = अन्तिम, लग = तक, तो = आपका, डिंनो = दिया हुआ, अचे = आता है, पांण = अपने आप ।

हे धनी ! आपको मेरी इन सभी बातोंकी जानकारी है । आदि, मध्य तथा अन्त पर्यन्त मुझे आपका दिया हुआ ही तो प्राप्त होता है ।

हे तो डिंन्यूं पांणई, गाल्यूं मूंके करण ।
पण जासीं डिए न इसक, दर खुले न रे वरण ॥ ३५

हे = यह, तो = तो, डिंन्यूं = देन, पाँणई = आप ही, गाल्यूं = बातें,

मूंके = मुझे, करण = करनेको, पण = परन्तु, जासीं = जब तक, डिए = देते, न = नहीं, इसक– प्रेम, दर = द्वार, खुले = खुलता, न = नहीं, रे = बिना, वरण = प्रीतमका ।

आपसे इतनी बात करनेकी शक्ति (ज्ञान) भी आपने ही प्रदान की है, किन्तु हे प्रियतम ! जब तक आप अपना प्रेम प्रदान नहीं करेंगे तब तक आपके बिना परमधामके द्वार नहीं खुलेंगे ।

ईं हाल डिंने धणी मूंहके, जीं गभुरांणी मत ।
जां तो इसक न आइयो, तां कुछांथी सौ भत ॥ ३६

ईं = ऐसी, हाल दशा, डिंनी = दी(बना दी) धणी = धनीने, मूंहके = मुझे, जीं = जैसी, गभुरांणी = वचपना, मत = बुद्धि, जा = जहांतक, तो = आपका, इसक = प्रेम, न = नहीं, आइयो = आया, तां = तबतक, कुछांथी = कहती हूं, सौ भत = सौ प्रकार से ।

हे धनी ! आपने मेरी वह स्थिति (हालत) कर दी जैसे एक बालककी बुद्धि होती है । जब तक आपका प्रेम प्राप्त (अङ्कुरित) नहीं होता तब तक मैं इसी भाँति बोलती रहूँगी ।

माठ करे पण न सगां, बंधांजा बोले ।
सभ जांणेथो रूहजी, चुआं कुजाडो दिल खोले ॥ ३७

माठ = चुप, करे = होकर(रह), पण = भी, न = नहीं, सगां = सकती, बंधांजा = बंध जाती हूं, बोले = बोलने से, सभ = सम्पूर्ण, जांणेथो = जानते हो, रूहजी = आत्माकी, चुआं = कहूं, कुजाडो = क्या, दिल = मन(दिल), खोले = खोलकर ।

मैं मौन भी नहीं रह सकती और बोलती हूँ तो भी बँध जाती हूँ. आप अपनी अङ्गना (आत्मा) की सभी बातें जानते ही हैं फिर हृदय खोल कर भी क्या कहूँ ?

बेओ को न पसां कितईं, सभ अंग तांणीन तो अडूं ।
जे हाल पुजाइए पुंनिस, हांणे को न करिए हेकली मूं ॥ ३८

बेओ = अन्य, को = कोई, न = नहीं, पसां = देखती, कितई = कहीं

भी, सभ = सम्पूर्ण, अंग = अंग, तांणीन = खींच रहे हैं, तो = आपकी, अडूं = ओर, जे = जिस, हाल = दशामें, पुजाइए = पहुचाओगे, पुंनिस = पहुचूंगी, हांणे = अब, को = क्यों, न = नहीं, करिए = करते, हेकली- अकेली, मूं = मुझे

मैं आपके अतिरिक्त किसीको भी कहीं नहीं देखती. मेरे सभी अङ्ग आपकी ओर ही आकृष्ट हैं । आपने मुझे जिस दशामें पहुँचाया, मैं वहाँ पहुँच गई हूँ । अब मुझे अकेली क्यों छोड़ते हैं ?

जे तूं करिए हेकली, भाइए गडजां आंऊं ।
से तां तोहिजी सिखाइल, त पाइयांथी धांऊं ॥ ३९

जे = जो, तूं = आप, करिए = करोगे, हेकली = अकेली, भाइए = जानकर, गडजां = मिले, आंऊं = मैं, से = वह, तां- तो, तोहिजी = आपकी, सिखाइल = सिखाई हुई, त = तब, पाइयांथी = करती हूं, धांऊं = पुकार ।

यदि आप मुझे अकेली कर दें तो आप जानते ही हैं कि मैं आपसे अन्तरसे मिल लूँ. यह भी आपका ही सिखाया हुआ है इसलिए मैं पुकार कर रही हूँ ।

हे जे कराइयूं गालियूं, एही कौल फैल जे हाल ।
हिन मजलके ओडडी, मूंके केइए नूरजमाल ॥ ४०

हे = यह, जे = जो, कराइयूं = करवा रहे हो, गालियूं = बातें, एही = येही, कौल = कहना, फैल = आचरण करना, जे = जो, हाल = वर्तना, हिन = इस, मजल = मंगिल, के = के, ओडडी = निकट, मूंके = मुझे, केइए = किया, नूरजमाल = हे धनी ।

आपने मुझसे जो पुकार (बात) करवाई है, उसीके अनुरूप मेरे मन, वचन एवं कर्म होने चाहिए. हे धामधनी ! अब आपने मुझे इस भूमिकाके निकट पहुँचाया है ।

पिरी डिएथो जे दिलमें, सा माधाई करियां पुकार ।
से सभ तूंहीं कराइए, तो हथ कारगुजार ॥ ४१

पिरी = प्रियतम, डिएथो = देते है, जे = जो, दिलमें = दिलमें, सा = वही, माधाई = आगेसे, करियां = करती हूं, पुकार- पुकार, से = वह, सभ = सम्पूर्ण, तूंहीं = आप ही, कराइए = कराते हो, तूं = आपके, हथ = हाथमें, कारगुजार = करना कराना ।

हे धनी ! आप मेरे हृदयमें जो भाव उत्पन्न करवाते हैं मैं उसी प्रकार आपके आगे पुकार करती हूँ । वह सम्पूर्ण कार्य आप ही करवा रहे हैं क्योंकि सम्पूर्ण कार्य व्यवहार आपके ही हाथमें है ।

लाड कोड आसा उमेदूं, रूहें सभ दिलमें आईन ।
पण तूं जे ताणिए पांण अडूं, त तोके ए भाईन ॥ ४२

लाड = प्यार, कोड = हर्ष, आसा = इच्छा, उमेदूं = अभिलाषा, रूहें = आत्मा(सखियां), सभ = सम्पूर्ण, दिलमें = दिलमें, आईन = है, पण = परन्तु, तूं = आप, जे = जो, ताणिए- आकृष्ट कर, पाण = अपनी, अडूं = ओर, त = तो, तोके = आपके, ए भाइन = पहचाने ।

सभी आत्माओंके हृदयमें लाड़-प्यार, हर्ष, आशा, चाहना है । यदि आप उनको अपनी ओर आकृष्ट करेंगे तो वे आपको पहचान लेंगी ।

हे गाल न मूंजे हथमें, जे कीं करिए से तूं ।
तांजे तूं न खेंचिए, त हे रंज सभे मूं ॥ ४३

हे = यह, गाल = बातें, न = नहीं, मूंजे = मेरे, हथमें = हाथमें, जे कीं = जो कुछ, करिए = करो, से = वह सब, तूं = आपही हो, तांजे = कदाचित, तूं = आप, न = नहीं, खेंचिये = खेंचों, त हे = तो यह, रंज = दुःख, सभे = सम्पूर्ण, मूं = मुझे ।

यह कार्य (बात) मेरे हाथमें नहीं है । जो कुछ भी करते हैं आप ही करते हैं. कदाचित उनको आप अपनी ओर आकृष्ट नहीं करेंगे तो उससे मुझे ही सम्पूर्ण कष्ट होगा ।

बेओ कित न जरे जेतरो, सभ हथ तोहिजे हुकम ।
जे तिर जेतरी मूं दिलमें, सभ जाणेथो पिरम ॥ ४४

बेओ = दूसरा, कित = कहीं भी, न = नहीं, जरे = तिलमात्र, जेतरो = जितना, सभ = सम्पूर्ण, हथ = हाथ, तोहिजे = आपके, हुकुम = आज्ञाके, जे = जो, तिर = तिल, जेतरी = जितना, मूं = मेरे, दिलमें = दिलमें, सम = सभी, जाणेथो = जानते हो, पिरम = धनी ।

सब कुछ आपके आदेशके आधीन (हाथमें) है । इसके अतिरिक्त कहीं कुछ भी नहीं है । मेरे हृदयमें जो भी लेश मात्र भाव है, हे प्रियतम धनी! उसको भी आप जानते हैं ।

कडे कंदां सो डींहडो, असां रूहें जो संग ।
हे हुजतूं करियां लाडमें, जीं साफ थिए मूं अंग ॥ ४५

कडे = कब, कंदा = करोगे, सो = वह, डींहडो = दिन, असां = हमारा, रूहेंजो = सखियोंका, संग = मिलाप, हे = यह, हुजतूं = दावा(अधिकार), करियां = करती हूं, लाडमें = प्यार से, जीं = जिससे, साफ = पवित्र, थिए = हो, मूं = मेरे, अंग = शरीर ।

हे धनी ! हम सभी ब्रह्मात्माओंके मिलनका दिन हमें कब दिखाएँगे ? यह दावा भी मैं लाड़में ही कर रही हूँ जिससे (मिलनेसे) मेरे अङ्ग-प्रत्यङ्ग पवित्र हो जाएँगे ।

दिलमें तूं उपाइए, मंगाइए पण तूं ।
मूंजी रूह के गालियूं, जे मिठयूं सुणाइए मूं ॥ ४६

दिलमें = दिलमें, तू = आप, उपाइए = उत्पन्न कराते, मंगाइए = मंगाते हो, पण = भी, तूं = आपही, मूंजी = मेरी, रूहके = आत्माकी, गालियूं = बातें, जे = जो, मिठ्यूं = मधुर, सुणाइए = सुनाइए, मूं = मुझे ।

मेरे हृदयमें इच्छा भी आप ही उत्पन्न करते हैं और मुझसे मँगवाते भी आप ही हैं । मेरी आत्माको मधुर बातें भी अब आप ही सुनाएँ ।

तूं चाइए कर सुणाइए, सभ उमेदूं तो हथ ।
धणी मूंहजे धामजा, तूं सभनी गालें समरथ ॥ ४७

तूं = आप, चाइए = इच्छा, कर = कर के, सुणाइए = सुनाते हो, सभ

= सम्पूर्ण, उमेदू = कामनाएं, तो = आपके, हथ = हाथमें, धणी = धनी, मूंहजे = मेरे, धामजा = धामके, तूं = आप, सभनी = सभी, गालें = बातों में, समरथ = समर्थ हो ।

अब आप ही चाहना रखकर हमें सुनाएँ क्योंकि हमारी सभी अभिलाषाएँ आपके हाथमें हैं. हे मेरे धामके धनी ! आप सब प्रकारसे समर्थ हैं ।

मूं चयो भूं आसमान बिच, आंऊं हेकली आइयां ।
जीं न अचे दिलमें खतरो, से माधाईथी लाहियां ॥ ४८

मूं = मैंने, चयो = कहा, भूं = धरती, आसमान = आकाश के, विच = बीचमें, आंऊं = मैं, हेकली = अकेली, आइयां = हूं, जीं = जो, न = नहीं, अचे = आए, दिलमें = दिलमें, खतरो = भय शंका, से = आगेही से, लाहियां = नष्ट करती हूं ।

मैंने आपसे प्रार्थना की कि पृथ्वी और आकाशके मध्य (चौदह लोकोंमें) मैं अकेली हूँ. मेरे मनमें कोई भी सन्देह उत्पन्न न हो इसलिए मैं उसे पहलेसे ही दूर करना चाहती हूँ ।

बियूं रूहें हिन अरसज्यूं, सेतां आजिज पांणे ।
हे मंझ रूअन रातो डींह, मूजी रूहडीथी जांणे ॥ ४९

बियूं = अन्य, रूहें = आत्माएं, हिन = इस, अरसज्यूं = परमधामकी, सेतां = वे तो, आजीज = गरीब (असहाय) है, पांणे = आपही, हे = यह, मंझ = खेल के बीच, रूअन = रोती है, रातो = रात, डींह = दिन, मूंजी = मेरी, रूहडी = आत्माही, थी = है, जांणे = जानती है ।

परमधामकी अन्य आत्माएँ तो स्वयंको असहाय (दीन) मानतीं हैं । वे इस खेलमें रात-दिन रो रहीं हैं । मेरी आत्मा (उनकी इस दशाको) जानती है ।

जे आंऊं न्हारियां रूहन अडूं, पसी इंनीजो हाल ।
रूअन अचे मूंहके, से तूं जांणे नूरजमाल ॥ ५०

जे = आंऊं = मैं, न्हारियां = देखती है, रूहन = सखियोंकी, अडूं = ओर, पसी = देखकर, इंनी = इनकी, जो = जो, हाल = दशा, रूअन = रोना, अचे = आता, मूंहके = मुझे, से = वह, तूं = आप, जाणे = जानते हो, नूरजमाल = हे धामधनी ।

जब मैं इन आत्माओंकी ओर देखती हूँ तो इनकी दशाको देखकर मुझे रोना आता है । हे धनी ! आप इसे भलीभाँति जानते हैं ।

आंऊं बी बट भाइयां तिनके, जा उपटे अरस दर ।
कांध लाड पारनज्यूं, मूंके डे खबर ॥ ५१

आँऊं = मैं, बी = दूसरे, बट = पासमें, भाइयां = जानूं, तिनके = उनको, जा = जो, उपटे = खोले, अरस = परमधामका, दर = द्वार, कांध = हे धनी, लाड = प्यार, पारनज्यूं = पूरा करनेका, मूंके = मुझे, डे = दीजिए, खबर = खबर ।

मैं उन अन्य आत्माओंको अपने निकट तभी समझूँगी जब वे परमधामके द्वार खोल दें । हे धनी ! मेरे लाड़को पूर्ण करनेके लिए मुझे यह समाचार अवश्य दें ।

त कीं चुआं बी तिनके, जे मूं अडां पसी रोए ।
त चुआंथी हेकली, मूं बट बी न कोए ॥ ५२

त = तो, कीं = कैसे, चुआं = कहूं, बी = दूसरी, तिनके = उनको, जे = जो, मूं = मेरी, अडां = ओर, पसी = देखकर, रोए = रोती हो, त = तो-तभी, चुआंथी = कहती हूं, हेकली = अकेली, मूं = मेरे, बट = पास, बी = दूसरी, न = नहीं, कोए = कोई ।

उन आत्माओंको मैं 'अन्य (दूसरी)' कैसे कहूँ जो मेरी ओर देखकर रो रहीं हैं । इसलिए तो कहती हूँ कि मैं अकेली हूँ, मेरे पास दूसरी कोई नहीं है ।

पसां बांझाइंदयूं हिनके, मूं अचे बाझांण ।
ईं दर ओडी कांध अडूं, थेयम बधंदी तांण ॥ ५३

पसां = देखती हूं, बांझाइंदयूं = तडपती, हिनके = इनको, मूं = मुझे, अचे = आता है, बाझांण = तडपना, ईं = इस, दर = द्वार, ओडी = पास, कांध = प्रियतम, अडूं = तरफ, थेयम = होती है, बधंदी = बँधकर, तांण = खेंचाव ।

इनको रोती तड़फती हुई देखकर मैं भी व्याकुल होती हूँ । इसलिए हे धनी ! आपके द्वारके निकट आते हुए मैं उनकी ओर विशेष आकृष्ट होती हूँ ।

हे सभ मेहेर धणीयजी, डिएथो रूह अंदर ।
हे पण आइम भरोसो कांधजो, जीं जांणे तीं कर ॥ ५४

हे = यह, सभ = सम्पूर्ण, मेहेर = कृपा, धणीयजी = धामधनी, डिएथो = देते हो, रूह = आत्मा के, अन्दर = अन्दर, हे = यह, पण = भी, आइम = है, भरोसो = विश्वास, कांधजो = धनीका, जीं = जैसा, जांणे = जानो, तीं = वैसा, कर = करो ।

यह सब आप धामधनीकी ही कृपा है जो आप मुझ अङ्गना (आत्मा) पर (वारंवार) कर रहे हैं. मुझे अपने प्रियतम धनीके प्रति पूर्ण विश्वास है। आप जैसा चाहें वैसा ही करें ।

जे मूं करिए हेकली, बिच आसमाने भूं ।
जे आंऊं पसां पांणके हेकली, से सभ करिएथो तूं ॥ ५५

जे = जो, मूं = मुझे, करिए = करते हो, हेकली = अकेली, विच = में (बीच), आसमाने = आकाश, भूं = धरती, जे = जो, आंऊं = मैं, पसां = देखूं, पांणके = स्वयंको, हेकली = अकेली, से = वह, सभ = सम्पूर्ण, करिएथो = करते हो, तूं = आपही ।

यदि आप मुझे पृथ्वी और आकाशके मध्यमें अकेली रखें तो मैं स्वयंको अकेली देख पाऊँगी । यह सब आप ही करनेवाले हैं ।

जे तूं जगाइए इलम से, त पसांथी हेकली पांण ।
जे कीं करिए संग लाडजो, त थीयम तो अडूं तांण ॥ ५६

जे = जो, तूं = आप, जगाइए = जाग्रत किया, इलमसे = ज्ञानसे, त = तो, पसांथी = देखती हूं, हेकली = अकेली, पांण = अपनेको, जे = जो, कीं = कुछ, करिए = करते हो, संग = संबन्ध, लाडजो = प्यारका, त = तभी, थियम = होता है, तो = आपकी, अडूं = ओर, ताणे = आकर्षण।

आप मुझे तारतम ज्ञान द्वारा जागृत करते हैं इसलिए मैं स्वयंको अकेली (एकान्तमें) अनुभव करती हूँ। यदि आप प्रेमका सम्बन्ध बढ़ाएँगे तो मैं आपकी ओर आकृष्ट हो जाऊँगी ।

करे हेकली गडजे, सभ तोहिजे हथ धणी ।
मूं चेयूं उमेदूं बडियूं, जे तूं न्हारिए नेंण खणी ॥ ५७

करे = करके, हेकली = अकेली, गडजे = मिलूं, सभ = संपूर्ण, तोहिजे = आपके, हथ = हाथमें, धणी = हे धनीजी, मूं = मैने, चेयूं = कहा, उमेदूं = इच्छाएं, बडियूं = बडी-बडी, जे = जो, तूं = आप, न्हारिए = देखिए, नेण = नेत्र, खणी = उठाकर ।

आप मुझे एकान्तमें (अकेली) मिलें. हे धनी ! यह सब आपके हाथमें है. यदि आप दृष्टि खोलकर देखें तो मैंने अपनी महती (बड़ी) आकांक्षा (इच्छा) व्यक्त की है ।

बेई कित न जरे जेतरी, कांए न रखिए गाल ।
हे तेहेकीक मूंजी रूहके, केइए नूरजमाल ॥ ५८

बेई = दूसरी, कित = कहीं भी, न = नहीं, जरे = जरासा, जेतरी = जितना, कांए = कुछ भी, न = नहीं, रखिए = रखी, गाल = बात, हे = यह, तेहेकीक = निश्चित, मूंजी = मेरी, रूहके = आत्माको, केइए = करो, नूरजमाल = हे धामधणी ।

मैंने दूसरी कोई इच्छा (बात) लेशमात्र भी नहीं रखी है । हे धनी ! आपने मेरी आत्माको यह निश्चित करा दिया है ।

चुआंथी रूह मूंहजी, से पण आइम भूल ।
मूंजी आंऊं त चुआं, जे हुआं बिच अरस असल ॥ ५९

चुआथी = कहती हूं, रूह = आत्मासे, मूंहजी = मेरी, से = वह, आइम = है, भूल = भूल, मूंजी = मेरी, आंऊं = मैं, त = तो, चुआं = कहूं, जे = जो, हुआं = हुआ, बीच = बीच, अरस = परमधाम, असल = मूलमें ।

'मेरी आत्मा कहती है' इस प्रकार (इस नश्वर जगतमें) कहना भी भूल है । मैं मेरी तभी कह सकती हूँ जब मैं अखण्ड परमधाममें होऊँ ।

हित न्हाए बिच बेही करे, आंऊं कीं चुआं मूंके पांण ।
केई थेई सभ तोहिजी, से सभ तोके आए जांण ॥ ६०

हित = यहाँ-इस, न्हाए = नश्वर खेल, बिच = में, बेही = बैठकर, करे

= कर, आंऊं = मैं, कीं = किस प्रकार, चुआं = कहूं, मूंके = अपनेको, पांण = आप, केई = किया, थेई = हुआ, सभ = सम्पूर्ण, तोहिजी = आपकाही, से = वह, सभ = सम्पूर्ण, तोके = आपको, आए = है, जांण = जानकारी ।

इस नश्वर (अस्तित्वहीन) जगतमें बैठकर स्वयंको (अविनाशी समझकर) 'मैं' कैसे कहूँ ? यह भी आपकी प्रेरणासे ही हुआ है । यह सब आपको विदित ही है ।

हे पण गाल्यूं लाडज्यूं, करिएथो सभ तूं ।
तो रे तोहिजी गालिनजी, दम न निकरे मूं ॥ ६१

हे = यह, पण = भी, गाल्यूं = बातें, लाडज्यूं = प्यारकी, करिएथो = करते हो, सभ = सभी, तूं = आपही, तोरे = आपके बिना, तोहिजी = आपकी, गालिनजी = बात की, दम = एक स्वास, न = न, निकरे = निकलता, मूं = मुझसे ।

यह लाड़-प्यार भरी बातें भी आपकी प्रेरणासे ही कही जा रही है। आपकी प्रेरणाके बिना मुझसे आपकी बातें लेश मात्र भी नहीं हो सकती हैं ।

आसा उमेदूं जे हुजतूं, सभ तूंहीं उपाइए ।
मूंजे मोंहें तेतरी निकरे, जेतरी तूं चाइए ॥ ६२

आसा = चाहना, उमेदूं = आकांक्षा, जे = जो, हुजतूं = अधिकार, सभ = सभी, तूंही = आपही, उपाइए = उत्पन्न कराते हो, मूंजे = मेरे, मोंहें= मुखसे, तेतरी = उतना ही, निकरे = निकालता, जेतरी = जितना, तूं = आप, चाइए = कहलवाते है ।

मेरी आशा-अभिलाषा तथा दावा (अधिकार जताना) को भी आप ही उत्पन्न करते हैं. मेरे मुखसे उतनी ही बातें निकलतीं हैं जितना आप (निकलवाना) चाहते हैं ।

चई चई चुआं केतरो, सभ दिलजी तूं जांणे ।
तो रे आईयां हेकली, सभ जांणेथो पांणे ॥ ६३

चई = कही, चई = कही, चुआं = कहूं, केतरो = कितना, सभ = सभी,

दिलजी = दिलकी, तूं = आप, जांणे = जानते हो, तोरे = आपके बिना, आईयां = है, हेकली = अकेली, सभ = सम्पूर्ण, जांणेथो = जानतेहो, पांणे = आपही ।

मैं कह कर भी कितना कहूँ ? मेरे हृदयकी सभी बातोंको आप जानते हैं । आपके बिना मैं अकेली हूँ । यह सब भी आप ही जानते हैं ।

महामत चोए मेहेबूबजी, हे डिंनी तो लगाए ।
तूं जागे अर्सी निद्रमें, जांणे तींय जगाए ॥ ६४

महामत = महामति, चोए = कहते है, मेहेबूबजी = हे प्रियतम, हे = यह, डिंनी = दिया, तो = आपने, लगाए = लगाई है, तूं = आप, जाणे = जाग्रत हो, अर्सी = हम, निद्रमें = नींदमें है, जांणे = जानो, तींय = वैसा, जगाए = जगाओ ।

महामति कहते हैं, हे प्यारे धनी ! आपने हमें इस मायाके साथ लगा दिया है. आप जागृत हैं और हम नींदमें हैं । आपको जैसा ठीक लगे उसी प्रकार हमें जागृत करें ।

प्रकरण ५ चौपाई १९३

रूहन जो फैल हाल

धणी मूंहजी रूहजा, गाल करियां कोड करे ।
आईन उमेंदूं लाडज्यूं, अची करियां गरे ॥ १

धणी = हे धणी, मूंहजी = मेरी, रूहजा = आत्माके, गाल = बात, करिया = करती हूं, कोड = हर्ष, करे = होकर, आईन = है, उमेंदूं = अभिलाषा, लाडज्यूं = प्यारकी, अची = आकर, करियां = करूंगी, गरे = पासमें ।

हे मेरी आत्माके धनी ! मैं प्रसन्नतापूर्वक बात कर रही हूँ कि मुझे आपका लाड़-प्यार प्राप्त करनेकी अभिलाषा है । उसे मैं परमधाममें आकर ही पूर्ण करूँगी ।

रूहें बिहारे रांदमें, पांण बेठा परडेह ।
सुध न्हाएके रूहके, रांद न अचे छेह ॥ २

रूहें = आत्माओंको, बिहारे = बिठाया, रांदमें = संसारमें, पांण = स्वयं,

बेठा = बैठे हो, परडेह = परदेशमें, सुध = सुधि, न्हाएके = नहीं है कुछ, रूहके = सखियोंको, रांद - संसार का खेलका, न = नहीं, अचे = आता, छेह = सीमा (किनार) ।

आपने अपनी अङ्गनाओंको नश्वर जगतके खेलमें बैठाया और आप स्वयं परदेशमें बैठे हैं । इन आत्माओंको (मायामें) कुछ भी सुधि नहीं है क्योंकि इस खेलका कोई किनारा ही नहीं मिल रहा है ।

असां मथे आइयो, पिरियन जो फुरमान ।
मूक्यो आं रसूलनके, डियन रूहन जांण ॥ ३

असां = हमारे, मथें = ऊपर, आइयो = आया है, पिरियन = प्रियतम, जो = का, फुरमान = संदेश, मूक्यो = भेजा, आं = आपने, रसूलके = संदेशवाहकको, डियन = देनेके लिए, रूहन = आत्माओंको, जांण = जानकारी के लिए ।

ऐसे नश्वर खेलमें हमें आपका सन्देश प्राप्त हुआ । आपने अपनी आत्माओंको समाचार देनेके लिए सन्देशवाहक (रसूल) को भेजा ।

लिख्यो आं फुरमानमें, रमुजें इसारत ।
भती भती ज्यूं गालियूं, सभ अरसजी हकीकत ॥ ४

लिख्यो = लिख भेजा, आ = आपने, फुरमानमें = संदेशमें, रमुजें = प्रेमभरी, इसारत = सङ्केत, भती भती = भाँति भाँति, ज्यूं = की, गालियूं = बातें, सभ = सभी, अरसजी = परमधामकी, हकीकत = जानकारी ।

इस सन्देश (कुरान) में आपने कुछ विशेष सङ्केत भेजे हैं और परमधामके सम्बन्धमें भाँति-भाँतिकी जानकारी भेजी है ।

तो चेयो रसूल के, तूं थीयज हुनमें अमीन ।
डिज तूं मूर निसानियूं, जीं अचे रूहें यकीन ॥ ५

तो = आपने, चेओ = कहा, रसूलके = संदेशवाहकको, तूं = तुम, थीयज = होकर, हुनमें = उनमें, अमीन = श्रेष्ठ, डिज = देओ, तूं = आप, मूर = निजधामकी, निसानियूं = सूक्ष्मजानकारी, जीं = जिससे, अचे = आए, रूहें = सखियां, यकीन = विश्वास ।

आपने अपने सन्देशवाहकसे कहा, तुम ब्रह्मात्माओंके अग्रणी होकर उनको

परमधामके सङ्केत दो जिससे उन आत्माओंको विश्वास हो जाए ।

रूहें लग्यूं जडे रांदमें, बिसर बेओ घर ।
आसमान जिमी जे बिच में, अरस बका न के खबर ॥ ६

रूहें = आत्मा, लग्यूं = लगी, जडे = जब, रांदमें = खेलमें, बिसर = भूल, बेओ = गई, घर = घर-धाम, आसमान - आकाश, जिमीजे = धरतीके, बिचमें = बीचमें, अरस-बाका - अखण्ड-परमधाम, न के = नहीं किसीको, खबर = ज्ञात (जानकारी) ।

ब्रह्मात्माएँ जब खेलमें मग्न हो गईं तब अपने घर परमधामको ही भूल गईं । पृथ्वी और आकाशके मध्य अर्थात् इस जगतमें किसीको भी अखण्ड घरकी सुधि नहीं रही ।

तडे मूकियां रूह पांहिजी, जा असांजी सिरदार ।
कुंजी मूकियां अरसजी, उपटन बका द्वार ॥ ७

तडे = तब, मूकियां = भेजा, रूह = आत्मा, पांहिजी = अपनी, जा = जो, असांजी = हमारी, सिरदार = सरदार, कुंजी = चाबी, मूकियां = भेजा, अरसजी = परमधामकी, उपटन = खोलनेको, बका = अखण्डधाम, द्वार = द्वार ।

तब आपने अपनी अङ्गना श्रीश्यामाजीको भेजा जो हम सभी ब्रह्मात्माओंकी शिरोमणि हैं. उनके साथ परमधामके द्वार खोलनेकी कुञ्जी (तारतम ज्ञान) भी भेजी ।

रूहें पसी मूं द्रियूं, रई न सगे रे रांद ।
कां न बिचारे पांण के, मूं सिर केहो कांध ॥ ८

रूहें = आत्माओंको, पसी = देखकर, मूंद्रियूं = मैं डरी, रई = रह, न = नहीं, सगे = सकती, रे = बिना, रांद = खेलके, कां = क्यों, न = नहीं, विचारे = विचारकरते, पांण के = आपके, मूं =मेरे, सिर = सिर, केहो = कैसे, कांध = धनी हैं ।

इन ब्रह्मात्माओंको (खेलमें निमग्न) देखकर मैं डर गई कि ये तो खेलके बिना नहीं रह सकतीं हैं । इनमें-से कोई भी विचार नहीं करती है कि मेरे

सिर पर कैसे परमात्मा हैं अर्थात् मेरे धनी कौन हैं ?

बडी रूह रूहन के, चई समझाईन ।
पांण न्हायूं हिन रांदज्यूं, घर बकामें आईन ॥ ९

बडीरूह = श्यामजी, रूहनके = सखियोंको, चई = कहकर, समझाइन = समझाया, पांण = अपना साथ, न्हायूं = नहीं है, हिन = इस, रांदज्यूं = खेलके, घर = घर, बकामें = परमधाममें, आईन = है ।

श्री श्यामाजीने इन आत्माओंको वारंवार उपदेश देकर समझाया कि हम इस नश्वर खेलके (जीव) नहीं हैं । हमारा घर अखण्ड परमधाम है ।

कै केयांऊं रांदज्यूं गालियूं, समझनके सौ भत ।
कांधे मूकी मूंके कोठण, जांणी आंजी निसबत ॥ १०

कै = अनेक, केयाऊं = की, रांदज्यूं = खेलकी, गालियूं = बातें, समझन के = जानकारी के, सौ = सौ, भत = प्रकार से, कांध = प्रीतम धनीने, मूंकी = भेजा, मूंके = मुझे, कोठण = बुलानेको, जांणी = जानकर, आंजी = आपका, निसबत = सम्बन्ध ।

उन्होंने ब्रह्मात्माओंको समझानेके लिए इस खेलकी बातें सैकडों प्रकारसे की और कहा, धामधनीने अपना सम्बन्ध जान कर तुम्हें बुलानेके लिए मुझे भेजा है ।

बडी रूह चोए आं कारण, मूं हेडो केओ पंध ।
लखे भतें समझाइयूं, पण हियो न अचे हंद ॥ ११

बडीरूह = श्यामाजी, चोए = कहती है, आं = आपके, कारण = लिए, मूं = मैने, हेडो = ऐसा, केओ = किया, पंध-मार्ग, लखे = अनेक, भतें = भाँति से, समझाइयूं = समझाया, पण-फिरभी, हियो = हृदयमें, न = नहीं, अचे = आता, हंद = ठिकाना ।

श्री श्यामाजीने कहा, मैंने तुम्हारे लिए ही यह मार्ग लिया (इतनी दूरी तय की) है । इस प्रकार उन्होंने लाखों रीतिसे समझाया किन्तु हृदयमें

परमधामकी बात अङ्कित ही नहीं हुई ।

आंऊं आईस आंके कोठण, उपटे बका दर ।
आसमान जिमी जे बिचमें, जा केके न्हाए खबर ॥ १२

आंऊं = मैं, आईस = आई हूं, आंके = आपके, कोठण = बुलाने, उपटे = खोलकर, बका = धामका, दर = द्वार, आसमान = आकाश, जिमीजे = धरती के, बिचमें = बीचमें, जा = जो, केके = किसीको भी, न्हाए = नहीं है, खबर = मालूम ।

श्री श्यामाजीने और भी कहा, मैं तुम्हें बुलानेके लिए आई हूँ । परमधामके द्वार खोल दिए हैं, जिसकी जानकारी पृथ्वी और आकाशके मध्यमें किसीको भी नहीं है ।

बडी बडाई आंजी, पसो केहेडो पांहिजो घर ।
हे कूडा कूडी रांदमें, छडे कायम वर ॥ १३

बडी = बडी, बडाई = महिमा, आंजी = आपकी, पसो = देखो, केहेडो = कैसा, पांहिजो = अपना, घर = घर है, हे = यह, कूडा = झूठे, कूडी = झूठ, रांदमें = खेलमें, छडे = छोडकर । कायम = अखण्ड, वर = पति को ।

तुम्हारी महिमा अत्यधिक है । देखो, अपना घर कैसा है. अपने अखण्ड घर एवं धामधनीको छोडकर तुम व्यर्थ ही इस मिथ्या खेलमें मग्न हो गई हो।

कै करे रांदज्यूं गालियूं, फिरी फिरी फना डुख ।
पांहिजा कायम अरसजा, कै कोडी देखारयाई सुख ॥ १४

कै = अनेक, करे = की, रादज्यूं = खेलकी, गालियूं = बातें, फिरी फिरी = बार बार, फना = नश्वर, डुख = दुःख, पांहिजा = अपना, कायम = सदैव, अरसजा = परमधामका, कै = अनेक, कोडी = करोडौं, डेखार्‌याई = दिखाया, सुख = सुख ।

इस प्रकार उन्होंने नश्वर जगतके दुःखरूप खेलकी अनेक बातें कीं और अपने अखण्ड घर परमधामके अनेकों सुख दिखाए ।

तोहें रूहें न छडीन रांदके, कां निद्रडी लगई इन ।
कडे थी न हेडी फकडी, मथां हिन रूहन ॥ १५

तोहे = फिरभी, रूहें = सखियां, न = नहीं, छडीन = छोडती है, रांदके = खेलको, कां = क्यों, निद्रडी = नींद, लगाई = लगाई, ईन = इनको, कडे = कभी, थी = हुई, न = नहीं, हेडी = ऐसी, फकडी = हंसी, मथां = ऊपर, हिन = इन, रूहन = आत्माओंको ।

तथापि आत्माएँ नश्वर खेलको नहीं छोड़ रहीं हैं । धामधनीने इनको कैसी नींदमें डाल दिया है । इन आत्माओं पर ऐसा उपहास कभी भी नहीं हुआ था ।

आंऊं पुकारियां इंनी कारण, पण इंनी केहो डो ।
आंऊं पण बंधिस रांदमें, करियां कुजाडो ॥ १६

आंऊँ =मैं, पुकारियां = पुकारती हूं, इनी = इनके, कारण = लिए, पण = किन्तु, इंनी = इनका, केहो = कौनसा, डो = दोष है, आंऊं = मैं, पण = भी, बंधिस = बंधगई, रांदमें = खेलमें, करियां = करें, कुजाडो = क्या ।

मैं इनके लिए पुकार कर रही हूँ किन्तु इनका दोष भी क्या है । क्या करूँ, मैं भी तो खेलमें आकर बँध गई हूँ ।

हिक लधिम गाल पिरनजी, चुआं सभे जेडिन ।
जा लगाइल हिन हकजी, सा न छुटे पर किन ॥ १७

हिक = एक, लधिम = पायी, गाल = बातें, पिरनजी = प्रियतम, चुआं = कहती हूं, सभे = सभी, जेडिन = सखियोंको, जा = जो, हिन = यह, हकजी = धनीकी, सा = वह, न = नहीं, छूटे = छूटती, पर = प्रकाश से, किन = कोई भी ।

मैंने इस खेलमें भी धामधनीकी एक बात (रहस्य) प्राप्त कर ली है. अब मैं सब आत्माओंको वही कहती हुई फिरती हूँ । जिस मायाको स्वयं धामधनीने हमारे साथ लगा दिया है वह अन्य किसीसे भी नहीं छूटती है ।

मूं उमेदूं पिरनज्यूं, लधिम भली पर ।
सुयम मोहां सजणे, जा खिलवतथी घर ॥ १८

मूं = मेरी, उमेदूं = आशाएं, पिरनज्यूं = प्रीतमकी, लधिम = पानेकी, भली = अच्छी, पर = प्रकार, सुयम = सुना, मोहां = मुखारविन्दसे, सजणे = प्रीतमके, जा = जो, खिलवत = प्रेमसंवाद, थी = हुआ, घर = घरमें

धामधनीसे मेरी अभिलाषाएँ (इस मायामें भी) भलीभाँति पूर्ण हुईं हैं । मैंने अपने प्रियतम धनी (सद्‌गुरु) के मुखारविन्दसे परमधाम मूलमिलावेमें हुई प्रेम चर्चा (प्रेमसम्वाद) के विषयमें भी सुन लिया है ।

परूडिम पिरन जी, हेजा डेखारयाई रांद ।
असां मथें खिलण, केइए कुडन के कांध ॥ १९

परूडिम = समझी, पिरनजी = प्रियतम, हेजा = यह जो, डेखार्‌याई = दिखाया, रांद = खेल, असां = हमारे, मथें = ऊपर, खिलण = हंसनेके लिए, केइए = किया, कुडन = आनन्द देने, के = को, कांध = हे धनी

मैंने प्रियतम धनी (सद्‌गुरु) से समझ लिया कि यह खेल हमें क्यों दिखाया गया है । वस्तुतः हमारा उपहास (हम पर हँसी) कर हर्षित होनेके लिए ही धामधनीने यह खेल बनाया है ।

इसक धणी जे दिल जो, पेरो न लधों पांण ।
त डिखारयाई रांदमें, इसकजी पेहेचान ॥ २०

इसक = प्रेम, धनीजे = धनीके, दिलजो = दिलका, पेरो = पहले, न = नहीं, लधों = पाया, पांण = आपने, त = तब, डिखार्‌याई = दिखाया, रांदमें = खेलमें, इसकजी = प्रेमकी, पेहेचान = पहचानके लिए

हमने पहले धामधनीके हृदयके प्रेमका महत्त्व नहीं जाना था । इसलिए धामधनीने यह खेल दिखा कर प्रेमकी पहचान करवाई है ।

मूं तेहेकीक आयो दिलमें, अगरो धणी इसक ।
डिठम अरस खिलवतमें, सा रही न जरो सक ॥ २१

मूं = मुझे, तेहेकीक = निश्चित, आओ = है, दिलमें = अगरो = ज्यादा,

धणी = धनीका, इसक = प्रेम है, डिठम = देखा, अरस = परमधाम, खिलवतमें = प्रेम संवादमें, सा = वह, रही = रहा, न = नहीं, जरो = जरा भी, सक = शंका

अब मुझे हृदयमें दृढ़ हुआ कि धामधनीका प्रेम अधिक है । परमधाम मूलमिलावेमें (इस विषयमें) जो देखा था उसमें लेश मात्र भी सन्देह नहीं है ।

मूं उमेदूं दिल में, धणी से धारण ।
को न होन उमेदूं धणी के, मूंजा लाड पारण ॥ २२

मूं = मेरी, उमेदूं = आशांएं, दिलमें = दिलमें, धणी से = धनीसे, धारण = मांगनेकी, को न = क्यों नहीं, होन = हो, उमेदूं = इच्छा, धणी के = धनीको, मूंजा = मेरा, लाड = प्यार, पारण = पूर्ण करनेकी

मेरे अन्दर अपने प्रियतम धनीसे कुछ माँगनेकी हार्दिक अभिलाषाएँ हैं तो फिर प्रियतम धनीको मेरे लाड़ पूर्ण करनेकी चाहना क्यों नहीं होगी ?

तरसे दिल मूंहजो, जाणे कडे धणी पसां ।
त कीं न हून कांध के, मिडन उमेदूं असां ॥ २३

तरसे = तरसता है, दिल = दिल, मूंहजो = मेरा, जाणे = मानो, कडे = कब, धणी = धनीको, पसां = देखूं, त = तब, कीं = क्यों, न = नहीं, हून = हो, कांध = धनी, के = को, मिडन = मिलनेकी, उमेंदूं = इच्छा, असां = हमसे

मैं अपने प्रियतम धनीके दर्शन कब प्राप्त करूँ, इसके लिए मेरा हृदय व्याकुल हो रहा है । तो प्रियतम धनीको भी मुझसे मिलनेकी चाहना क्यों नहीं होगी ? (अवश्य होगी) ।

दिल थिए मिडन धणीयसे, जे मूं इसक न हंड ।
कांध पूरे इसकसे, तिन आए सौ गणी चढ ॥ २४

दिल = दिलमें, थिए = होता है, मिडन = मिलने, धणीयसे = प्रियतमसे, जे = जो, मूं = मुझमें, इसक = प्रेम, न = नहीं, हंड = ठिकाना, कांध

= धनीजी, पूरे = पूर्ण, इसकसे = प्रेमके, तिन = उनमें, आए = है, सौ = सौ, गणी = गुणा, चढ = बढ़कर

मुझे प्रियतम धनीसे मिलनेकी हार्दिक उत्कण्ठा तो होती है किन्तु मुझमें प्रेमका कोई ठिकाना नहीं है । धामधनी स्वयं प्रेमसे परिपूर्ण हैं । उनमें तो (मुझसे मिलनेकी चाहना) सौ गुणा अधिक है ।

पण हे गाल्यूं आइन रांदज्यूं, ते मूंके सिकाइए ।
पांण इसक डेखारे लाडमें, मूंके कुडाइए ॥ २५

पण = किन्तु, हे = यह, गाल्यूं = बातें, आईन = है, रांदज्यूं = खेलकी, ते = इसलिए, मूंके = मुझे, सिकाईए = दुःखी कर रहे हो, पांण = आप, इसक = प्रेम, डेखारे = देखाके, लाडमें = प्यारसे, मूंके = मुझे, कुडाइए = विलखाते हो

किन्तु ये सभी बातें खेलकी हैं इसलिए आप मुझे अधिक तरसा रहे हैं । आप बड़े लाड़से अपना प्रेम दिखा कर मुझे व्याकुल बना (कुढ़ा) रहे हैं ।

मूं उमेदूं दिल में, धणी ज्यूं गडजण ।
लाड पारण असांहिजा, आईन अगर्‌यूं सजण ॥ २६

मूं = मेरी, उमेदूं = इच्छाएं, दिलमें = दिलमें, धणी = प्रियतम, ज्यूं = की, गडजण = मिलनेकी, लाड = प्यार, पारण = पूर्ण करने, असांहिजा = हमारी, आईन = है, अगर्‌यूं = अधिक, सजण = धनीको

मेरे हृदयमें अपने धनीसे मिलनेकी अभिलाषा है किन्तु मेरे लाड़को पूर्ण करनेके लिए धामधनीके हृदयमें और अधिक चाहना है ।

अंईं सुणेजा जेडियूं, चुआं इसकजी गाल ।
हे सुध न असां अरसमें, धणी साहेबी कमाल ॥ २७

अंईं = तुम, सुणजा = सुनो, जेडियूं = सखियो, चुआं = कहती हूं, इसकजी = प्रेमकी, गाल = बातें, हे सुध = ये सुधि, न = नहीं, असां = हमें, अरसमें = धाममें, धणी = धनीकी, साहेबी = प्रभूत्व, कमाल = परिपूर्ण है

हे ब्रह्मात्माओ ! सुनो, मैं प्रेमकी बात कर रही हूँ । परमधाममें हमें यह सुधि नहीं थी कि धामधनीकी प्रभुता (साहेबी) कितनी विशेष है ।

न सुध केहेडो कादर, न सुध केहेडी कुदरत ।
न सुध अरस कायम जी, न सुध हक निसबत ॥ २८

न = नहीं, सुध = सुधि, केहेडो = कैसे, कादर = सामर्थ्यवान, न = नहीं, सुध = सुधि, केहेडी = कैसी, कुदरत = प्रकृति, न = नहीं, सुध = सुधि, अरस = परमधाम, कायमजी = अखण्डकी, न सुध = नहीं सुधि, हक = श्री राजजीके. निसबत = सम्बन्धकी

हमें यह भी सुधि नहीं थी कि धामधनी स्वयं कितने समर्थ हैं और उनकी कला कैसी है । न हमें परमधामकी शाश्वतता (अखण्डता) की सुधि थी और न ही अपने प्रियतम धनीके सम्बन्धकी पहचान थी ।

सुध न सुख कांधजा, सुध न धणी इसक ।
सुध न असां लाडजी, केहेडा पारे हक ॥ २९

सुध = खबर, न = नहीं, सुख = सुख, कांधजी = प्रियतमकी, सुध = मालूम, न = नहीं, धणी = धनीका, इसक = प्रेम, सुध = पता, न = नहीं, असां = हमारा, लाडजी = प्यारका, केहेडा = कैसा, पारे = पूर्ण करते, हक = धनी–परमात्मा ।

हमें प्रियतम धनीके परम आनन्द एवं शाश्वत प्रेमकी सुधि नहीं थी । हमें यह भी सुधि नहीं थी कि धामधनी हमारे लाड़को कैसे पूर्ण करते हैं ।

सुध न आसा उमेद, सुध न प्रेम प्रीत ।
सुध न अरस अरवाहों के, धणी रखियूं केही रीत ॥ ३०

सुध = ज्ञात, न = नहीं था, आसा = इच्छा, उमेद = आकांक्षा, सुध = सुधि, न = नहीं, प्रेम प्रीत = प्रेमप्रीत, सुध = ज्ञान, न = नहीं, अरस = परमधामकी, अरवाहोंके = आत्माओंको, धणी = धनीने, रखियूं = रखा, केही = किस, रीत = प्रकार

हमें अपनी आशा, अभिलाषा, प्रेम तथा प्रीतिकी सुधि नहीं थी । यह भी सुधी नहीं थी कि धामधनी अपनी अङ्गनाओं (परमधामकी आत्माओं) को किस प्रकार रखते हैं ।

हेजे हितरूं गालियूं, केयूं इसक जे कारण ।
लाड कोड आसा उमेदूं, रूहन ज्यूं पारण ॥ ३१

हेजे = यह जो, हितरूं = इतनी, गालियूं = बातें, केयूं = की, इसकजे = प्रेमके, कारण = लिए, लाड-कोड = प्यार हर्ष, आसा = इच्छाएं, उमेदूं = कामनाएं, रूहन = ब्रह्मात्माओं, ज्यूं = की, पारण = पूर्ण कीजिए

यह इतनी बातें (खेलकी रचना एवं ब्रह्मात्माओंको उसमें भेजना आदि) भी प्रेमके लिए ही कीं हैं । ब्रह्मात्माओंके लाड़, प्रेम, प्रसन्नता तथा अभिलाषाओंकी पूर्तिके लिए ही इस खेलकी रचना हुई है ।

जेहेडो धणी पांहिजो, तेहेडी तेहेजी रांद ।
लाड कोड इसकजा, तेहेडाई पारे कांध ॥ ३२

जेहेडो = जैसे, धणी = धनी, पांहिजो = अपने है, तेहेडी = वैसा ही, तेहजी = उनका, रांद = खेल भी है, लाड = प्यार, कोड = हर्ष, इसकजा = प्रेमका, तेहेडाई = वैसाही, पारे = पूर्ण करते है, कांध = धनीजी

धामधनी जैसे महान् हैं उनका खेल भी उसी प्रकार महान् है । वे उसी प्रकारसे अङ्गनाओंके लाड़, प्रेम तथा प्रसन्नताकी अभिलाषाको पूर्ण करते हैं ।

बडी गाल धणीयजी, लगी मथे आसमान ।
आंऊं रे पाणी भूं सूकीयमें, खाधिम डुब्यूं पांण ॥ ३३

बडी = बडी, गाल = बात, धणीयजी = धनीकी, लगी = लगी, मथे = ऊपर, आसमान = आकाश, आंऊं = मैं, रे = बिना, पाणी = पानीके, भूं = धरती, सूकीयमें = सूकी हुई में, खाधिम = खा रही हूं, डूब्यूं = डुबकियाँ-गोता, पांण = स्वयं ।

धामधनीकी बात ही अति बड़ी है, वह ऊँचे आकाशको छू लेती है । किन्तु मैं यहाँ पर जलहीन (प्रेमहीन) सूखी भूमि पर गोते लगा रही हूँ ।

जा सऊर करियां रूहसे, त निपट गरई गाल ।
चुआं हित हिन मूंह से, मूंजो खसम नूरजमाल ॥ ३४

जा = जो, सऊर = विचार, करियां = करती हूं, रूहसे = आत्मासे, त

= तब, निपट = निश्चय, गरई = भारी-गूढ़, गाल = बात, चुआं = कहती हूं, हित = यहां, हिन = इस, मूंहसे = मुखसे, मूंजो = मेरा, खसम = मालिक, नूरजमाल = श्रीराजजी ।

मैं हृदय पूर्वक विचार करके देखती हूँ तो यह बात अति महत्त्वपूर्ण दिखाई देती है । मैं इस नश्वर जगतमें नश्वर जिह्वा द्वारा कह रही हूँ कि अक्षरातीत पूर्णब्रह्म परमात्मा मेरे स्वामी हैं ।

अंईं गाल सुणेजा जेड्यूं, मूं चरई ज्यूं चंगी भत ।
गाल कंदे फटी न मरां, के कांध से निसबत ॥ ३५

अंईं = तुम, गाल = बात, सुणेजा = सुनो, जेडियूं = सखियो, मूं = मैं, चरई = दिवाने, ज्यूं = जैसी, चंगी = भली, भत = भाँती, गाल = बात, कंदे = करती, फटी = तुरन्त ही, न = नही, मरां = मरी, के = करके, कांध से = धनीसे, निसबत = सम्बन्ध ।

हे आत्माओ ! मुझ जैसी दिवानीकी बातको तुम भलीभाँति सुनो । यह बात कहते हुए तत्काल मेरी देह क्यों नहीं छूटती है ? मेरा सम्बन्ध कौन-से धनीसे है ?

लाड कोड आसा उमेदूं, आंऊं चुआं मूं माफक ।
पारण वारो मूं धणी, कायम अरस जो हक ॥ ३६

लाड = प्यार, कोड = हर्ष, आसा = इच्छा, उमेदूं = आकांक्षा, आंऊं = मैं, चुआं = कहती हूं, मूं = मेरे, माफक = अनुसार, पारण = पूरा करने, वारो = वाले, मूं = मेरे, धणी = धनी, कायम = अखण्ड, अरस = धाम, जो = के, हक = धनी है ।

मैं तो लाड़-प्यार, आशा तथा अभिलाषाकी बात भी अपनी (लौकिक) क्षमताके अनुरूप ही करती हूँ किन्तु इनको पूर्ण करनेवाले मेरे धनी तो शाश्वत परमधामके हैं ।

जे आंईं गाल बिचारियो, रूहें मेडो करे ।
त रही न सगो किएं रांदमें, हे कूडा वजूद धरे ॥ ३७

जे = जो, आंईं = आप, गाल = बात, विचारियो = विचारकरो, रूहें =

आत्मा, मेडो = मिलाप, करे = कर, त = तब, रही = रह, सगो = सकती, किएं = किसी प्रकार, रांदमें = खेलमें, हे = इस, कूडा = झूठे-नश्वर, वजूद = शरीर, धरे = धरण कर ।

यदि तुम सभी आत्माएँ मिलकर इस बात पर विचार करोगी तो ज्ञात होगा कि हम इस नश्वर जगतमें शरीर धारण कर नहीं रह सकतीं ।

सऊर डियण मूं हियो, कठण केयांऊं निपट ।
नतां विचार कंदे हिक हरफजो, फटी पोए न उफट ॥ ३८

सऊर = विवेक विचार, डियण = देकर, मूं = मेरा, हियो = हृदय, कठण = कठोर, केयाऊं = किया, निपट = निश्चय, नतां = नहीं तो, विचार = विचार, कंदे = कर, हिक = एक, हरफजो = शब्द ना, फटी = फट जाए, पोए = पडी, न = नहीं, उफट = तुरून्त ।

हमें यह समझ (ज्ञान) देनेके लिए ही उन्होंने हमारे हृदयको कठोर बनाया है अन्यथा इस विषयमें मात्र एक शब्दका भी विचार करते हुए मेरा शरीर तत्काल छूट न जाता ?

सभ अंग डिनाऊं कठण, त रह्यो वंजे आकार ।
नतां सुणी विचारी हे गालियूं, कीं रहे कांधा धार ॥ ३९

सभ = सम्पूर्ण, अंग = अंगोंको, डिनाऊं = बनाया, कठण = कठोर, त = तो, रह्यो = रह, वंजे = गया, आकार = शरीर, नतां = नही तो, सुणी = सुनकर, विचारी = विचारकर, हे = यह, गालियूं = बातें, कीं = कैसे, रहे = रहे, कांधा = धनीके, धार = बिना ।

(धामधनीने हमारे) सभी अङ्गोंको कठोर बना दिया है इसलिए यह शरीर टिका हुआ है अन्यथा इन बातोंको सुनकर तथा इन पर विचार कर कोई भी अङ्गना धनीके बिना नहीं रह सकती ।

इलम डिंनाऊं पांहिजो, मय निपट बडो विचार ।
बका न चौडे तबकें, से डिनों उपटे द्वार ॥ ४०

इलम = ज्ञान, डिंनाऊं = दिया, पांहिजो = अपना, मय = उसमें, निपट = निश्चय, बडो = गहन, विचार = विचार-समझ, बका = अखण्ड, न

= नहीं है, चौडे = चौदह, तबकें = लोकमें, से = तो, डिनों = दिया, उपटे - खोल, द्वार दरवाजा ।

हे धनी ! आपने हमें अपना ज्ञान दिया है जिसमें निश्चय ही बड़ा सार भरा हुआ है. इन चौदह लोकोंमें कोई भी अखण्ड परमधामके विषयमें नहीं जानता था । इस ज्ञानने उसके द्वार खोल दिए है ।

बिहारे ते बिचमें, जो बका वतन ।
करे निसबत हिन कांध से, असल कायम रूह तन ॥ ४१

बिहारे = बिठाया, ते = उसके, बिचमें = बीचमें, जो = जो, बका = अखण्ड, वतन = घर है, करे = करके, निसबत = सम्बन्ध, हिन = इन, कांधसे = धनीसे, असल = वास्तविक, कायम = अखण्ड, रूह = आत्माकी, तन = तन है ।

इस दिव्य ज्ञानने हमें अखण्ड परमधामके मूलमिलावेमें बैठे हुए अनुभव करवाया जहाँ पर हमारी परआत्मा विराजमान है और ऐसे धामधनीके साथ हमारा सम्बन्ध बता दिया ।

हे इलम एहेडो आइयो, सभ दिलजी पूरण करे ।
डेई इसक मेडे कांध से, घर पूजाए नूर परे ॥ ४२

हे = यह, इलम = ज्ञान, एहेडो = ऐसा, आइयो = है, सभ = सम्पूर्ण, दिलजी = दिलकी इच्छा, पूर्ण = पूरी, करे = करता हूं, डेई = देकर, इसक = प्रेम, मेडे = मिलाप कराता है, कांधसे = धनीसे, घर = घर, पूजाए = पहुंचाता है, नूर परे = अक्षरातीतमें ।

यह ऐसा ब्रह्मज्ञान प्राप्त हुआ है कि वह हृदयकी सभी कामनाओंको पूर्ण करता है । यह तारतम ज्ञान प्रेम देकर प्रियतम धनीसे मिलाप कराता है और अक्षरसे परे अक्षरातीत परमधाममें पहुँचाता है ।

रूहें पांण न बिचारियूं, हिन इलम संदो हक ।
से कीं न करे पूरी उमेद, जे में न्हाए सक ॥ ४३

रूहें = सखियोंने, पांण = स्वयं, न = नहां, बिचारियूं = विचार किया, हिन = इस, इलम = ज्ञान, संदो = के, हक = परमात्मा, से = वह, कीं

= क्यों, न = नहीं, करे = करते, पूरी = पूर्ण, उमेद = इच्छा, जेमें = जिसमें, न्हाए = नहीं, सक = शंकाएं ।

हम ब्रह्मात्माओंने इस पर विचार ही नहीं किया कि यह तारतम ज्ञान भी श्री राजजीका है तो फिर वह हमारी अभिलाषाओंको क्यों पूर्ण नहीं करेगा ? इसमें कोई सन्देह ही नहीं है ।

धणी पांहिजो पांण के, बिचारण न डे ।
केके डींह हिन रांद में, करेथो रखण के ॥ ४४

धणी = धनी, पांहिजो = अपने, पांणके = आपके, विचारण = विचार करना, न = नहीं, डे = देते, केके = कितने दिन, डींह = दिन, हिन = इस, रांदमें = खेलमें, करेथो = करते हो, रखण के = रखने चाहते हैं ।

प्रियतम धनी स्वयं हमें इस ज्ञान पर विचार करने नहीं दे रहे हैं क्योंकि वे कितने (कुछ) दिनों तक हमें इसी खेलमें रखना चाहते हैं ।

मूंके अकल न इसक, से पट खोल्याई पांण ।
उघाड्यूं अंख्यूं रूहज्यूं, थेयम सभे सुजाण ॥ ४५

मूंके = मुझे, अकल = बुद्धि, न = नहीं, इसक = प्रेम, से = वह, पट = परदा, खोल्याई = खोलदिया, पांण = स्वयं, उघड्यूं = खोला, अंख्यूं = आंखे, रूहज्यूं = आत्माकी, थेयम = हुई, सभे = सभ, सुजाण = जानकार ।

मुझमें न बुद्धि थी और न ही प्रेम था. हे धनी ! आपने ही अज्ञानका परदा खोलकर मेरी आत्माकी दृष्टि खोल दी जिससे मुझे सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त हुई ।

नता केर आंऊं केर इलम, आंऊं हुइस के हाल ।
पुजाइए हिन मजलके, मूं धणी नूरजमाल ॥ ४६

नतां = नहीं तो, केर = कौन, आंऊं = मैं, केर = कौन, इलम = ज्ञान, आंऊं = मैं, हुइस = थी, के = किस, हाल = दशामें, पुजाइए = पहुंचाया,

हिन = इन, मजलके = मंजिलपे, मूं = मेरे, धणी = धनी, नूरजमाल = श्रीराजजीने ।

अन्यथा मैं कौन हूँ, यह ज्ञान क्या है, मेरी क्या दशा है ? मुझे इसकी जानकारी नहीं थी। मेरे प्रियतम धनीने ही मुझे इस भूमिकामें पहुँचाया है ।

आंऊं हुइस कबीले के घर, ही गंदो वजूद धरे ।
थेयम धणी नूरजमाल घर, जे दर नूर अचे मुजरे ॥ ४७

आंऊं = मैं, हुइस = हुई, कबीले = परिवार, के = के, घरमें = घरमें, ही = यह, गंदो = झूठा नश्वर, वजूद = शरीर, धरे = धारण करके, थेयम = हुई, धणी = प्रीतम, नूरजमाल = अक्षरातीतका, घर = घर, जे = जहां, दर = द्वार, नूर = अक्षरब्रह्म, अचे = आते, मुजरे = दर्शनार्थ

मैं तो नश्वर शरीर धारण कर इसी जगतके कुटुम्ब-परिवारके घरमें बैठी थी। आपकी कृपासे ही मुझे ज्ञात हुआ कि मेरे धनी अक्षरातीत परमधामके स्वामी हैं, जिनके द्वार पर अक्षरब्रह्म नित्य दर्शन करने आते हैं ।

बाहेर मंझ अंतर, सभनी हंदे इसक ।
रुहअल्ला डिखारई, बडी दोस्ती हक ॥ ४८

बाहेर = शरीरमें, मंझ = दिलमें, अन्तर = आत्मामें, सभनी = सभी, हंदे = जगह, इसक = प्रेम, रूहअल्ला = सद्‌गुरू श्रीदेवचन्द्रजी ने, डिखारई = दिखाया, बडी = बडी, दोस्ती = मित्रता, हक = धनीकी ।

परमधाममें बाहर, मध्यमें तथा अन्दर (शरीर, हृदय तथा अन्तरात्मामें) सर्वत्र प्रेम परिपूर्ण है। स्वयं श्री श्यामाजीने सद्‌गुरुके रूपमें आकर (इस जगतमें भी) धामधनीके साथकी मित्रताके दर्शन करवाए हैं ।

मूं फिराक हिन धणी जो, मूंआं अगरो हिन धणीके ।
आंऊं बेठिस धणी नजर में, सिधी न गडजां ते ॥ ४९

मूं = मुझे, फिराक = वियोग, हिन = इन, धणी जो = धनीका, मूंआं = मुझसे, अगरो = अधिक, हिन = इन, धणीके = धनीको, आंऊं = मैं, बेठिस = बैठी हूं, धणी = धनीके, नजरमें = सामने, सिधी = सिधी, न = नहीं, गडजां = मिल सकती, ते = वह ।

धामधनीका वियोग मुझे जितना व्याकुल कर रहा है कहीं उससे अधिक उनको सता रहा है। मैं धामधनीकी दृष्टिके समक्ष बैठी हूँ किन्तु उनसे सीधी नहीं मिल सकती ।

मूं फिराक धणी न सहे, मूंके बिहारयाई तरे कदम ।
धणी पांहिजी रूहन रे, रई न सगे हिक दम ॥ ५०

मूं = मेरी, फिराक = जुदाई, धणी = धनी, न = नहीं, सहे = सह सकते, मूंके = मुझे इसलिए, बिहार्‌याई = बिठाया, तरे = तले, कदम = चरण, धणी = धनी, पांहिजी = अपनी, रूहन = आत्माओंके, रे = बिना, रही = रह, न = नहीं, सगे = सकते, हिक = एक, दम = स्वास (क्षणभर)।

धामधनी मेरा वियोग सहन नहीं कर सकते इसलिए उन्होंने मुझे अपने चरणोंमें रखा है। मेरे धनी अपनी अङ्गनाओंके बिना क्षण भर भी नहीं रह सकते हैं ।

मूं धणी रे घारई, मूंजी सभ उमर ।
इसक धणी या मूंहजो, पसजा पटंतर ॥ ५१

मूं = मैं, धणी = धनीके, रे = बिना, घारई = बिताया, मूंजी = मेरी, सभ = सारी, उमर = आयु, इसक = प्रेम, धणी = धनी, या = या, मूंहजो = मेरा, पसजा = देखो, पटन्तर = भेद ।

मैंने ऐसे कृपालु धनीके बिना ही सम्पूर्ण आयु व्यर्थ गँवा दी । मेरे और धामधनीके प्रेमका अन्तर तुम स्वयं देख लो ।

महामत चोए मेहेबूब जी, असां इसक बेवरो ईं ।
मूंजे आंजे दिलजी, आंऊं कंदिस अरज बेई ॥ ५२

महामत = महामति, चोए = कहते है, मेहेबूबजी = हे प्रियतमजी, असां = हमारा, इसक = प्रेमका, बेवरो = निरूपण, ईं = इस प्रकारका है, मूंजे = मेरे, आंजे = आपके, दिलजी = दिलकी, आंऊं = मैं, कंदिस = करूंगी, अरज = विन्ती, बेई = दोनोंकी ।

महामति कहते हैं, हे प्रियतम धनी ! हमारे प्रेमका विवरण इस प्रकारका है । अब मैं मेरे तथा आपके हृदयके विवरणके लिए दूसरी प्रार्थना करती हूँ ।

वलहा जे आंऊं तोके वलही, गिंनी बिठे तरे कदम ।
हे मूं दिल डिंनी साहेदी, तूं मूं रे रहे न दम ॥ १

वलहा = प्रियतम, जे = जो, आंऊं = मैं, तोके = आपको, वलही = प्यारी, गिंनी = लेकर, बिठे = बैठे, तरे = तले, कदम = चरणों, हे = यह, मूं = मेरे, दिल = दिलने, डिंनी = दी, साहेदी = साक्षी, तूं = आप, मूं = मेरे, रे = बिना, रहे = रह, न = नहीं सकते, दम =पल भर ।

हे प्रियतम धनी ! यदि मैं आपकी प्यारी अङ्गना हूँ और आपने मुझे अपने चरणोंमें बैठा रखा है तो मेरा हृदय साक्षी देता है कि आप मेरे बिना पल मात्र भी नहीं रह सकते ।

डिंनी बी साहेदी इलम, त्री तोहिजे इसक ।
चौथी साहेदी रसूल, बियूं कै साहेदियूं हक ॥ २

डिंनी = दिया, बी = दूसरी, साहेदी = साक्षी, इलम = तारतम ज्ञानने, त्री = तीसरी, तोहिजे = आपके, इसक = प्रेमने, चौथी = चौथी, साहेदी = साक्षी, रसूल = रसूल-कुरान, बेयूं = अन्य, कै = अनेक, साहेदियूं = साक्षियां, हक = सत्य है ।

(इसके लिए) दूसरी साक्षी आपके तारतम ज्ञानने दी । तीसरी साक्षी आपके प्रेमने दी एवं चौथी साक्षी रसूल मुहम्मदसे प्राप्त हुई । इस प्रकार (विभिन्न धर्मग्रन्थों) की अनेक साक्षियाँ प्राप्त हुईं हैं ।

तोहिजे इलमें मूंके ईं चयो, ही रांद केई आं कारण ।
लाड कोड आसा उमेदूं, से सभेई पारण ॥ ३

तोहिजे = आपके, इलम = तारतमज्ञानने, मूंके = मुझे, ईं = ऐसा, चयो = कहा, ही = यह, रांद = खेल, केई = किया, आं = तुम्हारे, कारण = लिए, लाड = प्यार, कोड = उमंग, आसा = इच्छा, उमदूं = मनोरथ, से = वह, सभेई = सारी, पारण = पूरी कीजिए लिए ।

आपके ज्ञान (तारतम ज्ञान) ने मुझे यह कहा, यह खेल तुम्हारे लिए बनाया

गया है। इसमें तुम्हारे लाड़, हर्ष, आशा, अभिलाषा आदि सभी पूर्ण किए जाएँगे ।

बेई न जरे जेतरी, तोहिजे दिलमें गाल ।
लाड उमेदूं रूह दिलज्यूं, से तूं पूरे नूरजमाल ॥ ४

बेई = दूसरी, न = नहीं है, जरे-जेतरी = किंचित्मात्र, तोहिजे = आपके, दिलमें = दिलमें, गाल = बात, लाड = प्यार, उमेदूं = आकांक्षा, रूह = सखियोंके, दिलज्यूं = दिलकी, से = वह, तूं = आप, पूरे = पूर्ण करोगे, नूरजमाल = हे धामधनी ।

हमारे लाड़को पूर्ण करनेके अतिरिक्त आपके हृदयमें अन्य कोई लेश मात्र भी चाहना नहीं है। ब्रह्मात्माओंके हृदयकी अभिलाषाको आप ही पूरी करते हैं ।

हे चियम तिर जेतरी, आईन अलेखे अपार ।
असां सिकण रहे के गालजी, सभ तूंहीं करणहार ॥ ५

हे = यह, चियम = कहा, तिर-जेतरी = यात्किंचित, आईन = है, अलेखे = अथाह, अपार = अपार, असां = हमें, सिकण = चाहाना, रहे = रहे, के = कौनसी, गालजी = बातकी, सभ = सभी, तूही = आपही, करणहार = करनेवाले हो ।

यह तो मैंने आपको तिल मात्र ही कहा है। हमारी चाहनाएँ तो असंख्य तथा अपार हैं। अब हम कौन-सी चाहनाके लिए तरसते रहेंगे जब सब कुछ करनेवाले आप हैं ।

कांध डे तूं हे पडूतर, हिन रांदमें बेही ।
नतां बडा लाड मूंहजा, कीं पारीने सेई ॥ ६

कांध = हे धनी, डे = दो, तूं = आप, हे = यह, पडूतर = जवाब, हिन = इस, रांदमें = खेलमें, बेही = बैठकर, नतां = नहीं तो, बड़ा = बडा, लाड = प्यार, मूंहजा = मेरा, कीं = कैसे, पारीने = पूर्ण करोगे, सेई = वे ।

हे धनी ! इस खेलमें बैठ कर आप मुझे उत्तर दें अन्यथा मेरे विशेष लाड़को आप कैसे पूर्ण करेंगे ?

हुइयूं आसा उमेदूं बडियूं, से थक्यूं बिच हित ।
मूं अडां पसो न सुंणो गालडी, हांणे आंऊं चुआं के भत ॥ ७

हुइयूं = थी, आसा = आशा, उमेदूं = आकांक्षा, बडियूं = बडी-बडी, से = वे, थक्यूं = रह गई, बिच = बीचमें ही, हित = यहां, मूं = मेरी, अडां = ओर, पसो = देखते, न = नहीं, सुंणो = सुनते हो, गालडी = बातें, हाणे = अब, आंऊं = मैं, चुआं = कहूं, के भत = किस तरह।

इस खेलमें मेरी बड़ी-बड़ी अभिलाषाएँ हैं, वे सभी वैसीकी वैसी रह गईं हैं। आप न मेरी ओर देख रहे हैं और न ही मेरी बात सुन रहे हैं। अब मैं आपको किस प्रकार कहूँ ?

तूं कीं पारीने बडियूं, जे हितरी न थिए तोह ।
फिरी फिरी मंगाए न डिए, हे के सिर डियां डोह ॥ ८

तूं = आप, कीं = किस प्रकार, पारीने = पूर्ण करोगे, बडियूं = बडी-उमेद, जे = जो, हितरी = इतना भी, न = नहीं, थिए = होता, तोह = आपसे, फिरी-फिरी = बारंबार, मंगाए = मागने पर भी, न = नहीं, डीए = देते हो, हे = यह, के = किसके, सिर = सिर पर, डियां = दे, डोह = दोष

यदि आपसे इतना-सा कार्य भी नहीं होता तो आप मेरी बड़ी-बड़ी अभिलाषाओंको कैसे पूर्ण करेंगे ? बार-बार मांगने पर भी आप नहीं देते हैं तो मैं किसको दोष दूँ ?

हिक मंगां दीदार तोहिजो, बी मिठडी गाल सुणाए ।
कांध मूंहजा दिल डेई, मूंसे हित गालाए ॥ ९

हिक = एक, मंगां = मांगती हूं, दीदार = दर्शन, तोहिजो = आपके, बी = दूसरा, मिठडी = मिठी, गाल = बातें, सुणाए = सुनाइए, कांध = हे धनी, मूंहजा = मेरे, दिल = दिल, डेई = देकर, मूंसे = मुझसे, हित =

यहां, गालाए = बातें करो ।

एक तो मैं आपके दर्शन चाहती हूँ, दूसरा आप मुझे अपनी मीठी बात सुनाएँ. हे मेरे धामधनी ! आप मुझसे यहीं पर हृदयपूर्वक बात करें ।

हांणे वड्यूं उमेदूं अगियां, कीं पूरयूं कंने कांध ।
हांणे पेरे लगी मंगां एतरो, पाए गिचीमें पांध ॥ १०

हांणे = अब, बड्यूं = बडी-बडी, उमेदूं = आशाएं, अगियां = आगे, कीं = कैसे, पूर्यूं = पूर्ण, कंने = करोगे, कांध = धनी, हांणे = अब, पेरे = पाउ, लगी = पडकर, मंगा = मांगती, एतरो = इतना, पाए = डालकर, गिचीमें = गलेमें, पांध = कपडा-दामन ।

हे धनी ! मेरी बड़ी-बड़ी अभिलाषाएँ हैं, उन्हें आप कैसे पूर्ण करेंगे ? मैं गलेमें पल्लू डालकर आपके चरणोंमें लग कर इतना ही माँगती हूँ ।

हे गाल आए थोरडी, कीं हेडी बडी केइए ।
आंऊं कडीं न रहां दम तो रे, से बिसरी कीं वेइए ॥ ११

हे = यह, गाल = बात, आए = है, थोरडी = थोडी-सी, कीं = क्यों, हेडी = ऐसी, बडी = बडी, केइए = करती हो, आंऊं = मै, कडीं = कभी, न = नहीं, रहां = रह सकती, दम = पलभर, तो = आपके, रे = बिना, बिसरी = भूल, कीं = कैसे, वेइए = गए ।

यह तो बहुत छोटी-सी बात है इससे इतनी बड़ी क्यों बना रहे हैं. मैं आपके बिना पल मात्रके लिए भी नहीं रह सकती, इस बातको आप कैसे भूल गए हैं ।

मूंके कुछाइए निद्रमें, तूं पाण जागेथो ।
जे बांझाइए मूं वलहा, ततो इसक अचे डो ॥ १२

मूंके = मुझे, कुछाइए = बोलाते हो, निद्रमें = तूं = आप, पांण = स्वयं, जागेथो = जाग्रत हो, जे = जो, बांझाइए = तडपाते, मूं = मुझे, वलहा = प्यारा, त तो = तब तो, इसक = प्रेम में, अचे = आएगा, डो = दोष ।

आप मुझे भ्रमरूपी नींदमें डाल कर यह कहलवा रहे हैं और आप स्वयं जागृत हैं । हे प्रियतम धनी ! यदि आप मुझे इस प्रकार व्याकुल बनाएँगे तो आपका प्रेम दोषपूर्ण माना जाएगा ।

तूं भाइयूं बेठयूं मूं कंने, माधां मूं नजर ।
जे दिल हिंनीजा न्हारिए, त हे विलखेथ्यूं रे वर ॥ १३

तूं = आप, भाइयूं = जानते हो, बेठ्यूं = वैठी है, मूं = मेरे, कंने = पास, माधां = आगे, मूं = मेरी, नजर = दृष्टि के सामने, जे = जो दिल = दिल, हिंनीजा = इनका, न्हारिए = देखिए, त = तब, हे = यह, विलखेथ्यूं = विलखरही है, रे = बिना, वर = प्रियतम के ।

आप जानते हैं कि ब्रह्मात्माएँ मेरे सम्मुख निकट ही बैठीं हैं । इनके हृदयको देखें तो ये अपने स्वामीके बिना व्याकुल हो रहीं हैं ।

हिक लेखें मूं न्हारियो, मूं न्हाए गुन्हेजो पार ।
त रूसी रहे मूंसे वलहो, मूंके करे गुन्हेगार ॥ १४

हिक = एक, लेखें = हिसाब कर, मूं = मैंने, न्हारियो = देखा, मूं = मेरे, न्हाए = नहीं, गुन्हेंजो = गुनाहका, पार = पार, त = तो, रूसी = रूठ, रहे = रहे हो, मूं = मुझ, से = से, वलहा = प्रियतम, मुंके = मूझे, करे = करके, गुन्हेगार = गुन्हेगार ।

एक हिसाबसे मैंने देखा तो पाया कि मेरे अपराधोंका कोई पार नहीं है । हे प्रियतम धनी ! तो क्या मुझे दोषी बनाकर आप मुझसे रूठे रहेंगे ?

अंईं बिचारे न्हारजा, आंहिजे मोंहजा वेंण ।
तांजे असीं बिसर्यां, त पण आंहिजा सेंण ॥ १५

अंईं = आप, विचारे = विचारकर, न्हारजा = देखिए, आंहिजे = आपके, मोंहजा = मुखके, वेण = वचन, तांजे = कदाचित्, असीं = हम, बिसर्यां = भूल भी गये, त पण = फिर भी, आंहिजा = आप, सेंण = मित्र तो हैं ।

हे धनी ! आप अपने मुखारविन्दसे कहे हुए वचनों पर तो विचार कर देखें । कदाचित् हम उन वचनोंको भूल भी जाएँ तथापि हम आपके ही तो सज्जन हैं ।

मूंके इलम डेई पांहिजो, केइए खबरदार ।
से न्हारिम जडे सहूरसे, त कांध आंऊं न गुन्हेगार ॥ १६

मूंके = मुझे, इलम = ज्ञान, डेई = देकर, पांहिजो = अपना, केइए = किया, खबरदार = सावधान, से = वह, न्हारिम = देखा, जडे = जब, सऊरसे = विवेक से, त = तो, कांध = हे धनी, आंऊं = मैं, न = नहीं, गुन्हेगार = दोषी ।

आपने मुझे अपना ज्ञान देकर जागृत किया । उस तारतम ज्ञान द्वारा विचार कर देखती हूँ तो हे प्रियतम धनी ! मैं दोषी नहीं हूँ ।

धनी तो डिंनी निद्रडी, ते बिसर्‌या सभ कीं ।
जीं नचाए तीं नचियूं, कुरो करियूं असीं ॥ १७

धणी = धनी, तो = आपने, डिंनी = दी, निद्रडी = नींद, ते = तभी तो, बिसर्‌या भूल गई, सभ = सब, कीं = कुछ, जीं = जैसे, नचाए = नचाओगे, तीं = वैसे, नचियूं = नाचुंगी, कुरो = क्या, करियूं = करें, असीं = हम ।

हे धनी ! आपने निद्रा दी तभी हम सब कुछ भूल गईं । आपने जैसे नचाया हम वैसे ही नाचतीं रहीं । अब हम इससे अधिक क्या कर सकतीं हैं ।

असां इसक निद्रडी बिसारियो, अची मए हिन रांद ।
इसक तोहिजो डिखारियो, पस मूंहजा कांध ॥ १८

असां = हमारा, इसक = प्रेम, निद्रडी = नींदने, बिसारियूं = भूलादिया, अची = आकर, मय = बीचमें, हिन = इस, रांद = खेल, इसक = प्रेमने, तोहिजो = आपको, डिखारियो = दिखाया, पस = देखिए, मूंहजा = मेरे, कांध = धनी ।

हे मेरे प्रियतम धनी ! देखिए, इस नश्वर खेलमें आने पर इस भ्रमरूपी नींदने हमारे प्रेमको भूला दिया और आपका ही प्रेम दिखा दिया ।

तनडा असांजा तो कंने, पण दिलडा असांजा कित ।
से कीं फिकर न कर्‌यो, के हाल मूंहजो चित ॥ १९

तनडा = शरीर, असांजा = हमारा, तो = अपके, कंने = पास है, पण =

किन्तु, दिलडा = दिल, असांजा = हमारा, कित = कहां है, से = वह, कीं = क्यों, फिकर = चिन्ता, न = नहीं, कर्‌यो = करते, के = कैसी, हाल = दशा, मूंहजो = मेरा, चित = चित्त ।

हमारे तन (परात्मा) आपके चरणोंमें हैं किन्तु हमारे हृदय (चित्त वृत्ति) कहाँ हैं ? इस पर आप क्यों विचार नहीं करते कि हमारे हृदय (चित्त) की क्या दशा हो रही है ?

डुखडा न डिसे आकार, दिलडा डुख पसन ।
से डुख डिसे दिल रांदमें, डुख न बका में तन ॥ २०

डुखडा = दुःख, न = नहीं, डिसे = देखता, आकार = शरीर, दिलडा = दिल, डुख = दुःख, पसन = देखता है, से = वह, डुख = दुःख, डिसे = देखता है, दिल = दिल, रांदमें = खेलमें, डुख = दुःख, न = नहीं है, बकामें = अखण्ड में, तन = शरीर को ।

हमारा तन तो दुःख नहीं देख रहा है, मात्र हृदय ही दुःखका अनुभव कर रहा है। हमारा हृदय इस नश्वर खेलमें दुःख देख रहा है. परमधाममें वहाँके तन (पर-आत्मा) को तो कोई दुःख ही नहीं है ।

दिल असांजा सोंणेमें, से था डुख पसन ।
से पसोथा नजरों, जे गुजरे दिल रूहन ॥ २१

दिल = दिल, असांजा = हमारा, सोंणेमें = स्वप्नमें, से = वह, था = है, डुख = दुःख, पसन = देखता है, से = वह, पसोथा = देखते हो, नजरों = आंखों से, जे = जो, गुजरे = वित रहा है, दिल = दिलमें, रूहन = आत्माओंका ।

हमारा हृदय स्वप्नवत् जगतमें है। वह दुःख देख रहा है। आप अपनी दृष्टिसे देख ही रहे हैं कि ब्रह्मात्माओंके हृदय पर क्या बीत रही है ।

डिंनी असांके निद्रडी, इसक न रई सांजाए ।
आं जागंदे प्यार्‌यूं पांहिज्यूं, तो डिंन्यूं कीं भुलाए ॥ २२

डिंनी = दी, असांके = हमे, निद्रडी = नींद, इसक = प्रेम, न = नहीं, रही = रहा, सांजाए = पहिचान, आं = आपकी, जागंदे = जाग्रत हो,

प्यार्यूं = सखियां, पाहिज्यूं = अपनी, तो = आपने, डिंन्यूं = दिया, कीं = क्यों, भुलाए = भूला ।

आपने हमें ऐसी नींद दी कि हमें प्रेमकी पहचान ही नहीं रही किन्तु आपने स्वयं जागृत होते हुए भी अपनी प्रिय आत्माओंको क्यों भूला दिया ?

डोह न अचे सुतडे, जागंदे मथें डो ।
असीं डुख डिसूं आं डिसंदे, कीं चोंजे आसिक सो ॥ २३

डोह = दोष, न = नहीं, अचे = लगता, सुतडे = सोने वालोका, जागंदे = जाग्रत, मथें = ऊपर, डोह = दोष, असीं = हम, डुख = दुःख, डिसूं देखते हुए, आं = आप, डिसंदे = देखते हो, कीं = कैसे, चोंजे = कहें, आसिक = प्रेमी, सो = तो ।

सोए हुए लोगोंको दोष नहीं लगता है । दोष तो जागृत लोगोंको ही लगता है । आपके देखते हुए (दृष्टि समक्ष) हम दुःखका अनुभव करें तो आप जैसे प्रेमी (आसिक) से क्या कहें ?

से कीं बिचार न कर्‌यो, बडो आंजो इसक ।
मासूक केयां रूहन के, को न भजो असांजी सक ॥ २४

से = उस पर, कीं = क्यों, बिचार = बिचार, न = नहीं, कर्‌यो = करते हो, बडो = बडा, आंजो = आपका, इसक = प्रेम है तो, मासूक = प्रेम, केयां = करके, रूहनके = सखियों को, को = क्यों, न = नहीं, भजो = दूर करते, असांजी = हमारी, सक = शंकाए ।

आपने यह विचार क्यों नहीं किया कि आपका प्रेम बड़ा है. आपने अपनी आत्माओंको प्रियतमा (माशूका) कहा है तो आप हमारी शङ्काओंको क्यों नहीं मिटाते हैं ?

आसिक न्हारे नजरें, मासूक बिठो रोए ।
हेडी कडे उलटी, आसिक से न होए ॥ २५

आसिक = प्रेमीके, न्हारे = देखते, नजरें = आंखों से, मासूक = प्रेमीका, बिठो = बैठी, रोए = रो रोकर, हेडी = ऐसी, कडे = कभी, उलटी = उलटी, आसिकसे = प्रेमीसे, न = नहीं, होए = होता ।

प्रियतम अपने नजरोंसे देखते रहे और प्रियतमा रोती रहे ऐसी उलटी रीति प्रियतमकी ओरसे कभी भी नहीं होती है ।

मूंजा लाड कोड पारणजा, आं सिर सभ मुदार ।
डिए डोह असांके, जे असां सुध न सार ॥ २६

मूंजा = मेरा, लाड = प्यार, कोड = उमंग, पारणजा = पूर्ण करना, आं = आपके, सिर = सिर, सभ = सभी, मुदार = जिम्मेदारी, दिए = दीजिए, डोह = दोष, असांके = हमें, जे = जो, असां = हम, सुध = सुधि, न = नहीं, सार = ज्ञात ।

हमारे लाड़-प्यारकी अभिलाषाओंको पूर्ण करनेका दायित्व आपके ऊपर है किन्तु आप हमें दोष दे रहे हैं । जबकि हमें कोई सुध-सार ही नहीं है ।

मूंके इलमें चयो भली पेरें, कोए न्हाए डोह रूहन ।
केयो थ्यो सभ कांधजो, असीं सभ मंझ इजन ॥ २७

मूंके = मुझे, इलम = ज्ञानने, चयों = कहा, भली = भली, पेरें = भाँति, कोए = कोई, न्हाए = नहीं है, डोह = दोष, रूहन = सखियोंका, केयोथ्यो = किया है, सभ = सभी, कांधजो = धनीका, असीं = हम, सभ = सभी, मंज = बीचमें, इजन = हुकमके ।

तारतम ज्ञानने मुझे भलीभाँति समझा दिया है कि इसमें ब्रह्मात्माओंका कोई दोष नहीं है । धामधनीका ही किया हुआ होता है. हम सभी तो उनकी आज्ञाके अधीन हैं ।

इसक बंदगी या गुणा, से सभ हथ हुकम ।
रांद कारिए निद्रमें, हित केहो डोह असां खसम ॥ २८

इसक = प्रेम, बंदगी = प्रार्थना, या = या, गुणा = दोष, से = वह, सभ = सभी, हथ = हाथ, हुकम = हुकुम, रांद = खेल, कारिए = करते हैं, निद्रमें = नींदमें, हित = यहाँ, केहो = कौन-सा, डोह = दोष, असां = हमारा, खसम = हे धनी ।

प्रेम, प्रार्थना (उपासना) अथवा दोष ये सब आपके आदेशके अधीन हैं ।

हम तो नींदमें ही यह खेल खेल रहीं हैं. हे धनी ! इसमें हमारा क्या दोष है ?

बेसक डिंने इलम, जगाया दिल के ।
इलम न पुजे रूहसी, सभ हथ हुकम जे ॥ २९

बेसक = निःसंदेह, डिंने = देकर, इलम = ज्ञान, जगाया = जाग्रत किया, दिलके = दिलको, इलम = ज्ञान, न = नहीं, पुजे = पहुंचा, रूहसी = आत्मा तक, सभ = सभी, हथ = हाथ है, हुकुमजे = हुकम के ।

आपने सन्देह रहित ज्ञान देकर हमारे हृदयको जागृत किया किन्तु ज्ञान भी आत्मा तक नहीं पहुँचता है । यह सब आपकी ही आज्ञाके अधीन है ।

रूहसी पुजी न सगे, आयो न्हाएमें इलम ।
जा सऊर करियां इलम, त हित जरो न रे हुकम ॥ ३०

रूहसी = आत्मातक, पुजी = पहुंच, न = नहीं, सगे = सका, आयो = आया, न्हाएमें = नश्वर संसारमें, इलम = तारतम ज्ञान, जा = जो, सऊर = विचार, करियां = करूं, इलम = ज्ञान, त = तब, हित = यहां, जरो = जरा भी, न = नहीं, रे = बिना, हुकम = हुकमके ।

इस नश्वर जगतमें आया हुआ तारतम ज्ञान भी आत्मा तक पहुँच नहीं सकता है । यदि तारतम ज्ञान पर विचार करते हैं तो ज्ञात होता है कि आपके आदेशके अतिरिक्त कुछ भी नहीं है ।

जे कीं केयो से हुकमें, से हुकम आं हथ थेओ ।
हिक जरो रे तो हुकमें, आए न कोए बेओ ॥ ३१

जे = जो, कीं = कुछ, केयो = किया, से = वह सब, हुकमें = हुकमने किया, से = वह, हुकम = हुकम, आं = आपके, हथ = हाथमें, थेओ = हुआ, हिक = एक, जरो = जरा भी, रे = बिना, तो = आपके, हुकमें = हुकम, आए = है, न = नहीं, कोए = कोई, बेओ = अन्य ।

यह जो कुछ भी हुआ है वह आपके आदेश (हुक्म) से ही हुआ है और वह आदेश आपके हाथोंमें है. वस्तुतः आपके आदेशके अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं है ।

तो केयो से थेयो, तो केयो थिएथो ।
थींदो से पण तो केयो, तो रे कित न को ॥ ३२

तो = आपने, केयो = किया, से = वह, थेयो = हुआ, तो = आपका, केयो = किया हुआ, थिएथो = होता है, थींदो = होगा, से = वह, पण = भी, तो = आपका, केयो = किया हुआ, तो रे = आपके बिना, कित = कहीं, न = नहीं, को = कोई ।

आपने जो किया है वही हुआ है और आपका किया हुआ ही होता आ रहा है। भविष्यमें भी आपका ही किया हुआ होगा। आपके बिना कहीं भी कुछ भी नहीं है ।

तेहेकीक मूं ईं बुझियो, मूंके बुझाई तो इलम ।
थेयो थिएथो जे थींदो, से हल चल सभ हुकम ॥ ३३

तेहेकीक = निश्चित, मूं = मैंने, ईं = इस प्रकार, बुझियो = समझी, मूंके = मुझे, बुझाई = समझाया, तो = आपके, इलम = तारतम ज्ञानने, थेयो = हुआ, थिएथो = होता है, जे = जो भी, थींदो = होगा, से = वह, हलचल = चलायमान, सभ = सभी, हुकम = हुकमसे ही है

मैंने यह निश्चित समझ लिया है और आपके ज्ञानने भी मुझे यह समझाया है कि जो हुआ है, जो हो रहा है और जो होगा, वह सब हलचल आपकी आज्ञाके अधीन है ।

एहेडो बडो मूं धणी, को न न्हारिए संभारे ।
वेंण सुणाइए वलहा, मूं सामों न्हारे ॥ ३४

एहेडो = ऐसे इतने, बडो = बडे, मूं = मेरे, धणी = धनी, को = क्यों, न = नहीं, न्हारिए = देखते, संभारे = यादकर, वेण = वचन, सुणाइए = सुनाइए, वलहा = प्रियतम, मूं = मेरी, सामों = ओर, न्हारे = देखो

मेरे प्रियतम धनी ! आप कितने महान हैं, तथापि मुझे याद करके मेरी ओर क्यों नहीं देखते हैं ? हे मेरे प्रियतम ! मेरी ओर देख कर मुझे मधुर वचन सुनाइए ।

धणी को न कर्‌यो मूं दिलजी, आंऊं अटकांथी हिन गाल ।
तूं पुजे सभनी गालिएं, आंऊं कीं तरसां हिन हाल ॥ ३५

धणी = स्वामी, को = क्यों, न = नहीं, कर्‌यो = करते, मूं = मेरे, दिलजी = दिलकी, आंऊं = मैं, अटकांथी = अटकरही हूं, हिन = इस, गाल = बात पर, तूं = आपकी, पुजे = पहुंच है, सभनी = सभी, गालिएं = बातोंमें, आंऊं = मैं, कीं = क्यों, तरसां = तरसुं, हिन = इस प्रकार, हाल = दशा ।

हे धनी ! आप मेरे हृदयकी चाहको क्यों पूर्ण नहीं करते हैं ? मैं इसी बातमें उलझी (अटकी) हुई हूँ। आप तो सर्व प्रकारसे समर्थ हैं फिर मैं इस दशामें क्यों व्याकुल हो रही हूँ ?

जे आंऊं मंगां सऊर में, तांजे मंगां बेअकल ।
लाड सभे तो पारण, जे अचे मूंजे दिल ॥ ३६

जे = जो, आंऊं = मैं, मंगा = मागूं, सऊरमें = विचारकर, तांजे = या, मंगा = मागूं, बेअकल = विना सोचे, लाड = प्यार, सभे = सम्पूर्ण, तो = आपको, पारण = पूरा करना है, जे = जो, अचे = आता, मूंजे = मेरे, दिल = दिलमें ।

मैं विचार पूर्वक माँगूँ या बिना विचारे ही माँगूँ किन्तु आप मेरे सभी लाड़को पूर्ण करें जो मेरे हृदयमें उत्पन्न होते हैं ।

दिल चाहे मूं हिकडी, को न पारिए लख गुणी ।
तूं कीं लिके मूंहथी, तूं जेडो मूं धणी ॥ ३७

दिल = दिल, चाहे = चाहता है, मूं = मेरा, हिकडी = एक तो, को = क्यों, न = नहीं, पारिए = पूर्ण करोगे, लख = लाखों, गुणी = गुणा, तूं = आप, कीं = क्यों, लिके = छिपते हो, मूंहथी = मुझसे, तूं = आप, जेडो = जैसे, मूं = मेरी, धणी = स्वामी

भला मेरा हृदय एक चाहना करता हो किन्तु आप अनेक (लाख) प्रकारसे उसकी पूर्ति क्यों नहीं करते हैं ? आप मेरे इतने समर्थ धनी हैं फिर मुझसे क्यों छिपते हैं ?

आंऊं धणियाणी तोहिजी, मूं घर अरस अजीम ।
मूं कोड्यूं उमेदूं बडियूं, तूं तेयां कोड गण्यूं को न डियम ॥ ३८

आंऊं = मैं, धणियाणी = अर्धांगिनी, तोहिजी = आपकी, मूं घर = मेरा घर, अरस = परमधाम, अजीम = श्रेष्ठ है, मूं = मेरी, कोड्यूं = करोडों, उमेदूं = इच्छाएं, बडियूं = बडी-बडी, तूं = आप, तेयां = वहां, कोड = करोडों, गुण्यूं = गुणा, को = क्यों, न = नहीं, डियम = दोगे

मैं आपकी अङ्गना हूँ मेरा घर परमधाम है । मेरे हृदयमें बड़ी-बड़ी करोड़ों इच्छाएँ हैं. उनको आप करोड़ो गुणा अधिक करके क्यों पूर्ण नहीं करते हैं ?

तो भायो हे उमेदूं मगंदयूं, नयूं नयूं दिल धरे ।
हिन जिमी न द्रापद्यूं, आंऊं डींदुस कींय करे ॥ ३९

तो = आपने, भायो = जाना होगा, हे = यह (इन्द्रावती), उमेदूं = इच्छाएं, मगंद्यूं = मांगेगी, नयूं नयूं = नई नई, दिल = दिल, धरे = देकर, हिन = इस, जिमी = धरती, न = नहीं, द्रापद्यूं = अघाती, आंऊं = मै, डींदुस = दूंगा, कींय = कैसे, करे = कर

आप जानते ही हैं कि आपकी यह अङ्गना अपने हृदयमें नई-नई कामनाएँ धारण कर माँगती ही रहेगी. इस नश्वर जगतमें कोई भी कभी तृप्त नहीं हुआ है । (इसलिए आप भी यह विचार करते होंगे कि) मैं इसकी चाहनाको किस प्रकार पूर्ण करूँ ?

हेडो जांणी दिल में, पेरोई ढंके द्वार ।
न कीं सुणाइए गालडी, न कीं डिए दीदार ॥ ४०

हेडो = ऐसा, जांणी = जानकर, दिलमें = दिलमें, पेरोई = पहलेसेही, ढंके = बन्द किया, द्वार = द्वार, न = नहीं, कीं = कुछ, सुणाइए = सुनाते, गालडी = बातें, न = नहीं, कीं = कोई, डिए = देते हो, दीदार = दर्शन

आपने अपने हृदयमें ऐसा सोचकर पहले ही अपने द्वार बन्द कर दिए हैं । इसलिए न अपने मधुर वचन सुना रहे हैं और न ही दर्शन दे रहे हैं ।

ते दर ढंके मूरजो, असां अंखें कंने डिंने पट ।
तो भायों घुरंद्यूं घणी परे, बेठो जांणी बट ॥ ४१

ते = इसलिए, दर = द्वार, ढंके = ढकदिया, मूरजो = मूलसे, असां = हमारे, अंखे = आंखो, कंने = कानों, डिंने = दिया, पट = परदा, तो = आपने, भायों = जाना होगा, घूंरंद्यूं = मांगेगी, घणी परे = अनेक प्रकार, बेठो = बैठ गये, जाणी = जानकर, बट = पासमें ।

इसलिए आपने पहले ही हमारी आँखों तथा कानोंमें आवरण (परदा) डालकर हमारे मूल द्वार बन्द कर दिए हैं । आप जानते ही हैं कि मेरे निकट बैठकर भी यह माँगती ही रहेगी ।

रूहें हिन जिमीय में, द्रापे न के भत ।
ईं जांणी लिके मूंहथी, हियडो केआं सखत ॥ ४२

रूहें = सखियां, हिन = इस, जिमीमें = धरतीमें, द्रापे = तृप्त, न = नहीं होती, के = किसी, भत = प्रकार, ईं = ऐसा, जांणी = जानकर, लिके = छिपे हो, मूंहथी = मेरे से, हियडो = हृदय, केआं = किया, सखत = कठोर ।

ब्रह्मात्माएँ इस नश्वर जगतमें किसी भी प्रकारसे तृप्त नहीं हो सकतीं । ऐसा जान कर आप अपने हृदयको कठोर बनाते हुए मुझसे छिप रहे हैं ।

हे पट डिसी मूं न्हारिम, उमेद न आसा कांए ।
जगाइए ते बखत, मथा डिंने डींह पुजाए ॥ ४३

हे = यह, पट = परदा, डिसी = देखकर, मूं = मैने, न्हारिम = देखा, उमेद = आकांक्षा, न = नहीं, आसा = इच्छाएं, कांए = कोइ भी, जगाइए = जगाया, ते = उस, बखत = समय, मथां = ऊपर, डिंने = दियाहुआ, डींह = दिन, पुजाए = आ गया ।

यह परदा देखकर मैंने विचार किया कि अब कोई आशा या अभिलाषा पूर्ण नहीं होगी । आपने हमें ऐसे समय पर जागृत किया जब घर चलनेके दिन आ गए हैं ।

मूं घर अरस अजीम, नूरजमाल मूं कांध ।
लाड पारण मूंहजा, मूं कारण केई रांद ॥ ४४

मूं घर = मेरा निवास, अरस = परमधाम, अजीम = श्रेष्ठ, नूरजमाल = अक्षरातीत, मूं = मेरे, कांध = धनी, लाड = प्यार, पारण = पूरा करने के लिए, मूंहजा = मेरा, मूं = मेरे, कारण = लिए, केई = बनाया, रांद = खेल ।

मेरा घर दिव्य परमधाम है और अक्षरातीत पूर्णब्रह्म परमात्मा मेरे स्वामी हैं । मेरे लाड़को पूर्ण करनेके लिए यह खेल बनाया है ।

तो इलम चयो लाड पारींदो, तेमें सक न कांए ।
जे जे भतें मूं न्हारियो, इलमें सभे डिंनी पुजाए ॥ ४५

तो = आपके, इलम = ज्ञान, चयो = कहा, लाड = प्यार, पारिंदो = पूर्ण करोगे, तेमें = उसमें, सक = शंका, न = नहीं है, कांए = कोई, जेजे = जैसी जैसी, भते = भाँति, मूं = मैने, न्हारियो = देखा, इलमें = ज्ञानके द्वारा, सभे = सम्पूर्ण, डिंनी = दिया, पुजाए = पूरी की ।

आपके द्वारा दिए हुए तारतम ज्ञानसे ज्ञात हुआ कि आप हमारे सभी लाड़ पूर्ण करेंगे उसमें कोई सन्देह नहीं है । मैंने विभिन्न प्रकारसे देखा है कि इस ज्ञानने सभी कार्योंको पूर्ण किया है ।

पण हित अची इलम अटक्यो, जे कडी न अटके कित ।
मूं न्हारे न्हारे न्हारियो, त अची अटक्यो हित ॥ ४६

पण = परन्तु, हित = यहां, अची = आकार, इलम = ज्ञानभी, अटक्यो = रूकगया, जे = जो, कडी = कभी, न = नहीं, अटके = अट्का (रुका), कित = कहीं भी, मूं = मैं, न्हारे = देखकर, न्हारे = देखकर, न्हारियो = देखा, त = तो, अची = आकर, अटक्यो = रुका, हित = यहांपर ।

परन्तु यहाँ पहुँच कर आपका ज्ञान (तारतम ज्ञान) भी रुक गया । जो कहीं भी नहीं रुकता था । मैंने विभिन्न प्रकारसे देखा कि तारतम ज्ञान भी यहाँ पहुँच कर रुक गया है ।

हित डोह न कोए इलमजो, न कीं डोह बिचार ।
हे घुंडी तोहिजे हुकम जी, सा छुटे न कांधा धार ॥ ४७

हित = यहां, डोह = दोष, न = नहीं, कोए = कोई, इलमजो = इलम ज्ञान, न = न, कीं = कुछ, डोह = दोष, विचार = विचारका, हे = यह, घुंडी = गांठ आंकडी, तोहिजे = आपके, हुकमजी = आदेशकी, सा = वह, छूटे = छूटता, न = नहीं, कांधा = धनीके, धार = सिवाय ।

इसमें तारतम ज्ञानका भी कोई दोष नहीं है और विचार (करने) का भी कोई दोष नहीं है । यह गुत्थी आपके ही आदेशकी है वह आपके बिना कैसे सुलझ सकती है ।

गाल गुझांदर ईं थेई, तूं पांणई जांणे ।
हे गुझ्यूं गाल्यूं तो रे, के के चुआं हांणे ॥ ४८

गाल = बात, गुझांदर = रहस्यमयी, ईं = इस प्रकार, थेई = हुई, तूं = आप, पांणई = आपही, जांणे = जानते हो, हे = यह, गुझ्यूं = गुह्य, गाल्यूं = बातें, तोरे = आपके बिना, केके = किसे, चुआं = कहूं, हांणे = अब ।

ये ऐसी गूढ़ बातें हैं उनको आप स्वयं जानते हैं । अब मैं इन वार्ताओंको आपके बिना किससे कहूँ ?

तूं धणी मूं इसक जो, तूं धणी सऊर इलम ।
तूं धणी वतन रूहजो, हे गुझ केके चुआं खसम ॥ ४९

तूं = आप, धणी = धनी, मूं = मेरे, इसक = प्रेम, जो = के, तूं = आप, धणी = धनी, सऊर = विवेक विचार, इलम = ज्ञानके, तूं = आप, धणी = धनी, वतन = धाम, रूहजो = आत्माके, हे = यह, गुझ = गुह्य, केके = किसे, चुआं = कहूं, खसम = स्वामी ।

आप मेरे प्रेमके भी स्वामी हैं और मेरे विवेक-ज्ञानके भी स्वामी हैं । इतना ही नहीं आत्माओंके मूल घरके भी स्वामी हैं । इसलिए ऐसी गूढ़ बातें मैं किससे कहूँ ?

सिकाए सिकाए मूंहके, को द्रजंदो द्रजंदो डिए ।
लाड मगंद्यूं रांदमें, तो अटके ईं हिए ॥ ५०

सिकाए = तरसा, सिकाए = तरसाकर, मूंहके = मुझे, को = क्यों, द्रजंदो

= डरते, डिए = देते हो, लाड = प्यार, मगंद्यूं = मांगती हूं, रांदमें = खेलमें, तो = इसलिए, अटके = अटक रही हूं, ईं = इस प्रकार, हिए = हृदय से ।

मुझे तड़पा-तड़पाकर ऊपरसे डरते हुए क्यों दे रहे हैं । मैंने इस खेलमें आपका लाड़ माँगा है इसलिए आपका हृदय रुक रहा है । (इसलिए रुक-रुक कर दे रहे हैं)

हिक बडो मूंके अचरज, मूंजा लाड पारीने कींह ।
मूंके जगाए मंगाइए डियणके, मथां पुजाइए डींह ॥ ५१

हिक = एक, बडो = बडा, मूंके = मुझे, अचरज = आश्चर्य लगा, मूंजा = मेरा, लाड = प्यार, पारीने = पूर्ण करोगे, कींह = कैसे, मूंके = मुझे, जगाए = जाग्रत कर, मंगाइए = मंगवाते हो, डियणके = देने के लिए, मथां = ऊपर, पुजाइए = पहुंचाकर, डींह = दिन ।

मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा है कि आप यह लाड़ कैसे पूर्ण करेंगे ? आपने मेरे लाड़को पूर्ण करनेके (देनेके) लिए ही मुझे जागृत कर मुझसे यह मँगवाया है और अब घर चलनेका समय आ गया ।

रांद डिखारिए उमेद के, जगाइए लाड पारण ।
विलखाईए सुणन वेंण के, रूआं दीदार कारण ॥ ५२

रांद = खेल, डिखारिए = दिखाया, उमेदके = इच्छानुसार, जगाइए = जगाया, लाड = प्यार, पारण = पूरा करने को, विलखाइए = तड्पा रहे हो, सुणन सुनने, वेंणके = वचनोंको, रूआं = रोती हूं, दीदार = दर्शन, कारण = के लिए

हमारी अभिलाषाओंको पूर्ण करनेके लिए ही आपने यह खेल दिखाया और हमारे लाड़को पूर्ण करनेके लिए हमें जागृत किया, परन्तु आप अपने मधुर वचनोंको सुनानेके लिए हमें तड़पा रहे हैं और मैं आपके दर्शनके लिए रो रही हूँ ।

कांध उमेदूं बडियूं, मूं दिलमें थो पाइए ।
धणी पांहिजे डोह के, मूं मोंहां थो चाइए ॥ ५३

कांध = स्वामी, उमेदूं = इच्छाएं, बडियूं = बडी-बडी, मूं = मेरे, दिलमें

= दिलमें, थो = हो, पाइए = उत्पन्न करते, धणी = हे पति, पांहिजे = अपने, डोहके = दोषों को, मूं = मेरे, मोंहां = मुखसे, थो = हो, चाइए = कहलवाते

हे प्रियतम ! आप मेरे हृदयमें बड़ी-बड़ी अभिलाषाएँ उत्पन्न करवाते हैं और (उन्हें पूर्ण न कर) अपने दोषोंको मुझसे कहलवाते हैं.

आंऊं पण द्रजंदी, न डियां आंके डो ।
बंग पांहिजो पांणईं, मूं मोंहां चाईए थो ॥ ५४

आंऊं = मैं, पण = भी, द्रजंदी = डरती हूं, न = नहीं, डियां = दूं, आंके = आपको, डो = दोष, बंग = भूल, पांहिजो = अपना, पांणईं = आपही, मूं मोंहां = मेरे मुहसे, चाईए थो = कहलवाते हो ।

मैं भी डरती हूँ कि आपको दोष न दूँ परन्तु आप मेरे मुखसे अपना दोष कहलवाना चाहते हैं ।

तोबा तोबा करियां, जिन भुलां चुकां हांण ।
हल्लां धणी जे हुकमें, जीं सुख भाइए पांण ॥ ५५

तोबा = त्राहि, तोबा = त्राहि, करियां = कतरी हूं, जिन = न, भुलां = भूल, चुकां = चूक, हांण = अब, हल्लां = चलूं, धणीजे = धनीके, हुकमें = आदेशपर, जीं = जिससे, सुख = सुख, भाइए = मानो, पांण = आप

मैं त्राहि-त्राहि कहती हूँ कि अब मुझसे कोई भूल न हो जाए । मैं अपने धनीके आदेशके अधीन चलना चाहती हूँ। जिससे आप सदैव प्रसन्न रहें ।

पेरो हुई गाल कौलजी, थेई थींदी सभ चोयम ।
द्रजां चोंदे अगरी, जीं न अचे दिल पिरम ॥ ५६

पेरो = पहले, हुई = हुई, गाल = बात, कौलजी = वादा, थींदी = होगी, सभ = सभी, चोयम = कहदी, द्रजां = डरती हूं, चोंदे = कहते, अगरी = अधिक, जीं = जिसमें, न = नहीं, अचे = आवे, दिल = दिलमें, पिरम = धनीके ।

पहले तो आपके वचनों (वायदा) की बात थी। आपके कथनानुसार वे पूर्ण हुए हैं और होंगे भी, किन्तु अधिक कहती हुई मैं डरती हूँ। कहीं आपको बुरा न लग जाए।

कौल फैलजी वही वेई, हांणे आई मथें हाल।
हांणे कुछण मुकाबिल, हित हल्ले न अगरी गाल ॥ ५७

कौल = कहनी, फैलजी = रेहनी, वही = वीत, वेई = गई, हांणे = अब, आई = आया, मथें = ऊपर, हाल = आचरण के, हांणे = अब, कुछण = बोलना, मुकाबिल = परस्पर, हित = यहां, हल्ले = चलता, न = नहीं, अगरी = अधिक, गाल = बात।

वचन (कथनी) और कर्म (करनी) का समय बीत गया है। अब मनस्थिति (हाल) को सही दिशा देनेका समय आ गया है. अब मैं आपके सामने कुछ कहना चाहती हूँ किन्तु यहाँ अधिक बात चलती नहीं है।

घणों द्रप भूल चूकजो, ही हकजी खिलवत।
सचो रचे सचसे, भूल न हल्ले हित ॥ ५८

घणो = बहुत, द्रप = डरती, भूल = भूल, चूकजो = चुकका, हि = यह, हकजी = धनीकी, खिलवत = एकान्त बैठक है, सचो = सत्य, रचे = मिलता है, सचसे = सत्य से, भूल = भूल, न = नही, हल्ले = चलता, हित = यहां।

मुझे भूल-चूकका बड़ा भय लगता है क्योंकि यह आपकी ही एकान्तस्थली (मूलमिलावा) है (जहाँ पर मैं हूँ)। सत्य (आत्मा) सत्य (परमात्मा) में ही मिलता है। यहाँ पर कोई भूल (मिथ्या) नहीं चलती।

इलम पांहिजो डेइ करे, मूंके रोसन तो केई।
त झोडो करियां कांधसे, बिच रांदजे बेही ॥ ५९

इलम = ज्ञान, पांहिजो = अपना, डेई = दे, करे = कर, मूंके = मुझे, रोसन = प्रगट, तो = आप, केई = किया, त = तो, झोडो = झगडा,

करियां = करती हूँ, काँधसे = धनीसे, बिच = बीच, रांदमें = खेलमें, बेई = बैठकर ।

आपने अपना तारतम ज्ञान देकर मेरे हृदयको प्रकाशित किया । इसलिए मैं इस नश्वर खेलमें रहकर अपने प्रियतम धनी (आप) से झगड़ा करती हूँ।

तोहीजे इलमें आंऊ सिखई, गिडम वकीली सभन ।
मूंजो इतबार सभनी, आयो तोहिजी रूहन ॥ ६०

तोहिजे = आपके, इलमें = तारतम ज्ञानसे, आंऊं = मैं ने, सिखई = सीख ली, गिडम = ली, वकीली = वकालत, सभन = सभी की, मूंजो = मेरा, इतबार = विश्वास, सभनी = सभी को है, आयो = आया, तोहिजे = आपकी, रूहन = सखियों को ।

आपके ज्ञानसे ही मैं सीखी हूँ और मैंने सबकी ओरसे वकालत करनेका उत्तरदायित्व लिया है । आपकी सभी आत्माओंने मेरे प्रति (मुझमें) विश्वास किया है ।

दावो मूंजो या रूहन जो, सभनी बटां आंऊं ।
आंऊं गुझ जांणां सभ तोहिजी, कीं पेर डिए पांऊं ॥ ६१

दावो = दावा, मूंजो = मेरा, या = या, रूहनजो = सखियोंका, सभनी = सभी, बटां = तरफ(ओर), आंऊं = मैं ही हूँ, आंऊं = मैं, गुझ = छिपी, जांण = जानती हूँ, सभ = सभी बातें, तोहिजी = आपकी, कीं = कैसे, पेर = पीछे, डीए = देते हो, पांऊं = चरण ।

मेरा या अन्य आत्माओंका दावा क्यों न हो किन्तु मैं सभीकी ओरसे वकील हूँ । मैं आपके सभी गूढ़ रहस्योंको जानती हूँ । अब आप क्यों पीछे हट रहे हैं ?

खिलवत जांणां अरसजी, कौल फैल हाल असल ।
तोजी गुझ न रही कां मूंहथी, दावो तो मूं बिच अदल ॥ ६२

खिलवत = एकान्त बैठक, जांणां = जाना, अरसजी = परमधाम, कौल

= केहनी, फैल = आचरण, हाल = रहेनी, असल = मूलसे, तोजी = आपकी, गुझ = छिपी, न = न, रही = रहा, कां = कोई, मूंहथी = मेरे से, दावो = दावा, तो = आपके, मूं = मेरे, बिच = बिचमें, अदल = न्याय होना है ।

परमधाम मूलमिलावेकी कथनी (वचन) करनी (कर्म) तथा रहनी (मनस्थिति) के विषयमें मैं जानती हूँ । आपकी कोई भी गुप्त बात मुझसे छिपी हुई नहीं है इसलिए यह दावा तो मूलतः आप और मेरे बीच न्यायका है ।

तूं सचो तूं गाल्यूं सच्यूं, अने सचो तो हल्लण ।
मूं तो दावो सरे सचजो, झल्यम सचो दावन ॥ ६३

तूं = आप, सचो = सच्चे हो, तूं = आपकी, गाल्यूं = बातें करो, सच्यूं = सच्चा, तो = आपका, हल्लण = चालचलन, मूं = मेरे और, तो = आपके, दावो = दावा भी, सरे = सामने है, सचजो = सच्चे का, झल्यम = पकडा है, सचो = सच्चा, दावन = दामन ।

आप सच्चे हैं आपकी बातें सच्ची हैं और आपका व्यवहार भी सच्चा है । मेरे और आपका दावा भी सत्यन्यायके लिए है और मैंने सच्चे प्रियतम (आप)का ही पल्लु पकड़ा है ।

तूं सचा सच गालाइज, सच बोलाइज मूं ।
सच दावो सच साहेद, सच जांणे सभनी सचा तूं ॥ ६४

तूं = आप, सचा = सत्य हो, सच = सत्य, गालाइज = बाते करो, सच = सत्य ही, बोलाईज = बुलवाओ, मूं = मुझसे, सच = सच, दावो = दावा, सच = सत्य, साहेद = साक्षी, सच = सत्य, जांणे = जानते हो, सभनी = सभी की, सचा = सत्य, तूं = आप ही हो ।

आप सच्चे हैं, आपकी बातें सच्ची हैं और मुझसे भी आप सत्य ही बुलवा रहे हैं । दावा भी सच्चा है, साक्षी भी सत्य है और सभी जानते हैं कि आप सब प्रकारसे सत्य हैं ।

हिन न्हाएके केइए सच, जे हित आया सचा पांण ।
मूंसे सच को न करिए, मूंजा सचडा सेण सुजांण ॥ ६५

हिन = इस, न्हाएके = नश्वर संसारको, केईए = किया, सच = अखंड, जे = जो, हित = यहां, आया = आये, सचा = सत्य, पांण = स्वयं आप, मूंसे = मुझसे, सच = सत्य, को = क्यों, न = नहीं, करिए = करते, मूंजा = मेरे, सचडा = सत्य, सेण = मित्र, सुजांण = सर्वज्ञ ।

इस नश्वर जगतको भी आपने अखण्ड (सत्य) कर दिया है । क्योंकि हम सत्य आत्माएँ यहाँ पर आई हैं । हे मेरे सत्य एवं सर्वज्ञ प्रियतम धनी ! आप मेरे साथ सत्य न्याय क्यों नहीं कर रहे हैं ?

जोर असांसे को करिए, जडे आई गाल सरे ।
सेई सचो अमीन, जे सची गाल करे ॥ ६६

जोर = जबरदस्ती, असांसे = हमारे साथ, को = क्यों, करिये = करते हो, जडे = जब, आई = आई, गाल = बात, सरे = सामने, सेई = वही, सचो = सच्चा, अमीन = सिरदार, जे = जो, सची = सच्ची, गाल = बात, करे = करता है ।

जब न्यायकी बात सामने आ गई तो मुझसे जोर जबरदस्ती क्यों कर रहे हैं ? सच्चा शिरोमणि (न्यायाधीश) वही है जो सत्य बात करता है ।

पांण चाइए नालो हक, बेओ तो नाम रेहेमान ।
आंऊं मंगां हक पडूतर, मूके डे मेहेरबान ॥ ६७

पांण = आप अपना, चाईए = कहलाते हो, नालो = नाम, हक = सत्य, बेओ = दूसरा, तो = आपका, नाम = नाम, रेहेमान = कृपालु है, आंऊं = मैं, मंगा = मांगती, हक = सत्य, पडूतर = जवाब, मूंके = मुझे, डे = दो, मेहेरबान = दया सागर ।

आप तो नामसे ही सत्य कहलाते हैं, आपका दूसरा नाम दयालु भी है । हे कृपालु धामधनी ! मैं आपसे सत्य उत्तर माँग रही हूँ, कृपया सत्य उत्तर दें ।

सचा सचो मूके रसूल, मथें सच अदल ।
मूं सचो दावो दोससे, सचडाथी मुकाबिल ॥ ६८

सचा = सच्चे हो, सचो = सच्चे, मूंके = भेजा, रसूल = संदेशवाहक को, मथें = ऊपर, सच = सत्य, अदल = न्याय, मूं = मेरा, सचो = सच्चा, दावो = दावा, दोससे = मित्रसे, सचडाथी = सच्चा हो, मुकाबिल = सामने हो जाइए ।

आपने सत्य न्यायके लिए अपने सच्चे सन्देश वाहकको भेजा. मेरा दावा भी एक सच्चे प्रेमी (प्रियतम) से है इसलिए आप सत्यके सामने आ जाएँ ।

तेहेकीक न्या असांहिजो, डोह आयो मथें कांध ।
पण तोरोथ्यो तो हथमें, ते मूंजो हल्ले न मए रांद ॥ ६९

तेहेकीक = निश्चित, न्या = न्याय, असांहिजो = हमारा, डोह = दोष, आयो = आया, मथें = ऊपर, कांध = स्वामी के, पण = किन्तु, तोरो = हुकुमत सत्ता, थ्यो = हुआ, तो = आपके, हथमें = हाथमें, ते = इसलिए, मूंजो = मेरा, हल्ले = चलता, न = नहीं, मय = बिचमें, रांद = खेलके ।

हमारा न्याय तो निश्चय ही यही है कि दोष आपके ऊपर ही आता है । परन्तु सम्पूर्ण सत्ता आपके हाथमें है इसलिए इस खेलमें मेरा कुछ नहीं चलता है ।

सरो सच साहेबजो, हित सचो हल्लणो हक ।
हे कूडा काजी रांदमें, भाइए करियां हिन माफक ॥ ७०

सरो = न्यायालय, सच = सांच, साहेबजो = मालिकका, हित = यहांपर, सचो = सांचा, हल्लणो = चलना है, हक = प्रीतम, हे = यह, कूडा = झूठे, काजी = न्याय करता है, रांदमें = खेलमें, भाइए = जानो, करियां = करूं, हिन = इनके, माफक = अनुसार ।

यह तो सत्य परमात्माका न्यायालय है इसलिए यहाँ पर सत्य ही चलता है । आप यह सोचते (जानते) हैं कि इस मिथ्या जगतमें झूठे न्यायाधीशोंकी भाँति मैं भी यहींके अनुसार मिथ्या न्याय करूँ ।

एहेडी हिन अदालत, आंऊं करण कीं डियां ।
हे दावो तो मूं बिच जो, सचडो मूंजो मियां ॥ ७१

एहेडी = ऐसा, हिन = इन, अदालत = न्यायालय, आंऊं = मैं, करण = करने, कीं = कैसे, डियां = देऊं, हे दावो = यह दावा, तो = आपका, मूं = मेरे, बिचजो = बीचका है, सचडो = सांचे, मूंजो = मेरे, मियां = धनीजी ।

मैं इस न्यायालयमें ऐसा होने कैसे दूँगी । आप मेरे सच्चे स्वामी हैं और यह दावा मेरे और आपके बीच है ।

हांणे दाई मूदइ बे जणां, जा मुकाबिल न हून ।
तूं बेठो मथें तोरो गिंनी, हे बेठ्यूं हिकल्यूं रून ॥ ७२

हांणे = अब, दाई = बादी, मुदई = प्रतिवादी, बे जणां = दोनों जनें, जा = जहाँ तक, मुकाबिल = सामने, न = नहीं, हून = होवे, तूं = आप, बेठो = बैठो, मथें = ऊपर, तोरो = हुकूमत, गिंनी = लेकर, हे = यह(सखी), बेठ्यूं = बैठी, हिकल्यूं = अकेली, रून = रोती हूं ।

अब वादी और प्रतिवादी दोनों जने जब तक सामने न हों, तब तक कैसे न्याय होगा ? आप तो अपनी सत्ताके साथ परमधाममें बैठे हैं और आपकी यह अङ्गना अकेली बैठी रो रही है ।

सिकां सडां दीदारके, बी सुणन के गाल ।
मू वजूद नासूतमें, तूं धणी बका नूरजमाल ॥ ७३

सिकां = कुंढूं, सडां = पुकारूं, दीदारके = दर्शनको, बी = दूसरी, सुणन = सुनने, के = को, गाल = बातें, मूं = मेरा, वजूद = शरीर, नासूतमें = मृत्युलोकके बीचमें है, तूं = आप, धणी = प्रीतम, बका = अखण्ड हो, नूरजमाल = अक्षरातीत धनी ।

मैं आपके दर्शनोंके लिए एवं मीठी बातें सुननेके लिए व्याकुल हूँ । मेरा तन तो इस नश्वर जगतमें है और आप स्वयं परमधाममें बैठे हुए हैं ।

भगो पण तूं न छुटे, मंगां हक नियाय ।
सरो घुरे सच सभनी, या गरीब या पातसाह ॥ ७४

भगो = भागते हुए, पण = भी, तूं = तुम, न = नहीं, छुटे = बचोगे, मंगां = माँगती हूँ, हक = सांच, नियाय = इन्साफ, सरो = न्याय, घुरे = मांगती, सच = सांच, सभनी = सबका, या = या, गरीब = निर्धन, या पातसाह = या बादशाह हो ।

आप भाग कर भी मुझसे नहीं छूटेंगे । मैं सच्चा न्याय माँगती हूँ । गरीब हो या बादशाह हो न्याय तो सभी माँगते हैं ।

सरे सच न्हारजे, हे जो सरो सुभान ।
भोणें भजंदो मूंहथी, पांण चाइए रेहेमान ॥ ७५

सरे = न्याय, सच = सच्चा, न्हारजे = देखनी चाहिए, हे जो = यह जो, सरो = न्याय करता, सुभान = धनी, भोणें = फिरते हो, भजंदो = भागते, मूंहथी = मेरेसे, पांण = आप, चाइए = कहलाते हो, रेहेमान = दयाके सागर ।

न्यायको सच्चाईसे देखना चाहिए, आप तो सच्चे न्यायाधीश हैं. आप तो दयाके सागर कहला कर मुझसे भागते फिरते हैं ।

मूं इलम खटाई तोहिजे, से भाइयां तोहिजा आसान ।
तोके बंधो मूं रांदमें, कीं छुटे भगो सुभान ॥ ७६

मूं = मेरेको, इलम = ज्ञानने, खटाई = जीताया, तोहिजे = आपके, से भाइयां = सो जानती, तोहिजा = आपका, आसान = अहसान, तोके = आपको, बंधो = बाँध लिया, मूं = मैंने, रांदमें = खेलमें, कीं छुटे = कैसे छुटते हो, भगो = भागनेसे, सुभान = प्रिय प्रीतम ।

आपके द्वारा दिए गए तारतम ज्ञानने ही मुझे जीताया है, इसमें मैं आपका उपकार मानती हूँ । इसीसे मैंने इस खेलमें आपको बाँध रखा है । हे धनी! अब आप भागकर कैसे छूट पाएँगे ?

आंऊं झल्ले ऊभी नियाके, हल्लण न ड्यां अहक ।
मूं कंने जोर सरे इलमजो, मूं तोके खट्यो बेसक ॥ ७७

आंऊं = मैं, झल्ले = पकडके, उभी = खडी, नियाके = इन्साफको, हल्लण = चलने, न = नहीं, डियां = देऊंगी, अहक = असत्य, मूं कंने = मेरे पास, जोर = ताकत, सरे = सांचे, इलमजो = ज्ञानकी, मूं = मैंने, तोके = आपके, खट्यो = जीत लिया, बेसक = निःसन्देह ।

मैं न्यायको पकड़ कर खड़ी हूँ, असत्यको चलने नहीं दूँगी । मेरे पास तारतम ज्ञान एवं सच्चे न्यायकी शक्ति है । (मुझे विश्वास है कि) मैंने निश्चय ही आपको जीत लिया है ।

जे नियां सामों न्हारिए, त पट न रखे दम ।
त हक के ईं न्हारजे, हल्लाए हक हुकम ॥ ७८

जे = जो, निया = इन्साफके, सांम = सामने, न्हारिए = देखिए, त = तो, पट = परदा, न = नहीं, रखे = राखे, दम = क्षण मात्र, त = तब जो, हक = सांच, के ईं = की तरफ, न्हारजे = देखिए तो, हल्लाए = चलता है, हक = प्रीतमका, हुकम = आदेश ।

यदि न्यायकी दृष्टिसे देखते हैं तो आपको मुझसे क्षणमात्रके लिए भी परदा नहीं रखना चाहिए । यदि सच्चाईकी ओर देखते हैं तो सर्वत्र आपका ही आदेश चलता है ।

सरो तोरो होए अदल, निया थिए तित ।
हे गाल्यूं गुझांदर अरसज्यूं, कियां कढां गुहाई हित ॥ ७९

सरो = न्यायालय, तोरो = कानूनसे न्याय, होए = होवे, अदल = सांच, निया = न्याय, थिए = होती है, तित = तहाँ, हे गाल्यूं = यह बातें, गुझादर = छिपी, अरसज्यूं = परमधामकी हैं, कियां = किसको, कढां = निकालूं, गुहाई = साक्षी देनेवाला, हित = यहां ।

जहाँ पर नियमके अनुरूप न्याय होता है, वहीं सच्चा न्याय हो सकता है । ये तो परमधामके गूढ़ रहस्य हैं (जिसके लिए मैं लड़ रही हूँ), मैं यहाँ पर कहाँसे साक्षी निकाल लूँ ?

हित साहेद तूंहीं तोहिजो, खिलवतमें न बेओ ।
जे बंग होए मूंहजो, से मूंजे सिर डेओ ॥ ८०

हित = यहां (धाममें), साहेद = साक्षी देनेवाले, तूं हीं = आपही हो, तोहिजो = आपके, खिलवतमें = एकांतवासमें, न = नहीं, बेओ = दूसरा, जे बंग = जो दोष, होए = होवे, मूंहजो = मेरा, से = वह, मूंजे = मेरे, सिर = ऊपर, डेओ = देओ ।

यहाँ तो आप ही अपने साक्षी हैं, क्योंकि मूल मिलावेमें दूसरा कोई है नहीं । यदि मेरी कोई भूल हो तो उसे मेरे सिर पर डाल दें ।

झोडो करियां कांध से, जे तो झोडाई ।
तूं दाई तूं मुदई, हित तूंहीं गुहाई ॥ ८१

झोडो = झगडा, करियां = करती हूं, कांधसे = धनीसे, जे = जो, तो = आपने ही, झोडाई = झगडा कराया, तूं = आप, दाई = वादी, तूं = आप ही हो, मुदई = प्रतिवादी हो, हित = यहां, तूंहीं = आप ही हो, गुहाई- साक्षी भी ।

मैं अपने धनीसे झगड़ा करती हूँ तो वह भी आप ही करवाते है । वस्तुतः यहाँ पर वादी, प्रतिवादी अथवा साक्षी भी आप ही हैं ।

भोंणें लिकंदो मूंहथी, आए निया गाल घणी ।
लाड कोड मंगां तो कंने, अच मुकाबिल मूं धणी ॥ ८२

भोंडें = फिरते हो, लिकंरो = छुपते, मूंहथी = मेरेसे, आए = आई, निया = न्याय की, गाल = बात, घणी = अनेक, लाड = प्यार, कोड- हर्ष, मंगा = मांगती, तो = आप, कंने = से, अच = आ, मुकाबिल = सामने, मूं- मेरे, धणी = हे स्वामी ।

जब न्यायकी विशेष बात सामने आई तो आप मुझसे छिपते हुए फिर रहे हैं. मैं आपसे प्रेमपूर्वक लाड़ माँग रही हूँ, हे मेरे धनी ! मेरे सम्मुख आइए।

तांजे मूकाबिल न थिए, मूं थी छूटे न कीं ।
पांण वतन बिंनीजो हिकडो, तूं मूंहजो पिरी ॥ ८३

तांजे = कदाचित्, मुकाबिल = सामने, न = नहीं, थिए = होते हो, मूं

= मुझ, थी = से, छुटे = छुट, न = नहीं सकोगे, कीं = किसी तरह (क्योंकि), पांण = अपना, वतन = घर, बिंनीजो = दोनोंका, हिकडो = एक ही है, तूं = आप, मूहजो = मेरे, पिरी = प्रियतम ।

यदि आप मेरे सम्मुख नहीं आते हैं तो भी मुझसे किसी भी प्रकार छूट नहीं पाएँगे । क्योंकि हम दोनोंका घर तो एक ही है और आप मेरे प्रियतम हैं ।

तूं सचो धणी मूं सिर, तोके पुजां मय रांद ।
लाड पाराइयां पांहिजा, तूं मूं सिर सचो कांध ॥ ८४

तूं = आप, सचो = सच्चे, धणी = प्रीतम, मूं = मेरे हैं, सिर = ऊपर, तोके = आपको, पुजां = पहुंची, मय = बीच, रांद = खेल, लाड = प्यार, पाराईयां = पूरा करूंगी, पांहिजा = अपना, तूं = आप, मूं = मेरे, सिर = सिरपर, सचो = सच्चे, कांध = धनी हैं

मेरे ऊपर सच्चे धनी (आप) की छत्रछाया है, इसीलिए इस खेलमें भी मैं आप तक पहुँच सकी । मैं यहीं पर अपने लाड़ पूर्ण करूँगी क्योंकि मेरे ऊपर आप जैसे धनीकी छत्रछाया है ।

आंऊं धणीयांणी तोहिजी, डे तूं मूजी रे अंग ।
मूं मुएं पुठी जे डिए, हे केडी निसबत संग ॥ ८५

आंऊं = मैं, धणीयाणी = अंगना, तोहिजी = आपकी, डे = दीजिए, तूं = आप, मूं = मूं, जीरे = जीते जी, अंग = शरीरमें, मूं = मेरे, मुंए = मृत्यु के, पुठी = बाद, जे = जो, डिए = दोगे तो, हे = यह, कडी = कैसा, निसबत = संबंध, संग = साथ ।

मैं आपकी अङ्गना हूँ इसलिए मेरे जीवित रहते हुए ही मुझे अपना अङ्ग दें (मुझे स्वीकार करें) । यदि मृत्युके पश्चात् आपने मुझे स्वीकारा तो यह हमारा कैसा सम्बन्ध माना जाएगा ?

लाड कोड सभे त परे, जे मूंसे गडजे हित ।
बडो सुख थिए साथके, मंगां जांणी निसबत ॥ ८६

लाड = प्यार, कोड = हर्ष, सभे = सम्पूर्ण, त = तो, परे = पूर्ण हो, जे = जो, मूंसे = मुझ से, गडजे = मिलो, हित = यहां, बडो = बडा,

सुख = आनन्द, थिए = होगा, साथके = सुन्दरसाथको, मंगा = मांगती हूं, जाणी = जानकर, निसबत = सम्बन्ध ।

आप मुझे यहीं मिलेंगे तभी मेरे लाड़-प्यार पूर्ण हो जाएँगे । इससे सभी ब्रह्मात्माओंको अपार हर्ष होगा । इसीलिए मैं अपना सम्बन्ध जानकर आपसे यह माँगती हूँ ।

सची सांजाए तूं करिए, समरथ तूं सुजाण ।
संग जांणी करियां लाडडा, डिंने छुटे मेहेरबान ॥ ८७

सची = सच्ची, सांजाए = पहचान, तूं = आप, करिए = करते हो, समरथ = सर्वशक्तिमान, तूं = आप, सुजाण = जानकार हो, संग = सन्बन्ध, जांणी = जानकर, करियां = करती हूं, लाडडा = प्यार, डिने = देकर ही, छूटे = छूटोगे, मेहेरबान = दया के सागर ।

आपने ही मुझे सच्ची पहचान करवाई है, आप ही प्रवीण तथा समर्थ स्वामी हैं । इसी सम्बन्धको जान कर मैं आपसे लाड़ माँग रही हूँ । हे दयालु ! अब तो इसे दे कर ही छूट सकेंगे ।

तूं मेहेबूब लाडो कांध मूं, चौडे तबके सुई निसबत ।
हांणे लिकेथो के गालके, लाड जाहेर मंगे महामत ॥ ८८

तूं = आप, मेहेबूब = प्रियतम, लाडो = प्यार, कांध = धनी, मूं = मेरा, चौडे = चौदह, तबके = लोकने, सुई = सुना, निसबत = संबंध, हांणे = अब, लिकेथो = छूपते हो, के = किस, गालके = बात को, लाड = प्यार, जाहेर = खुल्ला, मंगे = मांगती है, महामत- इन्द्रावती सखी ।

आप मेरे अत्यन्त प्रिय स्वामी हैं । चौदह लोकोंमें सभीने हमारे इस सम्बन्धको सुना है । अब आप किस बातके लिए छिप रहे हैं ? महामति आपसे प्रत्यक्ष लाड़-प्यार माँग रही है ।

मूं दुलहिन के जाहेर तो केई, मूं दुलहा जाहेर तूं थेयो ।
पांहिज्यूं रूहें जाहेर तो केयूं, तो रे आए न को बेओ ॥ ८९

मूं = मुझ, दुलहिनके = अंगना को, जाहेर = जाहेर, तो = अपने, केई = किया, मूं = मेरा, दुलहा = प्रियतम, जाहेर = जाहेर में तूं = आप,

थेओ = हुए, पांहिज्यूं = अपनी, रूहें- आत्माओंको भी, जाहेर = जाहेर, तो = आपने ही, केयूं = किया, तोरे = आपके बिना, आए = है, न = नही, को = कोई, बेओ = दूसरा ।

आपने मुझे अपनी अङ्गनाके रूपमें प्रकट किया है और आप मेरे प्रियतम धनीके रूपमें प्रकट हुए हैं. आपने सभी आत्माओंको भी (अङ्गनाके रूपमें) प्रकट किया है । अब आपके अतिरिक्त हमारे लिए अन्य कोई नहीं है ।

तूं लज करिए केहजी, या अरस तांजे हित ।
तो निसबत असां से, बेओ कोए न पसां कित ॥ ९०

तूं = आप, लज = लज्जा, करिए = करता है, केहजी = किसका, या = यह, अरस = परमधाम, तांजे = कदाचित्, हित = यहां, तो = आपका, निसबत = सम्बन्ध, असां से = हमारे से, बोओ = दूसरा, कोए = कोई, पसां = दिखाई देता है, कित = कहिं भी ।

परमधाममें या इस खेलमें आप किसका सङ्कोच (लज्जा) कर रहे हैं, आपका सम्बन्ध तो हमारे साथ है । मुझे दूसरा तो कोई दिखाई नहीं दे रहा है ।

आंईं चोंदा तूं कीं घुरे, हिन न्हाएमें लाड ।
आंऊं त घुरां तो लगाई, हिनमें हुकमें डे स्वाड ॥ ९१

आंईं = आप, चोंदा = कहोगे, तूं = तुम, कीं = क्यों, घुरे = मागती है, हिन = यह, न्हाएमें = जगतमें, लाड = प्यार, आंऊं त = मैं तो, घुरा = मांगती हुँ, तो = आपके, लगाई = लगानेसे (मंगवानेसे), हिनमें = इस मायामें, हुकमें = हुकुम , डे = देगा, स्वाड = स्वाद ।

आप कहेंगे कि तू इस नश्वर जगतमें लाड़ क्यों माँग रही है । आपने अन्य आत्माओंको भी मेरे साथ जोड़ (लगा) दिया है इसलिए मैं माँग रही हूँ । अब आप अपने आदेशसे आनन्द प्रदान करें ।

असीं आयासीं रांदमें, त लाड मंगूं मय हिंन ।
असीं कीं कीं डिसूं हिनके, आंईं इंनी पसेजा जिंन ॥ ९२

असीं = हम, आयासीं = आए हैं, रांदमें = खेलमें, त = तब, लाड =

प्यार, मंगूं = मागूं, मय = बिचमें, हिंन = मायामें, असीं = हमने, कीं कीं = कुछ कुछ, डिसूं = देखा, हिनके = मायाके(खेल), आंईं = आप, इंनी = इसको(मायाको) पसेजा = देखो, जिंन = मत ।

हम इस खेलमें आईं हैं इसलिए खेलमें ही आपसे लाड़-प्यार माँगतीं हैं । हमने इस (खेल) को थोड़ा-थोड़ा देखा (महत्त्व दिया) है किन्तु आप इसे देखें नहीं (महत्त्व न दें) ।

आंईं लज कंदा इनजी, त आं पण लगी ए ।
आंके पण ए न छुटी, गिंनी वेईं असां के जे ॥ ९३

आंईं = आप, लज = मर्यादा, कंदा = करते हो, इनजी = इनकी, त = तो, आं = आप, पण = भी, लगी = लिपटी है, ए = यह, आंके = आपको, पण = भी, ए = यह, न = नहीं, छूटी = छूटी तो, गिंनी = ले, बेईं = गईं, अंसांके = हमें, जे = जो ।

आप इस मायासे सङ्कोच (लज्जा) करते हैं, तो क्या आपको भी यह लग गई है ? क्या यह माया आपसे भी नहीं छूटी है जो हमको खींच कर ले गई है ।

हांणे हितर्यूं गाल्यूं को करयो, को झोडो वधार्यो ।
हे झोडो सभे त चुके, जे असांजा लाड पार्यो ॥ ९४

हांणे - अब, हितर्यूं - इतनी, गाल्यूं - बातें, को - किसलिए, कर्यो = करते हो, को = क्यों, झोडो = झगडा, वधार्यो = बढाते हो, हे = यह, झोडो = झगडा, सभे = पूर्ण रूपसे, त = तो, चुके = निपटे, जे = जो, असांजा = हमारा, लाड = प्यार, पार्यो = पूर्ण करोगे ।

अब आप इतनी बातें क्यों कर रहे हैं, व्यर्थमें झगड़ा क्यों बढ़ा रहे हैं ? यह झगड़ा तो तभी समाप्त हो जाएगा जब आप हमारा लाड़ पूर्ण करेंगे ।

तूं कितेईं भगो न छूटे, अरसमें मूं मांध ।
लाड पाराइयां पांहिजा, पुजी पल्लो पांध ॥ ९५

तूं = आप, कित्तेईं = कहीं भी, भगो = भागने से, न = नहीं, छूटे = छूटोगे, अरसमें = परमधाममें, मूं = मेरे, मांध = आगे, लाड = प्यार,

पाराईयां = पूर्ण कराती हूं, पांहिजा = अपना, पुजी = पकड के, पल्लो = पल्ला, पांध = कपडेका ।

परमधाममें तो आप किसी भी प्रकारसे मेरे आगेसे नहीं छूट पाएँगे । क्योंकि मैं आपका पल्लु पकड़ कर भी अपने लाड़ पूर्ण कर लूँगी ।

अंईं कितेईं छुटी न सगे, आंऊं किएं न छडियां आं ।
महामत चोए मूं दुलहा, पार सघरा लाड असां ॥ ९६

अंईं = आप, कितेईं = कहीं भी, छूटी = छूट, न = नहीं, सगे = सकोगे, आंऊं = मैं, किए = किसी तरह, न = नहीं, छडियां = छोडूंगी, आं = आपको, महामत = महामति, चोए = कहते है, मूं = मेरे, दुलाहा = स्वामी, पार = पूरा करो, सघरा = सम्पूर्ण, लाड = प्यार, असां = हमारा ।

आप कहीं भी छूट नहीं सकते, मैं किसी भी प्रकार आपको नहीं छोडूँगी । महामति कहते हैं, हे मेरे प्रियतम धनी ! आप हमारे सभी लाड़ पूर्ण कीजिए.

प्रकरण ७ चौपाई ३४१

बाब जाहेर थियणजा

रूहअल्ला डिंन्यूं निसानियूं, जे लिख्यूं मय फुरमान ।
से सभ मिडाए दाखला, करे डिंनाऊं पेहेचान ॥ १

रूहअल्ला = श्री देवचन्द्रजी महाराज, डिंन्यूं = दिया, निसानियूं = चिन्ह, जे = जो, लिख्यूं = लिखा, मय = में, फुरमान = संदेश के, से = वह, सभ = सभी, मिडाए = मिलाए, दाखला = उहाहरण, करे = करा, डिनाऊं = दी, पहेचान = जानकारी ।

श्री श्यामावतार सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीने कुरान आदि धर्म ग्रन्थोंमें जो सङ्केत बताए हैं उन सबको उदाहरण सहित मिलाकर हमें पहचान करवा दी है ।

नतां केर रांद केडी आए, हे रूहें को जांणे ।
डियण असांके सुखडा, तो उपाइए पांणे ॥ २

नतां = नहीं तो, केर = कौन, रांद = खेल, केडी = कैसा, आए = है, हे = यह, रूहें = सखियां, को = क्या, जांणे = जाने, डियण = देने,

असांके = हमें, सुखडा = आनन्द, तो = आपने, उपाइए = उत्पन्न कराया, पांणे = आपही ।

अन्यथा ब्रह्मात्माएँ कैसे जानतीं कि यह खेल क्या है और कैसा है । वस्तुतः हम ब्रह्मात्माओंको सुखका अनुभव करवानेके लिए ही स्वयं श्री राजजीने इसे उत्पन्न किया है ।

न कीं जाणूं रांद के, आं दिल उपाई पांण ।
डियण असांके सुखडा, हे दिलमें आइम जांण ॥ ३

नकीं = न कुछ, जाणूं = जानती, रांद के = खेलको, आं = आपने, दिल = दिलमें = उपाई = उत्पन्न कराई, पांण = आप ही, डियन = देने, आसांके = हमें, सुखडा = सुख, हे = यह, दिलमें = दिलमें, आइम = है, जांण = ज्ञात ।

हम तो इस खेलको जानतीं ही नहीं थीं । आपने ही इसे हमारे हृदयमें उत्पन्न किया है । हमें सुख प्रदान करनेके लिए ही आपके हृदयमें (खेल दिखानेका) यह विचार आया है ।

हे जा हित रांदडी, केइयां असां कारण ।
त असांके कीं पसाइए दुखडा, असीं आयासीं न्हारण ॥ ४

हे = यह, जा = जो, हित = यहां, रांदडी = खेल, केइयां = किया, असां = हमारे, कारण = लिए, त = तो, असांके = हमें, कीं = कैसे, पसाईए = देखाते हो, डुखडा = दुःख, असीं = हम, आयासीं = आये है, न्हारण = देखनेको ।

यदि यह खेल हमारे लिए बनाया है और हम इसे देखनेके लिए आईं हैं तो फिर हमें दुःख ही क्यों दिखा रहे हैं ?

केयांऊं बडी रांदडी, कागर मूक्यो कीं हित ।
डियण साहेदी सभनी, लिख्या लखें भत ॥ ५

केयांऊं = करके, बडी = बडा, रांदडी = खेल, कागर = (धर्मग्रन्थ) पत्र, मूक्यो = भेजे, कीं = क्यों, हित = यहां, डियण = देने, साहेदी = साक्षी,

सभनी = सब की, लिख्या = लिखा, लखें = अनेक, भत = प्रकार ।

इतना बड़ा खेल बनाकर यहाँ पर (हमारे प्रकट होनेके सन्देशके रूपमें) विभिन्न शास्त्रोंको क्यों भेजा । हम सभी ब्रह्मात्माओंको साक्षी देनेके लिए आपने लाखों प्रकारसे (सभी धर्मग्रन्थोंमें) लिख भेजा है ।

पांण केयां को पधरो, उपटे बका दर ।
मूंकियां रूह अरसजी, डेई संडेहो कुंजी कागर ॥ ६

पांण = आपने, केया = किया, को = क्यों, पधरो = जाहेर, उपटे = खोलके, बका = अखण्ड, दर = द्वार, मूंकिया = भेजी, रूह = श्यामाजी, अरसजी = परमधामकी, डेई = देकर, संडेहो = संदेश, कुंजी = तारतम, कागर = पत्र (धर्मग्रन्थ) ।

आपने परमधामके द्वार खोल कर स्वयंको क्यों प्रकट किया ? परमधामकी विशेष आत्मा श्री श्यामाजीको भी आपने ही परमधामका सन्देश तथा तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी देकर भेजा है ।

मांधां जणाया सभ के, डियण के यकीन ।
इंदो रब आलमजो, सभ कंदो हिक दीन ॥ ७

माधां = पहलेसे ही, जणाया = बताया, सभ के = सबको, डीयण के = देनेको, यकीन = विश्वास, इंदो = आएगा, रब = परमात्मा, आलम जो = विश्वका, सभ = सभी, कंदो = करेगा, हिक = एक, दीन = धर्म ।

हमारे आनेसे पूर्व ही आपने सबको विश्वास दिलानेके लिए जगतके विभिन्न धर्मग्रन्थोंके द्वारा जानकारी दी कि सम्पूर्ण विश्वके स्वामी परमात्मा आएँगे और एक धर्मकी स्थापना करेंगे ।

हिन जिमीमें पातसाही, कंदो चारीस साल ।
चई खुंटें पुनां कागर, जाहेर केयांऊं गाल ॥ ८

हिन = इस, जिमीमें = धरती में, पातसाहीं = राज्य, कंदो = करेंगें, चारीस = चालीस, साल = वर्ष, चई = चारों, खूंटे = दिशाओंमें ओर, पुंना = पहुंचेगा, कागर = संदेश-पत्र, जाहेर = प्रत्यक्ष, केयाऊं = की, गाल = बात ।

वे इस जगतमें आकर चालीस वर्षों तक राज्य करेंगे। यह सन्देश चारों ओर पहुँच गया और यह बात प्रकट हो गई।

असीं आया आंजे हुकमें, मंझ लैलत कदर।
सौ साल रख्या ढंकई, जाहेर केयां आखर ॥ ९

असीं = हम, आया = आए, आंजे = आपके, हुकमें = हुकुमसे, मंझ = बीचमें, लैलतकदर = महिमामयी रात्रिमें, सौ = सौ, साल = वर्ष तक, रख्या = रखा, ढंकई = छिपाकर, जाहेर प्रत्यक्ष, केयां = किया, आखर = कयामत।

आपकी आज्ञानुसार हम ब्रह्मात्माएँ इस महिमामयी रात्रि (लैलतुलकद्र) में आ गईं। इस सन्देशको सौ वर्ष तक (श्री देवचन्द्रजीके जन्मसे लेकर हिजरी गणनाके अनुसार सौ वर्ष तक) छिपाए रखा और अन्तमें (वि. सं. १७३५) में प्रकट किया।

हजार साल दुनीजा, सो हिकडो डींह रबजो।
से डींह रात बए गुजर्‌या, केयां जाहेर रोज फरदो ॥ १०

हजार = हजार, साल = वर्ष, दुनीजा = दुनियाका, सो = वही, हिकडो = एक, डींह = दिन, रबजो = परमात्माका, सो = वे, डींह = दिन, रात = रात्रि, बए = दोनों, गुजरया = वीतने पर, केयां = किया, जाहेर = जाहेर, रोज = दिन, फरदो = कलका।

कुरानके अनुसार दुनियाँके हजार वर्षका परमात्माका एक दिन होता है (और सौ वर्षकी रात्रि होती है) इस प्रकार एक दिन और एक रात व्यतीत होने पर कलका प्रभात (परदा ए रोज कयामत) अर्थात् तारतम ज्ञानके प्रभात को प्रकट किया है।

सा कुंजी कागर मूं डेई, उपटे बका दर।
मूं गडयूं से गिंनी आइस, रूहें छते घर ॥ ११

सा = वह, कुंजी = तारतम रूपी चाबी, कागर = संदेस पत्र, मूं = मुझे, डेई = देकर, उपटे = खोला, बका = अखण्ड, दर = द्वार, मूं = मुझे, गड्यूं = मिली, से = उन्हें गिंनी = लेकर, आइस = आई, रूहें = सखियां, छत्ते = छत्रसालके, घर = दरबारमें।

मैंने श्री श्यामाजीसे तारतम ज्ञानकी यह कुञ्जी एवं धर्मग्रन्थोंका ज्ञान लेकर परमधामके द्वार खोले हैं । मुझे जो ब्रह्म आत्माएँ मिलीं उन्हें लेकर मैं छत्रसाल (साकुण्डल) के घर आ गईं ।

मूं धणी जाहेर थेओ, दीन दुनी सुरतान ।
गाल सुई सभनी, हिंदू मुसलमान ॥ १२

मूं = मेरे, धणी = धनी, जाहेर = जाहेर, थेओ = हुए, दीन = धार्मिक, दुनी = लौकिक, सुरतान = शाहंशाह, गाल = बात, सुई = सुनी, सभनी = सभीने, हिन्दू = हिन्दू हो या, मुसलमान = मुसलमान ।

मेरे प्रियतम धनी विश्व ब्रह्माण्ड तथा सभी धर्मोंके सम्राटके रूपमें इस जगतमें प्रकट हो गए । हिन्दू तथा मुसलमान सहित समस्त संसारके लोगोंने यह बात सुनी ।

बडी रांद डिखारिए, असां वड्यूं करे ।
त पसूं बडाई अंखिएं, जे सभ दुनियां सई फिरे ॥ १३

बडी = बडा, रांद = खेल, डिखारिए = दिखाया, असां = हमें, बड्यूं = महान, करे = बनाया, त = तब, पसूं = देखूं, बडाई = बडाई, अंखिए = आंखोंसे, जे = जो, सभ = सभी, दुनियां = दुनियांके लोगों में, सई = आदेश, फिरे = चले ।

आपने हमें महत्ता (बड़प्पन) देकर बड़ा खेल दिखाया है । जब आपका आदेश यहाँ पर चलने लगेगा तब मैं उसे (महत्ताको) अपनी दृष्टिसे देखूँगी।

पेरां कागर कै मूके, यकीन डियण के सभन ।
से निसान पुंना सभनी, केयां रांदमें रोसन ॥ १४

पेरां = पहले, कागर = संदेश-पत्र, कै = अनेक, मूके = भेजा, यकीन = विश्वास, डियण के = दिलाने को, सभन = सभीको, से = वे, निसान = चिह्न, पुंना = पहुंच गए, सभनी = सबको, केयां = किया, रांद = खेलमें, रोसन = जाहेर ।

आपके आगमनका विश्वास दिलानेके लिए आपने पहलेसे ही अनेक धर्मग्रन्थोंके द्वारा अपना सन्देश भेजा । उनकी भविष्यवाणीके सभी सङ्केत

(चिह्न) यहाँ पर प्राप्त हो गए हैं और खेलमें सभीको जानकारी मिल गई है ।

हे रोसन सभे पसी करे, असां दावो थेयो तोसे ।
तांजे मूकाबिल न थिए, त आंऊं पल्लो पुजां के ॥ १५

हे = यह, रोसन = प्रकाश, सभे = सब, पसी = देखकर, करे = कर, असां = हमारा, दावो = दावा, थेओ = हुआ, तोसे = आपसे, तांजे = कदाचित्, मुकाबिल = सामने, न = न, थिए = होओ, त = तो, आंऊं = मैं, पल्लो = पल्ला, पुजां = पकड़ूं, के = किसका ।

आपके आगमनकी जानकारीके चिह्नोंको प्रत्यक्ष देख कर मैं आपके साथ अधिकार (दावा) पूर्वक कहती हूँ, यदि आप प्रत्यक्ष नहीं होते तो मैं किसका पल्लु पकड़ूँगी ?

तांजे मूं कूडी करिए, त हितरो कुजाडे केके ।
त हेडा कागर सभनी, कुरे के लिखे ॥ १६

तांजे = कदाचित् आप, मूं = मुझे, कूडी = झूठी, करिए = ठहराओ, त = तो, हितरो = इतना, कुजाडे = क्यों, केके = किया, त = तो, हेडा = इतने, कागर = धर्म ग्रन्थ संदेश पत्र, सभनी = सब को, कुरे = क्या और, के = क्यों, लिखे = लिखा ।

यदि आप मुझे ही झूठी सिद्ध करना चाहते हैं तो इतना सब कुछ क्यों किया ? इन धर्मग्रन्थोंके द्वारा अपने सन्देश क्यों भिजवाए ?

जे मूं कूडी करिए, त भलें कूडी कर ।
तो पांहिजो नालो डेई, को लिखे कागर ॥ १७

जे = जो, मूं = मुझे, कूडी = झूठी, करिए = ठहराओ, त = तो, भले = ठीक है, कूडी = झूठी ही, कर = ठहराओ, तो = तो, पांहिजो = अपना, नालो = नाम, डेई = देकर, को = क्यों, लिखे = लिखा, कागर = संदेस-पत्रमें ।

यदि आप मुझे झूठी सिद्ध करना चाहते हैं तो भले कर लें, परन्तु आपने अपने नामसे इतने सन्देश (धर्मग्रन्थ) क्यों भिजवाए ?

पट अरस अजीमजो, मुराई कीं उघाडे ।
जे मूं कोठिए लिकंदी, त आंऊं को न अचां लिके ॥ १८

पट = परदा, अरस = परमधाम, अजीमजो = श्रेष्ठ का, मुराई = प्रारंभ से, कीं = क्यों, उघाडे = खोल रखा, जे = जो, मूं - मुझे, कोठिए = बुलाओ, लिकंदी = छिपके, त = तो, आंऊं - मैं, को = क्यों, न = नहीं, अचा = आऊं, लिए = छिपके ।

आपने (तारतम ज्ञानके द्वारा) पहले ही परमधामके द्वार क्यों खोल दिए ? यदि आप मुझे (अकेलीको) छिप कर बुलाएँ तो मैं छिप कर (अकेली) क्यों नहीं आऊँगी ?

एहेडी हुई तो दिलमें, त मूंके जाहेर को केइए ।
इलम डेई मूं मंझ बेही, वेंण बडा को कढे ॥ १९

एहेडी = ऐसा, हुई = था, तो = आपके, दिलमें = दिलमें, त = तो, मूंके = मुझे, जाहेर = जाहेर, को = क्यों, केइए = किया, इलम = ज्ञान, डेई = देकर, मूं = मुझ (अन्तरात्मामें), मंझ = में, बेही = विराजमान होकर, वेंण = वचन, बडा = बडे, को = क्यों, कढे = निकलवाया (कहलवाया) ।

यदि आपके मनमें ऐसी बात थी तो मुझे (महामतिके रूपमें) क्यों प्रकट किया ? मुझे तारतम ज्ञान प्रदान कर एवं मेरे हृदयमें बैठकर मुझसे इतने बड़े-बड़े वचन क्यों कहलाए ?

कोई तोके वेंण विगो चोए, त से आंऊं सहां कीं ।
मूं साहेद्यूं सभ तोहिज्यूं, गीड्यूं मूर मुराई ॥ २०

कोई = कोई, तोके = आपको, वेंण = वचन, विगो = टेडा, चोए = कहे, त = तो, से = वह, आंऊं = मैं, सहां = सहूं, कीं = कैसे, मूं = मुझे, साहेद्यू = साक्षियां, सभ = सभी, तोहिज्यूं = आपकी, गीड्यूं = ली, मूर = पारमसे, मुराई = स्वयं ।

यदि कोई आपके विषयमें उलटे वचन कहे तो उनको मैं कैसे सहन कर पाऊँगी ? मैं तो प्रारम्भसे ही आपकी दी हुई साक्षी लेकर चल रही हूँ ।

डेई लुदंनी इलम, मूंके परी परी समझाइए ।
को हेडयूं गाल्यूं मूं मुहां, दुनियामें कराइए ॥ २१

डेई = देकर, लुदंनी = तारतम, इलम = ज्ञान, मूंके = मुझे, परी परी = तरह तरहसे, समझाईए = समझाया, को = क्यों, हेडयूं = ऐसी, गाल्यूं = बातें, मूं = मेरे, मुंहां = मूंहसे, दुनियामें = जगमें, कराईए = समझाया ।

आपने मुझे तारतम ज्ञान प्रदान कर नाना प्रकारसे समझाया । इस प्रकार इस जगतमें मेरे मुखसे ऐसी बड़ी-बड़ी बातें क्यों कहलवाईं ?

सभ जोर पांहिजो डेई करे, मूंके कंमर बंधाइए ।
बाकी रे कम थोरडे, मूंके को अटकाइए ॥ २२

सभ = सारी, जोर = शक्ति, पांहिजो = अपना, डेई = देकर, करे = कर, मूंके = मुझे, कमर = कमर, बंधाईये = बंधाया, बाकी = बांकी, रे = रह गया, कम = काम, थोरडे = थोडा सा ।

आपने अपनी पूरी शक्ति (आवेश बल) प्रदान कर मेरा साहस बढ़ाया । अब तो थोड़ा ही कार्य शेष रह गया है, उसके लिए मुझे क्यों उलझा (रोक) रखा है ।

जे न थिए मुकाबिल मूंहसे, थिए कम हिन बेर ।
त हिंनी तोहिजे कागरें, पाण के सचो चोंदा केर ॥ २३

जे = जो, न = नहीं, थिए = हो, मुकाबिल = सामने, मूहसे = मुझसे, थिए = हो, कम = कार्य, हिन = इस, बेर = समय, त = तो, हिंनी = यह, तोहिजे = आपका, कागरें = संदेस पत्र द्वारा, पाणके = आपको, सचो = सत्य, चोंदा = कहेगा, केर = कौन ?

मुझे इसी समय आपसे काम है, यदि आप मेरे सामने नहीं आते हैं तो आपके इन धर्मग्रन्थोंमें कहे हुए सङ्केतोंको देख कर हमें कौन सच्चा कहेगा

?

लाड असांजा रांदमें, तो पूरा सभ केयां ।
जाहेर तो मुकाबिलें, हितरे बंग रेयां ॥ २४

लाड = प्यार, असांजा = हमारा, रांदमें = खेलमें, तो = आपने, पूरा = पूरा, सभ = सभी, केया = किया, जाहेर तो = प्रत्यतक्ष-आप, मुकाबिलें = सामने रहो, हितरे = इतनी, बंग = कमी, रेयां = रही ।

इस खेलमें आपने हमारे सभी लाड़ पूर्ण किए हैं । अब आप स्वयं सम्मुख आ जाएँ । बस, इतना ही शेष रहा है ।

मूं हिए सल्ले अगियूं गाल्यूं, से वलहा कुरो चुआं ।
सुंदरबाई हल्ली बिलखंदी, पण से कंने कीं न सुआं ॥ २५

मूं = मेरे, हिए = दिलमें, सल्ले = लगी, अगींयूं = पहलेकी, गाल्यूं = बातें, से = वे, वलहा = प्रियतम, कुरो = क्या, चुआं = कहूँ, सुन्दरबाई = श्री देवचन्द्रजी महाराज, हल्ली = चले गये, विलखंदी = विलखते, पण = परन्तु, से = वे, कंने = कानों से, कीं = क्यों, न = नहीं, सुआं = सुना ।

मेरे हृदयमें पहलेकी अनेक बातें चुभ (खटक) रहीं हैं । हे प्रियतम ! मैं उनको कैसे कहूँ ? सुन्दरबाई (श्री देवचन्द्रजी महाराज) भी रोती हुई चली गई, क्या आपने उनकी बातोंको कानसे नहीं सुना ?

सुंदरबाई जे बखतमें, मायांएं बडा डुख डिंना ।
भती भती विलखई, हे डिसी डुखडा किंना ॥ २६

सुन्दरबाई जे = श्री देवचन्द्रजीके, बखतमें = समयमें, मायाएं = माायाने, बडा = बड़ा, डुख = दुःख, डिनां = दिया, भती भती = तरह तरहसे, विलखई = विलख रही हूं, हे = यह, डिसी = देखकर, डुखडा = दुःख, किंना = उलटे ।

श्री सुन्दरबाई (श्री देवचन्द्रजी महाराज) के समयमें मायाने उनको अनेक प्रकारके कष्ट दिए, ऐसे विपरीत (उलटे) दुःखोंको देख कर वे अत्यन्त व्याकुल हुईं ।

आंऊं पण हुइस डुखमें, पण न सांगाएम आंसे ।
मूं बेखबरी न जाणयो, से तो हांणे हिए चढाया जे ॥ २७

आंऊ = मैं, पण = भी, हुइस = हुई, डुखमें = दुःखमें, पण = परन्तु, न = नहीं, सांगाएम = पहचाना, आंसे = आपको, मूं = मैंने, बेखबरी = अज्ञानतामें, न = नहीं, जाणयो = पहचाना, से = वह, तो = आपने, हांणे = अब, हिए = हृदयमें, चढाया = अंकित किया, जे = जो ।

मैं भी उस दुःखसे दुःखित हुई, किन्तु उस समय आपसे मेरा परिचय नहीं था । बेसुधिके कारण मैं उन बातोंको समझ नहीं पाई । आपने मेरे हृदयमें उन्हीं दुःखोंको अङ्कित कर दिया है ।

उलटयो आं कागर में, लिख्यो सुंदरबाई जो डो ।
ते कागर न बांचयो, पण मूं पांहिजे कंने सुंओ ॥ २८

उलट्यो = उलटा, आं = आपने, कागरमें = संदेसेमें, लिख्यो = लिखा, सुन्दरबाई = श्री देवचन्द्रजी, जो = को, डो = दोष, ते = वह, कागर = संदेश, न = नहीं, बांचयो = पढ़ा, पण = किन्तु, मूं = मैनें, पांहिजो = अपने, कंने = कानोंसे, सुंओ = सुना ।

इससे विपरीत उस सन्देश पत्रमें सुन्दरबाईके दोषोंका उल्लेख है । मैंने वह पत्र नहीं पढ़ा है किन्तु कानोंसे ही सुना है ।

से डुख सह्या असां रांदमें, तांजे सेई डिए आखर ।
से पण चाडियां सिर मथें, त सेहेंदो हियो निखर ॥ २९

से = वह, डुख = दुःख, सहया = सहन किया, असां = हमने, रांदमें = खेलमें, तांजे = कदाचित्, सेई = वही, डिए = दोगे, आखर = अन्तमें, से = उसे, पण = भी, चाडियां = चढाती हूँ, सिर = सिर, मथें = पर, त = वह, सेहेंदो = सहन करता है, हियो = हृदय, निखर = कठोर ।

हम इस खेलमें वही दुःख सह रहीं हैं, यदि आप हमें अन्तमें भी वही दुःख प्रदान करेंगे तो उसे भी मैं शिरोधार्य करूँगी । मेरा कठोर हृदय उसे सहन कर लेगा ।

ते लांएं घणों को चुआं, तोके सभ मालूम ।
से सभ तोहिजे हुकमें, असां केयां कम ॥ ३०

ते लांएं = इसलिए, घणों = अधिक, को = क्यों, चुआं = कहूं, तोके = आपको, सभ = सब, मालूम = पता है, से = वह, सभ = संपूर्ण, तोहिजे = आपके, हुकमें = आदेशसे, असां = हमने, केयां = किया, कम = कार्य ।

इसलिए अधिक क्या कहें ? आपको सब ज्ञात ही है। हमने आपके आदेशसे ही सब कुछ कार्य किए हैं ।

जे सौ भेरां आंऊं बिसरई, त पण आंहिजा सेंण ।
पस तूं हिए पांहिजे, जे तो चया वेंण ॥ ३१

जे = जो, सौ भेरां = सौ बार, आंऊं = मैं यदि, बिसरई = भूल भी गई, त = फिर, पण = भी, आंहिजा = आपकी, सेंण = सज्जन, पस = देखिए, तूं = आप, हिए = दिलमें, विचार कर, पांहिजे = अपने, जे = जो, तो = आपने, चया = कहा, वेण = वचन ।

यदि मैं सौ बार भी भूल गई तथापि मैं आपकी ही अङ्गना हूँ। आप अपने हृदयसे विचार करें (देखें) कि आपने हमें कैसे वचन कहे हैं ।

हे पण कंदे गाल्यूं लाडज्यूं, तांजे बिसरांथी ।
संग जांणी मूंर जो, थिएथी गुस्तांगी ॥ ३२

हे पण = यह भी, कंदे = करते, गाल्यूं = बातें, लाडज्यूं = प्यारकी, तांजे = कदाचित्, बिसरांथी = भूलती हूं, संग = संबंध, जाणी = जानकर, मूर जो = मूलका, थिएथी = होती है, गुस्तांगी = धृष्टता ।

इन लाड़-प्यारकी बातें करते समय कदाचित मुझसे भूल हो जाती है। यह भी अपने मूल सम्बन्धको देख कर ही मुझसे धृष्टता होती है ।

हांणे जे करिए हेतरी, जीं जेडियूं सभे पसन ।
कर सचा अची मुकाबिलो, सुख थिए असां रूहन ॥ ३३

हांणे = अब, जे = जो, करिए = करो, हेतरी = इतनी, जीं = जिससे, जेडियूं = सखियों, सभे = सब, पसन = देखे, कर = करो, सचा = सांचे,

अची = आकर, मुकाबिलो = सामना, सुख = आनन्द, थिए = हो, असां = हमारी, रूहन = आत्माओंको ।

अब आप इतना तो करें जिससे सभी ब्रह्मात्माएँ आपका दर्शन कर लें । आप प्रत्यक्ष हमारे सम्मुख उपस्थित हो जाएँ जिससे हम सभी ब्रह्मात्माओंको सुख प्राप्त हो जाए ।

हांणे निपट आए थोरडी, सुण कांध मूंहजी गाल ।
डेइ दीदार गाल्यूं कर, मूं वर नूरजमाल ॥ ३४

हांणे = अब, निपट = निश्चय कर, आए = है, थोरडी = थोडी-सी, सुण = सुनो, कांध = धनी, मूंहजी = मेरी, गाल = बात, डेई = दो, दीदार = दर्शन, गाल्यूं = बातें, कर = करो, मूं = मेरे, वर = स्वामी, नूरजमाल = अक्षरातीत ।

हे मेरे स्वामी ! मेरी कुछ बातें सुनिए, अब तो निश्यय ही थोड़ी-सी बात शेष रह गई है । आप मेरे अक्षरातीत धामधनी हैं, मुझे दर्शन देकर मुझसे कुछ बातें करें ।

हांणे जे लाड असांजा, ब्या सचा जे पारीने ।
मूं तेहेकीक आंझो तोहिजो, मूंके निरास न कंने ॥ ३५

हांणे = अब, जे = जो, लाड = प्यार, असांजा = हमारे, ब्या = दूसरे, सचा = सांचे, जे = जो, पारीने = पूर्ण करो, मूं = मुझे, तेहेकीक = पक्का, आंझो = भरोसा, तोहिजो = आपका है, मूंके = मुझे, निरास = निरास, न = नहीं, कंने = करोगे ।

अब हमारे सच्चे लाड़-प्यारको भी पूर्ण करें । निश्चय ही मुझे आपके प्रति पूर्ण विश्वास है, मुझे आप निराश नहीं करेंगे ।

तूं पारीने उमेदूं बडियूं, असांज्यूं तेहेकीक ।
पण ते लांएं थी विलखां, मथां आयो कौल नजीक ॥ ३६

तूं = आप, पारीने = पूरा करोगे, उमेदूं = इच्छाएँ, बडियूं = बडी बडी,

असांज्यूं = हमारी, तेहेकीक = निश्चित, पण = परन्तु, ते लांएं = इस लिए, थी = हूँ, विलखां = विलखती, मथा = ऊपर, आयो = आया, कौल = वायदा, नजीक = पास ही ।

आप हमारी बड़ी-बड़ी चाहनाओंको निश्चय ही पूर्ण करेंगे । किन्तु मैं इसलिए व्याकुल होती हूँ कि आपके वचनोंके अनुसार आत्म-जागृति (घर चलने) का समय निकट आ पहुँचा है ।

तूं थी धणी मुकाबिल, को रखे थोरडे बंग ।
मूं गिन्यूं साहेद्यूं तोहिज्यूं, कै केयम दुनी से जंग ॥ ३७

तूं = आप, भी = हूँ, धणी = धनीके, मुकाबिल = सामने, को = क्यों, रखे = राखी, थोरडे = थोडी-सी, बंग = कमी, मूं = मैं, गिन्यूं = लेकर, साहेद्यूं = साक्षियां, तोहिज्यूं = आपकी, कै = कई, केयम = किया, दुनीसे = दुनियांसे, जंग = लडाइयां ।

हे धनी ! आप हमारे सम्मुख आ जाएँ. थोड़ी-सी कमी क्यों रहने दे रहे हैं ? मैंने आपकी साक्षी लेकर इस जगतसे अनेक प्रकारके युद्ध किए हैं ।

पोर्‌या तां सभ ईंदा, सभ सची चोंदा से ।
जे असां बेठे अचे दुनियां, जे कीं डिसूं रांद ए ॥ ३८

पोर्‌या = पीछे, तां = तो, सभ = सभी, ईंदा = आएंगे, सभ = सभी, सची = सच, से = वे, असां = हमारे, बेठे = बैठे, अचे = आए तो, दुनियां = दुनियां, जे = जो, कीं = कुछ, डिसूं = देखा माना जाए, रांद = खेल, ए = यह ।

पीछे तो सभी लोग (आपकी छत्रछायामें) आ जाएँगे और सच्ची बातें करने लगेंगे । यदि हमारे यहाँ रहते हुए ही संसारके लोग आपके दर्शनार्थ आ जाएँ तो हमने इस खेलको कुछ देखा है, ऐसा होगा ।

हितरो त आइम तेहेकीक, पोए मूं गाल सची सभ चोंदा ।
असां हल्ले पोर्‌यां, हथडा घणुं गोहोंदा ॥ ३९

हितरो = इतना, पण = भी, आइम = है, तेहकीक = निश्चित, पोए =

पीछे, मूं = मेरी, गाल = बात, सची = सच्ची सभ = सभी, चोंदा = कहेगी, असां = हमारे, हल्यां = चले जानेके, पोर्‌या = बाद(पिछे), हथडो = हाथ, घणुं = बहुत, गोहोंदा = घसेंगे (मिलेंगे) ।

इतना तो मुझे निश्चित है कि बादमें सभी लोग मेरी बातको सच्ची मानेंगे और हमारे चले जानेके बाद हाथ मलते रह जाएँगे (पश्चात्ताप करेंगे) ।

पण असल पांहिजी गिरोमें, जा रूहअल्ला चई ।
सकुमारबाई गडवी, अजां सा पण न्हार सई ॥ ४०

पण = परन्तु, असल = सही, पांहिजी = अपनी, गिरोमें = जमातमें, जा = जो, रूहअल्ला = देवचन्द्रजीने, चई = कहा, सकुमार बाई = सकुमार सखी, गडवी = मिली, अजां = अभीतक, सा = वह, पण = भी, न्हार = नहीं, सई = पहुंची ।

किन्तु श्री देवचन्द्रजी महाराजने जैसा कहा था कि हम ब्रह्मात्माओंके समुदायमें साकुमार बाई मिलेगी किन्तु वह अभी तक नहीं पहुँची है ।

नतां कम सभ पूरो केयो, अने करिए पण थो ।
कंने पण तेहकीक, से पूरो आंझो आए तो ॥ ४१

नतां = नहीं तो, कम = कार्य, सभ = सभी, पूरो = पूरे, केयो = किए, अने = और, करिए = करते, पण = भी, थो = हो, कंने = करोगे, पण = भी, तेहेकीक = निश्चित है, से = वह, पूरो = पूरा, आंझो = विश्वास, आए = है, तो = आपका ।

अन्यथा आपने सभी कार्य पूर्ण किए हैं और कर भी रहे हैं, भविष्यमें भी निश्चय ही करेंगे, यह मुझे पूर्ण विश्वास (भरोसा) है ।

महामत चोए मूं वलहा, तोसे करियां लाड कोड ।
केयम गुस्तांगी रांदमें, जे तो बंधाई होड ॥ ४२

महामत = महामति, चोए = कहते है, मूं = मेरे, वलहा = प्रियतम, तोसे = आपसे, करिया = करती हूँ, लाड = प्यार, कोड = हर्ष, करियां = करती हूँ, गुस्तांगी = धृष्टता, रांदमें = खेलमें, जे = जो, तो = आपने, बंधाई = बाजी, होड = लगाई ।

महामति कहते हैं, हे मेरे स्वामी ! मैं आपसे प्रसन्नतापूर्वक लाड़-प्यार करती हूँ। इस खेलमें मैंने जो भी धृष्टता की है उसके लिए भी आपने ही साहस प्रदान किया है ।

प्रकरण ८ चौपाई ३८३

मारकंडजो द्रष्टान्त

चई सुंदरबाई असां के, मारकंड जी हकीकत ।
ईं दरथी आंके खोलीयां, आंजी पण ईं बीतक ॥ १

चई = कहा, सुन्दरबाई = श्री देवचन्द्रजीने, असांके = हमको, मारकंडजी = मारकंडजीका, हकीकत = चरित्र, ईं = इसके, दरथी = द्वारा, आंके = तुमको, खोलियां = बताती हूं, आंजी = तुम्हारी, पण = भी, ईं = इसी प्रकार, वीतक = वृतांत है ।

श्री सुन्दरबाईने हमें मार्कण्डेय ऋषिका उदाहरण देते हुए कहा था, मैं इस वृत्तान्तको तुम्हारे सम्मुख प्रकट करती हूँ। तुम्हारा वृत्तान्त भी कुछ इस प्रकारका है ।

निमूनो मारकंड जो, चयो सुंदरबाई भली भत ।
सुकदेव आंदो आं कारण, हेजे पसोथा हित ॥ २

निमुनो = दृष्टांत, मारकण्ड = मारकण्डजी, जो = को, चयो = कहा, सुन्दरबाई = श्री देवचन्द्रजीने, भली = अच्छी, भत = तरहसे, सुकदेव = शुकदेवजी, आंदो = ल्याये, आं = तुम्हारे, कारण = लिए, हेजे = यह जो, पसोथा = देखते हो, हित = यहाँ ।

श्री सुन्दरबाईने मार्कण्डेय ऋषिका उदाहरण (वृत्तान्त) भलीभाँति समझाया कि श्री शुकदेवजीने तुम्हारे लिए ही श्रीमद्भागवतमें यह वृत्तान्त लिखा है । तुम भी उसी प्रकार यहाँ पर यह खेल देख रहे हो ।

जे कीं गुजर्‌यो मारकंड के, बिच जिमी हिन अभ ।
से गुझ दिलजो निद्रमें, डिठो नारायणजी सभ ॥ ३

जे = जो, कीं = कुछ, गुजर्‌यो = बीता, मारकंडके = मारकण्डके, बीच = बीच, जिमी = पृथ्वी, हिन = इन, अभ आसमान, से = वह, गुझ

रहस्य, दिलजो = दिलका जो, निद्रमें नींदमें, डिठो = देखा, नारायणजी = नारायणजीने, सभ = सम्पूर्ण

इस जगतमें (पृथ्वी और आकाशके मध्य) मार्कण्डेय ऋषिके जीवनमें जो घटना घटी, उस समय उनकी निद्रावस्थामें उन्होंने अपने हृदयमें जो कुछ देखा उसे भगवान नारायणने भी देखा ।

डेखारी नारायण जी, माया मारकंड के ।
जे कीं डिठो रिखी निद्रमें, सभ चई नारायणजी से ॥ ४

डेखारी = दिखाया, नारायणजी = नारायणजीने, माया = माया, मारकंडके = मारकण्डजीको, जे = जो, कीं = कुछ, डिठां देखा, रिषी = ऋषिने, निद्रमें = नींदमें, सब = सम्पूर्ण, चई = कहा, नारायणजी = नारायणजीने, से = वह ।

भगवान नारायणने मार्कण्डेय ऋषिको माया दिखाई । ऋषिने मायामें जो कुछ देखा उसे भगवान नारायणने उनको कह समझाया ।

असीं पण बेठा आं अगियां, निद्रडी डिंनी आं असां ।
हेजा डिसोंथा निद्रमें, से कुरो खबर न्हाए आं ॥ ५

असीं = हम, पण = भी, बेठां = बैठे हैं, आं = आपके, अगियां = आगे, निद्रडी = नींद, डिंनो = दिया, आं = आपने, असां = हमको, हेजा = यह जो, डिसोंथा = दिखती है, निंद्रमें = नींदमें, से = वह, कुरो = क्या, खबर = जानकारी, न्हाए = नहीं है, आं = आपको ।

हे धामधनी ! हम ब्रह्मात्माएँ भी आपके सम्मुख (आगे) बैठीं हैं । आपने ही हम पर नींदका आवरण डाला है. हम इस नींदमें जो कुछ देख रहीं हैं क्या आपको उसकी जानकारी नहीं है ।

धणी बेठा आयो बिचमें, सभ नजरमें पाए ।
असां दिलजी को न कर्‌यो, आं जे दिलमें तां आए ॥ ६

धणी = प्रियतम, बैठा = बैठे, आयो = है, बिचमें = बीचमें, सभ = सम्पूर्ण, नजरमें = नजरोंके सामने, पाए = लेकरके, असां = हमारे, दिलजी = दिलकी, को = क्यों, न = नहीं, कर्‌यो = करते है, आंजे = आपके, दिलमें = दिलमें, तां = तो, आए = है ।

हम सभीको अपनी दृष्टिमें लेकर आप धनी हमारे बीच बैठे हैं। अब आप हमारे हृदयकी चाहना क्यों पूर्ण नहीं करते ? इसे पूर्ण करनेकी चाहना तो आपके हृदयमें है।

असां दिलज्यूं गालियूं, से कुरो आं डिठ्यूं न्हाए।
से कीं आंईं सहोथा, जे विलखण थिए असांए ॥ ७

असां = हमारे, दिलज्यूं = दिलकी, गालियूं = बातें, से = वह, कुरो = क्या, आं = आपने, डिठयूं = देखा, न्हाए = नहीं है, से = वह, कीं = क्यों, आंईं = आप, सहोथा = सहन करते हो, जे =जो, बिलखण = तडपना, थिए = होता है, असांए = हमें।

हमारे हृदयकी बातों (भावना) को क्या आपने नहीं देखा है ? हमें (आपके दर्शनकी) व्याकुलता हो रही है उसे आप कैसे सहन कर रहे हैं ?

आंईं बेठा सुणो गालियूं, असां के को विधें दिल न्हाए।
को न करिए मूं दिलजी, आंजे दिलमें केही आए ॥ ८

आंई आप, बेठा बैठे, सुणो सुनते हो, गालियूं = बातें, असांके = हमको, को = क्यों, बिधें = दिया, दिल = दिलसे, ल्याए = उतार, को = क्यों, न = नहीं, करिए = करते हो, मूं = मेरे, दिलजी = दिलकी, आंजे = आपके, दिलमें = दिलके अन्दर, केही = क्या, आए = है।

आप बैठे-बैठे हमारी बातें सुन रहे हैं (तथापि) आपने हमें अपने हृदयसे ही कैसे दूर कर दिया है, आप हमारे हृदयकी चाहनाको क्यों पूर्ण नहीं कर रहे हैं, आपके हृदयमें क्या है ?

मारकंड माया मंझां, जडे किएं न निकरी सगे।
तडे गिडाई रिखी के पांणमें, मंझ पेही मारकंड जे ॥ ९

मारकंड = मारकण्डजी, माया = मायाके, मंझा = बीचसे, जडे = जब, किएं = किसी प्रकार, न = नहीं, निकरी = निकल, सगे = सके, तडे = तब, गिडाई = मिला लिया, रिषी = ऋषि, के = को, पांणमें = अपने, मंझ = बीचमें, पेही = प्रवेशकर, मारकंड = मारकण्ड, जे = के।

मार्कण्डेय ऋषि जब मायासे किसी भी प्रकार नहीं निकल सके तब भगवान नारायणने उनके हृदयमें प्रवेश कर उनको स्वयंमें मिला लिया (एकाकार किया) ।

असां जा डिठी रांदडी, आंईं पसी तेहेजो सूल ।
मूंके असां के फुरमान, हथ पांहिजे नूरी रसूल ॥ १०

असां = हमने, जा = जो, डिठी = देखा, रांदडी = खेल, आंईं = आप, पसी = देखकर, तेहेजो = उनकी, सूल = तरह, मूंके = भेजा, असांके = हमें, फुरमान = संदेशा, हथ = हाथ, पांहिजे = अपने, नूरी = तेजस्वी, रसूल = संदेश वाहक ।

हम जो खेल देख रहीं हैं उसके दुःखोंको देखकर रसूलके हाथ अपना सन्देश भेजा ।

लखें भतें लिखियां, कै इसारतें रमूजें ।
सभ हकीकत मूकियां, भाइए मान किएं समझे ॥ ११

लखें = लाखों, भते = तरहसे, लिखियां = लिखा, कै = कैयों, इसारतें = संकेतों, रमूजें = वर्णन, सभ = सम्पूर्ण, हकीकत = विस्तार(वर्णन) मूकियां = भेजा, भाइए = जानो, मान = ससम्मान, किएं = किसी तरहसे भी, समझे = समझले ।

अपने सन्देशमें आपने अनेक (लाखों प्रकारके) गूढ़ रहस्य तथा सङ्केत लिख कर भिजवाए हैं । यह सम्पूर्ण वृत्तान्त आपने इसीलिए भेजा कि ब्रह्मात्माएँ कदाचित उन्हें देखकर समझ जाएँ ।

पोए मूकियां रूह पांहिजी, जा असांजी सिरदार ।
कुंजी आणे अरस जी, खोल्याई बका द्वार ॥ १२

पोए = पीछे, मूंकियां = भेजा, रूह = आत्मा, पांहिजी = अपनी, जा = जो, असांजी = हमारी, सिरदार = अग्रगण्य, कुंजी = तारतमरूपी चाबी, आंणे = ल्याया (ल्याकर), अरस = परमधाम, जी = की, खोल्याई = खोल दिया, बका = अखण्डके, द्वार = दरवाजा ।

तत्पश्चात् आपने ब्रह्मात्माओंकी शिरोमणि श्री श्यामाजीको सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीके रूपमें भेजा । उन्होंने तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी लाकर अखण्ड परमधामके द्वार खोल दिए ।

जे निसानियूं फुरमानमें, से डिनाई सभ निसान ।
सुंदरबाई कै भतें, करे डिंनाऊं पेहेचान ॥ १३

जे = जो, निसानियूं = संकेत, फुरमान = संदेस, में = बीचमें, से = वह, डिंनाई = दिया, सभ = सभी, निसान = दृष्टान्त, सुन्दरबाई = श्री देवचन्द्रजी, कै = अनगिनत, भतें = तरहसे, करे = कर, डिनांऊं = दिया, पेहेचान = जानकारी ।

उन्होंने आपके सन्देश (विभिन्न धर्मग्रन्थों) के सभी गूढ़ रहस्यों तथा सङ्केतोंको स्पष्ट किया । इस प्रकार श्री सुन्दरबाईने हमें विभिन्न प्रकारसे पहचान करवाई ।

ईं चुआं आंऊ केतरो, अलेखे आईन ।
बिंनी कौल मिडी करे, डिंनाऊं द्रढ यकीन ॥ १४

ईं = इस प्रकार, चुआं = कहूं, आंऊं = मैं, केतरो = कितना, अलेखे = अत्याधिक, आईन = है, बिंनी = दोनों (वेद और कतेब), कौल = वचन, मिडी = मिलाकर, करे = कर, डिंनाऊं = दिया, द्रढ = निश्चय, यकीन = ईमान(विस्वास) ।

मैं इस प्रसङ्गको कहाँ तक कहूँ ? यह तो अवर्णनीय है । उन्होंने वेद तथा कतेब दोनों ग्रन्थोंकी भविष्यवाणीको मिलाकर हमें विश्वास दिलाया ।

दिलडा असांजा जागया, पण पुजे न रूहसीं ।
से हुकुम हथ आंहिजे, हल्ले न असां जो कीं ॥ १५

दिलडा = दिल, असांजा = हमारा, जागया = जागृत हुआ, पण = परन्तु, पुजे = पहुंचता, न = नहीं, रूहसीं = आत्मातक, से = वह, हुकुम = आज्ञा, हथ = हाथ, आंहिजे = आपके, हल्ले = चलता, न = नहीं, अंसाजे = हमारा, कीं = कुछ भी ।

इससे हमारा हृदय तो जागृत हुआ किन्तु (यह ज्ञान) आत्मा तक नहीं पहुँचा. यह सब आपके आदेशके अधीन है । इसमें हमारा कुछ नहीं चलता है ।

मारकंड जे दिलजी, सभ नारायण जी चई ।
जडे याद डिंनी मारकंड के, तडे हिक दम निद्र न रई ॥ १६

मारकंड = मारकण्ड, जे = के, दिलजी = दिलकी, सभ = सभी, नारायणजी = नारायणजीने, चई = समझाया, जडे = जब, याद = जानकारी, डिंनी = दिलाया, मारकंडके = मारकण्डके, तडे = तब, हिक = एक, दम = क्षण भी, निद्र = नींद, न रई = नहीं रही ।

मार्कण्डेय ऋषिके हृदयकी सभी बातें भगवान नारायणने कही । उन्होंने जब मार्कण्डेयको अपने स्वरूपका स्मरण करवाया तब क्षणमात्रमें ही उनकी नींद उड़ गई ।

उडी वेई मारकंडके, निद्रडी कंदे विचार ।
तोहे सुध असां न थिए, जे डिंनाऊं उपटे द्वार ॥ १७

उडी = हट (उड) जाना, वेई = गई, मारकंडके = मारकण्डकी, निद्रडी = नींद, कंदे = करते ही, विचार = समझ, तोहे = तब भी, सुध = ज्ञान, असां = हमको, न = नहीं, थिए = आती, जे = जो, डिनाऊं = दिया, उपटे = खोल, द्वार = दरवाजा ।

(भगवान नारायणके द्वारा अपने स्वरूपका स्मरण करवाने पर) उनके वचनों पर विचार करते ही मार्कण्डेयकी नींद उड़ गई किन्तु परमधामके द्वार खोल दिए जाने पर भी हमें तो किसी भी प्रकारकी सुधि नहीं है ।

तो डिसंदे आंऊं बिलखां, सभ सुध डिंनी आं हित ।
वलहा याद अजां को न अचे, को डिंना हियडो सखत ॥ १८

तो = आपके, डिसंदे = देखते, आंऊं = मैं, बिलखा = तडपती, सभ = समग्र, सुध = याद, डिंनी = दिया, आं = आपने, हित = यहाँ, वलहा = प्रियतम, याद = याद, अजां = अभीतक, को = क्यों, डिंना = दिया, हियडो = हृदयसे, सखत = कठोर ।

यद्यपि आपने हमें सब प्रकारकी सुधि दी है तथापि मैं आपके देखते-देखते तडप रही हूँ। हे प्रियतम धनी ! आप अब भी क्यों याद नहीं आते हैं ? आपने मेरे हृदयको क्यों कठोर बना दिया है ।

धणी मूंहजे धामजा, अंईं चओ करियां तीं ।
असां के हिंन रांदमें, मुझाए रख्यां कीं ॥ १९

धणी = प्रीतम, मूंहजे = मेरे, धामजा = धामके, अंईं = आप, चओ = कहिए, करियां = करूं, तीं = वैसे ही, असांके = हमें, हिन = इस, रांदमें, मुझाए = उरझाकर, रख्यां = रखा, कीं = क्यों

हे मेरे धामके धनी ! आप जैसा कहेंगे मैं वैसा ही करूँगी। हमें इस खेलमें क्यों उलझा रखा है ?

गाल मिठी वलहा, सुणाए डेखार धाम ।
दीदार डेयम पांहिजो, मूं अंगडे थिए आराम ॥ २०

गाल = बातें, मिठी = मधुर, बलहा = प्यारे, सुणाए = सुनाकर, डेखार = डेखाइए, धाम = परमधाम, दीदार = दर्शन, डेयम = दीजिए, पांहिजो = अपना, मूं = मुझे(मेरे), अंगडे = शरीरमें, थिए = होसके, आराम = आनन्द ।

हे प्रियतम धनी ! अब हमें अपनी मधुर वाणी सुना कर परमधामके दर्शन करवाइए एवं अपना दर्शन दीजिए जिससे मेरे अङ्ग-प्रत्यङ्गोंमें शान्ति छा जाए ।

आंऊं चुआं बे केहके, तूं मूंहजो धणी आइए ।
तूं सुणी ईं को करिए, ईं बार बार को चाइए ॥ २१

आंऊं = मैं, चुआं = कहूं, वे = दूसरे, केहके = किसको, तूं = आप ही, मूंहजो = मेरे, धणी = प्रियतम, आइए = हैं(हो), तूं = आप, सुणो = सुनके, ईं = ऐसा, को = क्यों, करिए = करते हैं, ईं = इस प्रकार, बारबार = अनेक बार, को = क्यों, चाइए = केहेलवाते हैं ।

आप मेरे धनी हैं इसलिए मैं अन्य किससे कहूँ। यह सब सुनकर भी आप ऐसा क्यों कर रहे हैं । मुझसे बार-बार क्यों कहलवा रहे हैं ?

सुंदरबाईएं जे चयो, मूं दिल पण डिंनी गुहाए ।
सभ गाल्यूं असां जे दिलज्यूं, धणी तो खबर सभ आए ॥ २२

सुन्दरबाईएं = देवचन्द्रजीने, जे = जो, चयो = कहा, मूं = मेरे, दिल = दिलने, पण = भी, डिंनी = दिया, गुहाए = साक्षी, सभ = सभी, गाल्यूं = बातें, असांजे = हमारे, दिलज्यूं = दिलकी, धणी = प्रियतम, तो = आपको, खबर = जानकारी, सभ = सम्पूर्ण, आए = है ।

सुन्दरबाईने जो बातें कही हैं मेरे हृदयने भी उनकी साक्षी दी है. हे धनी ! आपको हमारे हृदयकी सभी बातोंकी जानकारी है ।

हे गालियूं आंईं डिसी करे, कीं मांठ करे रहो ।
अरस संग सारे करे, आंईं बिछोहा कीं सहो ॥ २३

हे = यह(ए), गालियूं = बातें, आंईं = आप, डिसी = देख, करे = करके, कीं = कैसे, मांठ = चुप, करे = करके, रहो = रहते हो, अरस = परमधामका, संग = संबन्ध, सारे = सभी, करे = करके, आंईं = आप, विछोहा = जुदाई, की = क्यों, सहो = सहते हो ।

यह सब देखकर भी आप क्यों मौन हो रहे हैं । हमें परमधामका सम्बन्ध बताकर आप हमारा वियोग कैसे सहन कर रहे हैं ।

अरस असांके विसर्‌यो, अने विसर्‌या तो कदम ।
पण तो को संग विसारयो, कीं विसारियां खसम ॥ २४

अरस = निजधाम, असांके = हमको, विसर्‌यो = भूलगया, अने = और, विसर्‌या = भूल गये, तो = आपके, कदम = चरणारविंद, पण = परन्तु, तो = आपने, को = क्यों, संग = संबन्ध, विसरियो = भूलादिया, कीं = क्यों, विसारियां = भूल गये हो, खसम = प्रियतम ।

हम परमधामको भी भूल गईं और आपके चरणोंको भी भूल गईं । किन्तु आपने अपना सम्बन्ध क्यों भूला दिया है । आप कैसे भूल गए हैं ।

दिलडो अरस संग जो, असां मथां कीं लाथां ।
पुकारींदे न न्हारिओ, असां बिच हेडी को पातां ॥ २५

दिलडो = दिल, अरस = धामके, संग = नाता, जो = को, असां = हमारे,

मथां = ऊपरसे, कीं = क्यों, लाथां = अवतरित किया, पुकारींदे = पुकारनेसे भी, न = नहीं, न्हारिओ = देखते हो, असां = हमको, बिच = बीचमें, हेडी = ऐसी, को = क्यों, पातां = डाला ।

हमारे हृदयका परमधामसे जो सम्बन्ध है, उसे हमसे क्यों दूर किया (उतार दिया) । पुकार करने पर भी आप हमारी ओर नहीं देख रहे हैं । हमारे बीच ऐसा अन्तर क्यों रखा है ?

किते वेयूं हो गालियूं, जे अरस बिच केयूं ।
तांजे असीं विसर्‌या, आंके विसरि की वेयूं ॥ २६

किते = कहाँ, वेयूं = गई, हो = वे, गालियूं = बातें, जे = जो, अरस = धामके, बिच = बीच, केयूं = की थी, तांजे = कदाचित्, असीं = हम, विसर्‌या = भूल गये, आंके = आपको, विसरी = भूल, कीं = क्यों, वेयूं = गये ।

वे बातें अब कहाँ चलीं गईं, जो आपने परमधाम (मूलमिलावा) में की थी । कदाचित् हम भूल भी गईं तो आप कैसे भूल गए हैं ?

करियां गुस्तांगी बडियूं, पण हियडो चायो तोहिजो चए ।
जे मूं जगाए सामो न्हारियो, त मूं रूहडी कीं रए ॥ २७

करियां = की हूँ, गुस्तांगी = धृष्ठाता, बडियूं = बहुत, पण = परन्तु, हियडो = हृदय, चायो = कहलवानेसे, तोहिजो = आपके, चए = कहता हूँ, जे = जो, मूं = मुझे, जगाए = जगाकर, सामो = सामने, न्हारियो = देखो, त = तो, मूं = मेरी, रूहडी = आत्मा, कीं = कैसे, रए = रहेगी ।

मैंने बड़ी धृष्टता की है किन्तु हृदयमें आपकी प्रेरणा होने पर ही मैं ऐसा कर रही हूँ. यदि मुझे जागृत कर आप मेरी ओर देखेंगे तो मेरी आत्मा इस देहमें कैसे रह सकेगी ?

चरई थी चुआं थी, जिन डुखे जो मूंहसे ।
तो डिखारियो हिक तोहके, आंऊं चुआं बे केहके ॥ २८

चरई = दिवानी, थी = होकर, चुआं = कहती, थी = हूँ, जिन = मत,

डुखे = दुःखी, जो = हो, मूंहसे = मुझसे, तो = आपने, डिखारियो = दिखाया, हिक = एक, तोहके = आपके ही, आंऊं = मैं, चुआं = कहुं, बे = दूसरा, केहके = किसको ।

मैं तो दिवानी (पागल) होकर ये बातें कह रही हूँ। आप इनसे दुःखी न हों, क्योंकि आपने मुझे मात्र आपको ही दिखाया है. इसलिए मैं अन्य किससे कहूँ ?

चंगी भली आइयां, चरई ते चुआं ।
भूले चुके वेण निकरे, जिन डुखे जो मुआं ॥ २९

चंगी = चतुर, भली = अच्छी, आइयां = हूँ, चरई = दिवानी, ते = तो, चुआं = कहती हूं, भूले = भूलसे, चुके = चूक, वेण = वचन, निकरे = निकलते हैं, जिन = नहीं, दुखे = दुखी, जो = होना, मुआं = मुझसे ।

वैसे तो मैं अच्छी चतुर हूँ तथापि स्वयंको इसलिए दिवानी कह रही हूँ कि मुझसे भूल-चूकमें कोई अनुचित वचन निकल जाएँ तो भी आप मुझसे दुःखी न हों ।

ईं करे विहार्यां, हितरी पण न सहां ।
त कीं घुरंदिस लाडडा, कीं पारीने असां ॥ ३०

ईं = ऐसी, करे = करके, विहारयां = बैठाया, हितरी = इतना, पण = परन्तु, न = नहीं, सहां = सहन नहीं कर सकती, त = तो, कीं = कैसे, घुरंदिस = मागूं, लाडला = प्यारको, कीं = किस प्रकार, पारीने = पूर्ण करेंगे, असां = हमारे ।

आपने हमें ऐसी दशामें बैठा दिया फिर भी आप हमारा इतना कहा भी सहन नहीं कर सकते तो मैं आपसे कैसे लाड़ प्यार माँगूँ और आप हमारे लाड़ कैसे पूर्ण करेंगे ?

बिआ लाड मूं विसर्या, पसी तोहिजो हाल ।
न कीं डिए दीदार, न कीं सुणाइए गाल ॥ ३१

बिआ = दूसरा, लाड = प्यार, मूं = मुझे, विसर्या = भूल गये, पसी = देखकर, तोहिजो = आपका, हाल = स्थिति, न = नहीं, कीं = कुछ,

डिए = देते हो, दीदारे = दर्शन, न = नहीं, कीं = कुछ, सुणाइए = सुनाते हो, गाल = बातें ।

आपकी यह स्थिति देखकर मैं दूसरा लाड़-प्यार ही भूल गई हूँ। आप न दर्शन दे रहे हैं और न ही मीठी वाणी सुना रहे हैं ।

तोके आंऊं न पसां, न कीं कंने सुणयां ।
हितरो पण न थेयम, त विआ केरा लाड मंगां ॥ ३२

तोके = आपको, आंऊं = मैं, न = नहीं, पसां = देख सकती, न = नहीं, कीं = कुछ, कंने = कानोंसे, सुणयां = सुन सकती, हितरो = इतना, पण = भी, न = नहीं, थेयम = होता है, त = तो, बिआ = दूसरा, केरा = कैसे, लाड = प्यार, मंगां = मांगूं ।

मैं आपको न देख पाती हूँ और न ही आपकी वाणी सुन पाती हूँ. आपसे इतना भी नहीं होता है तो मैं दूसरा लाड़ कैसे माँग लूँ.

मंगां जाणीं संगडो, जे तो डेखार्‌यो ।
हांणे बिच बेही सभ जगाइए, हांणे कार्‌यूं को कार्‌यो ॥ ३३

मंगा = माँगती हूं, जाणी = जानकर, संगडो = संबन्ध, जे = जो, तो = आपने, डेखार्‌यो = दिखाया, हांणे = अब, बिच = बीचमें, बेही = बैठकर, सभ = सभीको, जगाईए = जागृत करते हैं, हांणे = अब, कार्‌यूं = पुकार, को = क्यों, कार्‌यो = कराते हो ।

आपने मुझे जो सम्बन्ध दिखाया (जताया) है, उसीके आधार पर मैं आपसे माँग रही हूँ। अब आप हमारे बीच बैठकर हमें जागृत करें। हमसे अब यह पुकार क्यों करवा रहे हैं ?

मंगांथी पण द्रजंदी, मूं मथां हेडी थेई ।
हे सगाई निसबत, आंके विसरी कीं बेई ॥ ३४

मंगांथी = मांगती हूँ, पण = परन्तु, द्रजंदी = डरती हूँ, मूं = मुझे, मथां = ऊपर, हेडी = ऐसी, थेई = हुई है, हे = यह, सगाई = शादी, निसबत

= सम्बन्ध, आंके = आपको, बिसरी = भूल, कीं = क्यों, बेई = गया ।
मुझ पर ऐसी बीत रही है कि मैं आपसे माँगती हुई भी डरती हूँ । हमारे इस सम्बन्धको आपने कैसे भूला दिया ?

मूंके निद्रडी विसारिओ, पण तूं कीं विसारिए ।
तो दिल से को उतारियूं, ही बार बार को चाइए ॥ ३५

मूंके = मुझे, निद्रडी = नींदने, बिसारियो = भूला दिया, पण = परन्तु, तूं = आपने, कीं = क्यों, बिसारिए = भूलाया, तो = आपने, दिल = दिल, से = से, को = क्यों, उतारियूं = उतार दिया, ही = यह, बार बार = पुनः पुनः, को = क्यों, चाइए = केहेलवाते हो ।

मुझे तो भ्रमरूपी निद्राने सब कुछ भूला दिया किन्तु आप कैसे भूल गए हैं ? आपने मुझे अपने हृदयसे क्यों दूर किया (उतार दिया) और मुझसे वारंवार यह क्यों कहलवा रहे हैं ?

हेडी घुंडी दिलमें, की पाए बेठो पांण ।
आंऊं कडी न रहां दम तो रे, हेडी को करे मूं से हांण ॥ ३६

हेडी = ऐसी, घुंडी = गांठ, दिलमें = दिलमें, कीं = क्यों, पाए = डालकर, बेठो = बैठे हो, पांण = आप, आंऊं = मैं, कडी = कभी भी, न = नहीं, रहां = रह सकती हूं, दम = पल भर, तो रे = आपके बिना, हेडी = ऐसी, को = क्यों, करे = करते हो, मूं = मुझ, से = से, हांण = अब ।

आप अपने हृदयमें ऐसी गाँठ लेकर क्यों बैठे हैं ? मैं क्षण मात्रके लिए भी आपके बिना नहीं रह सकती । अब आप मुझसे ऐसा क्यों कर रहे हैं ?

मूं मथां हेडी को केइए, केहेडो आइम डो ।
जे गाल होए आं दिलमें, से मूं मांधां को न कढो ॥ ३७

मूं = मेरे, मथां = ऊपर, हेडी = ऐसी, को = क्यों, केइए = करते है, केहेडो = किसका, आइम = है, डो = दोष, जे = जो, गाल = बात,

होए = है, आं = आपके, दिलमें = दिलमें, से = वह, मूं = मेरे, मांधां = सामने, को = क्यों, न = नहीं, कढो = प्रगट करतें हैं ।

आप मेरे ऊपर ऐसा क्यों कर रहे हैं ? मेरा क्या दोष है । आपके हृदयमें जो भी बात है उसे मेरे आगे क्यों कह नहीं देते ?

अगें सुंदरबाई हल्लई, रोंदी कर करंदी ।
हांणे मूंसे ईं को करयो, करे हेडी मेहेरबानगी ॥ ३८

अगें = पहले, सुन्दरबाई = श्री देवचन्द्रजी, हल्लई = चले, रोंदी = रोते, कर = तडप, करंदी = तडप कर, हांणे = अब, मूंसे = हमसे, ईं = ऐसा, को = क्यों, कर्‌यो = करते हैं, करे = करके, हेडी = ऐसी, मेहेरबानगी = कृपादृष्टि ।

पहले सुन्दबाई भी व्याकुल होकर रोती हुई चली गई । ऐसी कृपा कर अब मेरे साथ भी वैसा क्यों करते हैं ?

मांधां डिखारई रांद रातमें, हांणे जाहेर केयां फजर ।
हे गालियूं केयूं सभ मेहेरज्यूं, सा लाथाऊं कीं नजर ॥ ३९

मांधा = आगे, डिखारई = दिखाया, रांद = मायावी खेल, रातमें = रात्रीमें, हांणे = अब, जाहेर = प्रत्यक्ष, केयां = किया, फजर = सबेरे, हे = यह(ए) गालियूं = बातें, केयू = किया, सभ = सभी, मेहेरज्यूं = दया, सा = वह, लाथाऊं = उतारी, कीं = क्यों, नजर = दृष्टिसे ।

पहले (व्रज तथा रासमें) तो रात्रिमें खेल दिखाया । अब आत्मजागृतिका प्रभात हुआ है । यह सब आपकी कृपासे ही हुआ है । अब (इस समय) अपनी दृष्टिसे दूर (उतार) क्यों कर रहे हैं ?

हांणे जीं जांणे तीं मूं कर, पण बदल मूंहजो हाल ।
तीं कर जीं पसां तोहके, जीं सुणियां मिठडी गाल ॥ ४०

हांणे = अब, जीं = जैसे, जांणे = जानो, तीं = तैसी, मूं = मुझे, कर = करो, पण = परन्तु, बदल = बदलदो, मूंहजो = मेरी, हाल = स्थिति,

तीं = तैसी, कर = करो, जीं = जैसे, पसां = देखूं, तोहके = आपको, जीं = जिससे, सुणियां = सुन सकूं, मिठडी = मिठी, गाल = बातें ।

आपको जैसा उचित लगे वैसा ही करें किन्तु मेरी दशाको बदल दें । आप ऐसा उपाय करें जिससे मैं आपको देख सकूँ और आपकी मधुर वाणीको सुन सकूँ ।

केडा बंजां केके चुआं, बिओ को न डिखारे हंद ।
तूं बेठो मूं भर में, आंऊं केडा बंजां करे पंध ॥ ४१

केडा = कहाँ, बंजा = जांऊं, केके = किसको, चुआं = कहूँ, बिओ = दूसरा, को = कोई भी, न = नहीं, डिखारे = दिखाता, हंद = ठिकाना, तूं = आप, बेठो = बैठे हैं, मूं = मेरे, भर में = नजदिकमें, आंऊं = मैं, केडा = कहाँ, बंजा = जाऊं, करे = चलके, पंध = रास्ता ।

अब मैं कहाँ जाऊँ, किससे कहूँ, आपने कोई दूसरा ठिकाना दिखाया ही नहीं है । जब आप मेरे निकट ही बैठे हैं तो मैं चलकर कहाँ जाऊँ ?

बट बेठा न सुणो, न कीं न्हारयो नेणंन ।
न पुजी सगां पांध के, न कीं सुणियां कनंन ॥ ४२

बट = पास, बेठा = बैठे, न = नहीं, सुणो = सुनते हो, न = नहीं, कीं = कुछ, न्हार्‌यो = देखती, नेणंन = नैनोंसे, न = नहीं, पुंजी = पहुंच, सगां = सकती हूं, पांधके = दामनको, न = नहीं, कीं = कुछ, सुणियां = सुनती, कनंन = कानोंसे ।

आप निकट ही बैठ कर भी (मेरी बात) नहीं सुन रहे हैं और (मुझ पर) अपनी दृष्टि नहीं डाल रहे हैं । मैं न आपके पल्लु तक पहुँच सकती हूँ और न ही कानोंके द्वारा आपकी वाणी सुन सकती हूँ ।

मूंजा पुजे न हथ अंगडा, त रहां कींय करे ।
कोठाईए कागर मूकी करे, कीं बेहां धीरज धरे ॥ ४३

मूंजा = मेरा, पुजे = पहुंचता, न = नहीं, हथ = हाथ, अंगडा = कोई अंग, त = तो, रहां = रहूं, कींय = कैसे(क्या), करे = करूं कोठाइए

= बुलाते हैं, कागर = संदेश, मूकी = भेज, करे = करके, कीं = कैसे, बेहां = बैठूं, धीरज = धैर्य, धरे = धारण करके ।

मेरे हाथ भी आपके अङ्गों तक नहीं पहुँच रहे हैं तो मैं (आपके बिना) कैसे रहूँ ? आप मुझे सन्देश (पत्र) भेजकर बुलवाते हैं । मैं (दर्शनके बिना) धैर्य धारण कर कैसे बैठी रहूँ ?

पेरो पांणे जांणी हिन के, हांणे करिए हल्लणजी बेर ।
पुकारींदे न डेओ, पसण पांहिजा पेर ॥ ४४

पेरो = पहले, पांणे = आपने ही, जांणी = जानकारी दी, हिन = इन, के = को, हांणे = अब, करिए = करते हैं, हल्लणजी = चलनेकी, बेर = देरी, पुकारिंदे = पुकार करते, न = नहीं, डेओ = देते, पसण = दर्शन करने, पांहिजा = अपने, पेर = चरणोंको ।

सर्व प्रथम आपने ही इन ब्रह्मात्माओंको अपना परिचय दिया । अब चलनेमें विलम्ब कर रहे हैं । वारंवार पुकार करने पर भी अपने चरणारविन्दके दर्शन करने नहीं देते हैं ।

गाल निपट आए थोरडी, हेडी भारी को केइए ।
सभनी गालें समरथ, पण दिल घुंडी केई रखिए ॥ ४५

गाल = बात, निपट = निश्चय, आए = है, थोरडो = थोडि-सी, हेडी = ऐसी, भारी = विशाल, को = क्यों, केइए = करते हो, सभनी = सभीके, गालें = बातोंमें, समरथ = समरथ हैं, पण = परन्तु, दिल = दिलमें, घुंडी = दाव-पेच, केई = क्यों, रखिए = रखते हैं ।

यह बात तो नितान्त छोटी है आपने इसे क्यों बड़ी बना रखी है । आप सब प्रकारसे समर्थ हैं फिर भी हृदयमें गाँठ बाँध रखी है ।

आंई डुखोजा दिलमें, जडे चुआं घुंडीजो वेंण ।
पण कीं करियां की चुआं, मूं अडां न्हारयो न खणी नेंण ॥ ४६

आंई = तुम, डुखोजा = दुःखी होंगे, दिलमें = दिलसे, जडे = जब, चुआं = कहूंगी, घुडीजो = रहस्यके, वेंण = वचन, पण = परन्तु, कीं = क्या,

करियां = करूं, कीं = कैसे, चुआं = कहूं, मूं = मेरी, अडां = तरफ, न्हार्‌यो = देखते, न = नहीं, खणी = उठाते, नेंण = आँख ।

जब मैं हृदयकी गाँठ (कपट) की बात करती हूँ तो इससे आपको दुःख होगा, किन्तु मैं क्या करूँ, किससे कहूँ ? आप तो मेरी ओर आँख उठाकर भी नहीं देखते हैं ।

जा पर चओ सा करियां, तूं पांण कराइएथो ।
हे पण तूंहीं चाइए, मूं मथें कीं अचे डो ॥ ४७

जा पर = जिस प्रकार, चओ = कहे, सा = वैसा ही, करियां = करूं, तूं = आप, पांण = आप ही, कराइएथो = कराते है, हे = यह, पण = भी, तूं हीं = आप ही, चाइए = कहलाते है, मूं = हमारे, मथें = ऊपर, कीं = कैसे, अचे = आ सके, डो = आरोप (दोष) ।

आप जैसा कहेंगे मैं वैसा ही करूँगी किन्तु यह सब आप ही करवा रहे हैं । यह भी आप ही कहला रहे हैं तो मेरे सिर पर दोष कैसे आएगा ?

हेडी रांद डिखारई, मय वर कोडी लख हजार ।
कीं करियां कीं चुआं, मूंजा धणी कायम भरतार ॥ ४८

हेडी = ऐसा, रांद = खेल, डिखाई = दिखाया, मय = बीचमें, वर = उरझन, कोडी = करोडों, लख = लाखों, हजार = हजारों, कीं = क्या, करियां = करूं, कीं = क्या, करियां = करूं, कीं = क्या, चुआं = कहूं, मूंजा = मेरे, धणी = प्रियतम, कायम = अखण्ड, भरतार = स्वामी(मालिक) ।

आपने हमें ऐसा खेल दिखाया है जिसमें हजारों, लाखों गुत्थियाँ (दावपेच) हैं । अब मैं क्या करूँ, कहाँ जाऊँ, आप ही मेरे अखण्ड धनी हैं ।

जे अपार वराका तोहिजा, मूं हिकडी गंठ न छुटे ।
लखें भतें न्हारियां, तो रे जोडी कां न जुडे ॥ ४९

जे = जो, अपार = बेसुमार, वराका = दाव पेच, तोहिजा = आपके हैं, मूं = मुझसे, हिकडी = एक भी, गंठ = गांठ, न = नहीं, छुटे = छुटता

है, लखें = लाखों, भतें = तरह, न्हारियां = देखती हूं, तो = आपके, रे = बिना, जोडी = जोडनेसे, कां = किसी प्रकार, न = नहीं, जुडे = जुडती है ।

आपके इस खेलमें अपार उलझनें हैं । मुझसे इसकी एक गाँठ भी नहीं खुलती है । मैंने लाखों प्रकारसे देखा । आपके जोड़े बिना कोई बात नहीं जुड़ती है अर्थात् आपके बिना कोई भी कार्य नहीं होता है ।

जे वराका लाहिए, त आंऊं बेठिस तरे कदम ।
को न वराको कितईं, ईं आइए मूंजा खसम ॥ ५०

जे = जो, बराका = छल कपट, लाहिए = उतारती हूँ, त = तो, आंऊ = मैं, बेठिस = बैठी हूं, तरे = नीचे, कदम = चरणोंमें, को = कोई भी, न = नहीं है, बराको = उलझन, कितई = कहीं, ईं = ऐसे, आइए = हो, मूंजा = मेरे, खसम = प्रियतम ।

यदि इस गुत्थीको दूर करते हैं तो मैं आपके चरणोंमें ही बैठी हुई (पाती) हूँ । आप ऐसे समर्थ स्वामी हैं कि आपके सामने कोई गुत्थी ही नहीं है ।

चुआं रूआं के न्हारियां, बेठो आइए मूं बट ।
लाहिए दममें तूंहीं धणी, अंखे कंनेजा पट ॥ ५१

चुआं = कहूँ, रूआं = रोकर, के = को, न्हारियां = देखूं तो, बेठो = बैठे, आइए = हो, मूं = मेरे, बट = पासमें, लाहिए = उतारते हैं, दममें = पल भरमें, तूंहीं = आप ही, धणी = प्रियतम, अंखे = नेत्र, कंनेजा = कानका, पट = परदा ।

मैं कुछ कहूँ, रोऊँ या देखूँ आप तो मेरे निकट ही बैठे हैं । मेरे कानों या आखों पर जो परदे हैं उन्हें आप क्षण मात्रमें ही दूर कर सकते हैं ।

सौ वराके हिकडी, गाल ईं आइए ।
मूंजो हल्ले न तिर जेतरो, हे पण चुआंथी तोहिजे चाइए ॥ ५२

सौ = सौ, बराके = बातकी, हिकडो = एक, गाल = बात, ईं = ऐसी, आइए = है, मूंजो = मेरा, हल्ले = चलता, न = नहीं, तिर = जरा, जेतरो = जितना, हे = यह, पण = भी, चुआंथी = कहती हूं, तोहिजे = आपके

ही, चाइए = केहेलवाने से ।

सैकड़ों गुत्थियोंका एक ही निचोड़ (सार) है कि आपके समक्ष मेरा तिलमात्र भी नहीं चलता है । यह भी आपके कहलानेसे ही कहती हूँ ।

तूं बंधे तूं छुडाइए, तित बी कांए न गाल ।
जीं फिराइए तीं फिरे, कौल फैल जे हाल ॥ ५३

तूं = आप, बंधे = बांधते, तूं = आप ही, छुडाइए = छुडाते, तित = वहां, बी = दूसरी, कांए = कुछ, न = नहीं, गाल = बात, जी = जैसे, फिराइए = फिराते, तीं = वैसे ही, फिरे = फिरती हूं, कौल = कहना, फैल = चलना, जे = रहना ।

(मायाके बन्धनोंमें) बाँधने वाले भी आप ही हैं और बन्धनसे छुड़ानेवाले भी आप ही हैं । इसमें अन्य कोई बात ही नहीं है । आप जिस ओर फिराएँगे हमारे मन, वचन एवं कर्म उसी ओर फिरेंगे ।

हांणे मोंहथीं मंगां मूं धणी, मूंजा सुणज सभ स्वाल ।
महामत चोए मूं लाडडा, धणी पार तूं नूरजमाल ॥ ५४

हांणे = अब, मोंहथी = मुखसे, मंगां = मांगती हूं, मूं = मेरे, धणी = प्रीतम, मूंजा = मेरे, सुणज = सुनिए, सभ = सम्पूर्ण, स्वाल = प्रश्न, महामत = महामति, चोए = कहते हैं, मूं = मेरा, लाडला = प्यार, धणी = प्रियतम, पार = पूर्ण करिए, तूं = आप ही, नूरजमाल = अक्षरातीत । हे मेरे प्रियतम धनी ! अब मैं मेरे मुखसे माँग रही हूँ, आप मेरे सभी प्रश्नोंको सुनें. महामति कहते हैं, हे मेरे अक्षरातीत स्वामी ! आप मेरे सभी लाड़ पूर्ण करें ।

प्रकरण ९ चौपाई ४३७

आसिकजा गुनाह

सुणो रूहें अरसजी, जा पांणमें बीती आए ।
जेहेडी लटी पांण केई, एहेडी करे न बी कांए ॥ १

सुणों = सुनिए, रुहें = आत्मायें, अरसजी = धामकी, जा = जो, पांणमें = हममें, बीती = गुजरी, आए = है, जेहडी = जैसे, लटी = उलटी, पांण

= हमनें, केई = किया, एहेडी = ऐसी, करे = करता, न = नहीं, बी = दूसरा, कांए = कोई भी ।

हे परमधामकी आत्माओ ! हम पर जो बीती है उसे सुनो, हमने जैसा विपरीत (उलटा) कार्य किया है वैसा अन्य कोई भी नहीं करता ।

चुआं तेहजो बेवरो, सुणजा कन डेई ।
डिठम से सहूर से, सहूर आंई पण करेजा सेई ॥ २

चुआं = कहती हूं, तेहजो = उनका, बेबरो = विवरण, सुणजा = सुनिए, कन = कान, डेई = देकर, डिठम = देखा, से = वह, सहूर = विचार, से = कर, आंई = तुम (आप), पण = भी, करेजा = करना, सेई = उसको ।

मैं उसका विवरण देती हूँ उसे ध्यान पूर्वक सुनो, मैंने उसे विवेक (ध्यान) पूर्वक देखा है । तुम भी उसी प्रकार विवेक पूर्वक विचार करना ।

पोए जा दिल अचे पांहिजे, पांण करियूं सेई ।
भूली रोए तेहेकीक, हथडा मथें डेई ॥ ३

पोए = पीछे, जा = जो, दिल = दिलमें, अचे = आवे, पांहिजे = आपके, पांण = हम, करियू = करेंगे, सेई = वही, भूली = भूल चूकी, रोए = रोती है, तेहेकीक = यथार्थ, हथडा = हाथ, मथें = ऊपर, डेई = देकर ।

तत्पश्चात् तुम्हारे मनमें जैसा ठीक लगेगा उसीके अनुरूप कार्य करना । किन्तु जो भूल जाएगी वह निश्चय ही सिर पर हाथ रख कर रोएगी ।

ते लाएं कीं भूलजे, आए हथ अवसर ।
पोए को पछताएजे, पेरो हल्लजे न न्हारे नजर ॥ ४

ते = इस, लाएं = लिए, कीं = क्यों, भूलजे = भूलें, आए = आया, हथ = हाथमें, अवसर = समय, पोए = पीछे, को = क्यों, पछताएजे = पश्चाताप, जे = करें, पेरो = पहले, हल्लजे = चलिए, न = नहीं, न्हारे = देखकर, नजर = आँखोसे ।

इसलिए हाथमें आए हुए अवसरको क्यों भूलें. पीछे क्यों पश्चात्ताप करना

पड़े । अतः पहलेसे ही दृष्टि (नजर) खोल कर क्यों न चलें ।

गिरो पांहिजी आसिक, चांऊं मंझ हिंनी ।
जा पर पसां पांहिजी, त असां हे अकल के डिंनी ॥ ५

गिरो = सखियाँ, पांहिजो = अपनेको, आसिक = प्रेमी, चांऊं = कहलाती, मंझ = बीचमें, हिंनी = इनके, जा पर = जिस तरफ, पसां = देखिए, पांहिजी = अपनी, त = तो, असां = हमको, हे = यह, अकल = बुद्धि, के = किसने, डिंनी = दिया ।

इस नश्वर जगतमें ब्रह्मात्माओंका समुदाय अनुरागी (आशिक) कहलाता है । जब अपनी ओर दृष्टि डालकर देखते हैं तो लगता है कि यह (ऐसी) बुद्धि हमें किसने दी है ?

खबर गिंनी धणीयजी, डिंनी लोकन के ।
आसिक के हे उलटी, पांण के लगी जे ॥ ६

खबर = वृतांत, गिंनी = लेकर, धणीयजी = प्रियतमका, डिंनी = दिया, लोकन = लोगों, के = को, आसिकके = प्रेमियोंके, हे = यह, उलटी = विपरित, पांणके = हमको, लगी = लगा, जे = जो ।

अपने प्रियतम धनीका समाचार लेकर जगतके लोगोंको सुनाना (देना), यह अनुरागिणी (आशिक) आत्माके लिए विपरीत आचरण (कार्य) है। वह दोष हमें लगा है ।

मिठो गुझ मासूकजो, आसिक केके न चोए ।
पडोसन पण न सुणे, ईं आसिक गुझी रोए ॥ ७

मिठो = मीठा, गुझ = गोपनीय, मासूकजो = प्रियतमका, आसिक = प्रेमी, केके = किसे, न = नहीं, चोए = कहते हैं, पडोसन = पडोसी, पण = भी, न = नहीं, सुणे = सुनती है, ईं = ऐसे, आसिक = प्रेमी, गुझी = छिपकर, रोए = रोती है ।

प्रियतमा अपने प्रियतमकी मधुर गूढ़ बातें किसीको भी नहीं कहती है। इतना ही नहीं पड़ोसी भी न सुने, इस प्रकार अनुरागिणी आत्मा गुप्त रूपसे रोती है ।

आसिक चोंजे तिनके, थिए पिरी उतां कुरबान ।
सय भतें मासूकजा, सुख गुझां गिंने पांण ॥ ८

आसिक = प्रेमी, चोंजे = कहिए, तिनके = उनको, थिए = हों, पिरी = प्रियतम, उतां = ऊपर, कुरबान = समर्पण, सय = सौ, भतें = तरह, मासूकजा = प्रियतमका, सुख = आनन्द, गुझां = छिपकर, गिंने = लें, पांण = आप ।

अनुरागिणी आत्मा वह कहलाती है जो अपने प्रियतम धनी पर समर्पित होती हो और अनेकों (सैकड़ों) प्रकारसे अपने प्रियतमके आनन्दको गुप्त रूपसे प्राप्त करती हो ।

जे कोडी पोन कसाला, त करे न केके जांण ।
गिंनी कायम सुख धणीयजा, बोले ना के सांण ॥ ९

जे = जो, कोडी = करोडों, पोन = पहुंचे, कसाला = दुःख, त = तो, करे = करते, न = नहीं, केके = किसीको, जांण = जानकारी, गिंनी = लेकर, कायम = अखण्ड, सुख = आनन्द, धणीयजा = प्रियतमका, बोले = कहें, ना = नहीं, के = किसीको, सांण = खबर ।

कदाचित करोड़ों कष्ट आ जाएँ तो भी वह किसीको इसकी जानकारी नहीं देती है । इस प्रकार अनुरागिणी आत्मा अपने धनीके अखण्ड सुख प्राप्त कर उनके विषयमें किसीसे भी बात नहीं करती है ।

गिंनी गुझां सुख पिरनजा, रहे मंझ सैयन ।
पांण गुझ मासूकजो, न बुझाए बियन ॥ १०

गिंनी = लेकर, गुंझा = गोपनीय, सुख = आनन्द, पिरनजा = प्रियतमका, रहे = रहे, मंझ = बीच, सैयन = सखियोंके, पांण = अपना, गुझ = रहस्य, मासूकजो = प्रीतमका, न = नहीं, बुझाए = कहते, बियन = दूसरोंको ।

वह अपने प्रियतम धनीका सुख गुप्त रूपसे प्राप्त कर सखियोंके बीच रहती हुई भी प्रियतमकी गुप्त बातें उनसे नहीं कहती है ।

तिंनी के पण न चोए, जे हिन सुखज्यूं आईन ।
त चुआं कुजाडो तिनके, जे बाहेर धांऊं पाईन ॥ ११

तिंनी = उन, के = को, पण = भी, न = नहीं, चोए = कहती, जे = जो, हिन = इन, सुखज्यूं, आनन्दकी = आईन = है, त = तो, चुआं = कहूं, कुजाडो = क्या, तिनके = उनको, जे = जो, बाहेर = जाहेर, धांऊं = पुकार, पाईन = करती है ।

जो सखियाँ उसी आनन्दको प्राप्त करतीं हैं उनको भी वह अपनी बातें नहीं कहती है। उन सखियोंके विषयमें क्या कहें जो अपनी बात अन्य सखियोंके समक्ष पुकार-पुकार कर प्रकट करतीं हैं ।

मासूक कोठे पांणके, पांण भायूं हित रहूं ।
गिंनी गुझ सुख मासूकजो, दुनियांके चऊं ॥ १२

मासूक = प्रियतम, कोठे = बुलाते हैं, पांणके = हमें, पांण = हम, भायूं = चाहते, हित = यहाँ, रहूं = रहना, गिंनी = लेकर, गुझ = रहस्य, सुख = आनन्द, मासूकजो = प्रियतमका, दुनियांके = संसारको, चंऊ = कहती हूँ ।

प्रियतम धनी हमें बुला रहे हैं परन्तु हम यहीं रहना चाहतीं हैं और प्रियतमसे प्राप्त गुह्य सुखोंको जगतके समक्ष कहती फिरतीं हैं ।

कडीं आसिक हेडी ना करे, कांध कोठींदे पांहीं रहे ।
सुख छडे बका धणीयजा, डुख कुफरमे पए ॥ १३

कडी = कभी, आसिक = प्रेमी, हेडी = ऐसा, ना = नहीं, करे = करती है, कांध = प्रियतम, कोठींदे = बुलानेसे, पांहीं = पीछे, रहे = रहे, सुख = आनन्द, छडे = छोड़कर, बका = अखण्ड, धणीयजा = प्रियतमका, डुख = दुःख, कुफरमें = झूठमें, पए = रह गया ।

अनुरागिणी आत्मा ऐसा कभी नहीं करती कि प्रियतमके बुलाने पर भी वह पीछे रह जाती हो और अपने अखण्ड सुखोंको छोड़ कर झूठे दुःखोंमें ही पड़ी रहती हो ।

जे के वलहो होए मासूक, तेहजा वलहा लगे वेंण ।
से कीं डिए डुझणे, जे वलहो होए सेंण ॥ १४

जे के = जिनको, बलहो = प्यारा, होए = हों, मासूक = प्रियतम, तेहजा = उनको, बलहा = प्यार, लगे = लगता, वेंण = वचन, से = वह, कीं = कैसे, डिए = दिया, डुझणे = दुश्मनको, जे = जिसे, वलहो = प्यारा, होए = हों, सेंण = प्रीतम ।

जिसको अपने धनी प्रिय लगते हैं उसे उनके वचन भी प्यारे लगते हैं. यदि प्रियतम धनी प्रिय हैं तो उनका सुख वह दुश्मनोंको क्यों देगी (बताएगी) ।

आसिक कडीं न करे, हेडी अवरी गाल ।
चोणों गुझ लोकन के, पाए बिछोडो नूरजमाल ॥ १५

आसिक = प्रेमी, कडी = कभी भी, न = नहीं, करे = करता, हेडी = ऐसी, अवरी = उलटी, गाल = बात, चोंणों = कहते, गुझ = छिपा हुआ, लोकन = लोगों, के = को, पाए = पाकर, विछोडो = जुदाई, नूरजमाल = अक्षरातीत धनी ।

अनुरागिणी आत्मा ऐसी विपरीत बात कभी भी नहीं करती कि अपने प्रियतम धनीका वियोग होने पर उनकी गुप्त बातें अन्य लोगोंको कहती फिरती हो ।

आसिक गुझ मासूकजो, गिंनेथी रोए रोए ।
डिसों ऊंधी अकल आसिकजी, बिंजी बियनके चोए ॥ १६

आसिक = प्रेमी, गुझ = रहस्य पूर्ण, मासूकजो = प्रियतमका, गिंनेथी = लेती है, रोए = रो, रोए = रारोकर, डिसों = देखो, ऊंधी = उलटी, अकल = बुद्धि, आसिकजी = प्रेमीका, बिंजी = जाकर, बियनके = दूसरोंको, चोए = कहते हैं ।

अनुरागिणी आत्मा अपने प्रियतम धनीके गूढ़ सुखोंको रो-रोकर प्राप्त करती है. अनुरागिणीकी विपरीत बुद्धिको तो देखो, वह जा-जाकर दूसरोंको कह रही है ।

हे निपट निवर्यूं गालियूं, थिएथ्यूं पांण हथां ।
जेडी थेई रांदमें पांणसे, हेडी थेई न के मथां ॥ १७

हे = यह, निपट = निश्चय, निवर्यूं = बेशरम, गालियूं = बातें, थियथ्यूं = होती है, पांण = अपने, हथां = हाथों, जेडी = जैसी, थेई = हुई, रांदमें = खेलके बीचमें, पांणसे = हमारेसे, हेडी = ऐसी, थेई = हुई, न = नहीं, के = किसीके, मथां = ऊपर ।

निश्चय ही यह निर्लज्जतापूर्ण कार्य हमारे हाथोंसे हुआ है । इस खेलमें हमसे जैसी (भूल) हुई है वैसी किसीसे भी नहीं हुई है ।

आसिक चाए पांणके, हेडी करे न कोए ।
कोठी न बंजे कांधजी, सा निखर भाइजा जोए ॥ १८

आसिक = प्रेमी, चाए = कहलाकर, पांणके = आपको, हेडी = ऐसी, करे = करती, न = नहीं, कोए = कोई भी, कोठी = बुलानेसे, न = नहीं, बंजे = जाते, कांधजी = प्रियतमजी, सा = वह, निखर = अविश्वासी, भाइजा = जानना, जोए = औरत ।

स्वयंको अनुरागिणी कहलानेवाली आत्मा ऐसी भूल कभी नहीं करती है । जो प्रियतमा अपने प्रियतमके बुलाने पर भी नहीं जाती है वह अविश्वासिनी कहलाती है ।

गुझ पिरीजो आसिक, कडी न केके चोए ।
जे पोन कसाला कोडई, त वर मंझाई रोए ॥ १९

गुझ = छिपा हुआ, पिरी जो = प्रियतमका, आसिक = प्रेमी, कडी = कभी भी, न = नहीं, केके = किसीको, चोए = कहती है, जे = जो, पोन = पडे, कसाला = दुःख, कोडई = करोडों, त = तो, बर = बाहर, मंझाई = अन्दर, रोए = रोती है ।

अनुरागिणी आत्मा अपने प्रियतमकी गुप्त बातें किसीसे भी नहीं कहती है । यदि करोड़ों दुःख आ भी जाएँ तो भी वह अन्दर ही अन्दर रोती है ।

हिक गुझ केयोसी पधरो, ब्यो कोठींदे न बेयूं ।
हेडी हिकडी कोए न करे, से पांण हथां बए थेयूं ॥ २०

हिक = एक, गुझ = गोपनीय, केयोसी = किया, पधरो = जाहेर, ब्यो =

दूसरा, कोठींदे = बुलानेसे, न = नहीं, बेयूं = गये, हेडी = ऐसी, हिकडी = एक भी, कोए = कोई, न = नहीं, करे = करती, से = वह, पांण = अपने, हथां = हाथोंसे, बए = दो, थेयूं = हुई ।

हमने एक तो धनीकी गुप्त बातें प्रकट कीं दूसरा उनके बुलाने पर नहीं गईं । ऐसी एक भी भूल कोई नहीं करता परन्तु हमारे हाथोंसे दोनों हुई है ।

हेडी पांणके न घटे, पांण चायूं अरसज्यूं ।
जे सऊर करे डिठम, त हेडो जुलम करिएथ्यूं ॥ २१

हेडी = ऐसी, पांणके = अपना(हमको) न = नहीं, घटे = शोभा देती, पांण = हम, चायूं = कहलाते, अरसज्यूं = परमधामकी, जे = जो, सऊर = विचार, करे = करके, डिठम = देखा, त = तो, हेडो = ऐसा, जुलुम = अन्याय, करिएथ्यूं = किया गया है ।

ऐसी भूल हमें शोभा नहीं देती है । क्योंकि हम तो परमधामकी आत्माएँ कहलातीं हैं. यदि हम विचार पूर्वक देखतीं हैं तो ज्ञात होता है कि हम बड़ी भारी भूल कर रहीं हैं ।

पांण चऊं कूडी दुनियां, तेमें हेडी केई न के ।
उलट्यूं बे अकल्यूं, थेयूं पांण सचीयसे ॥ २२

पांण = हम(मैं), चऊं = कहती हूँ, कूडी = झूठी, दुनिया = संसार, तेमें = उसमें, हेडी = ऐसी, केई = करती, न = नहीं, के = कोई, उलट्यूं = उलटी, बे = नहीं, अकल्यूं = समझ, थेयूं = हुआ, पांण = हमको, सचीयसे = सच्चाईसे ।

हम जिस दुनियाको झूठी कहतीं हैं उनमें भी कोई ऐसी (भूल) नहीं करते हैं। हम सत्य कहलाने वालोंसे ऐसा विपरीत तथा मूर्खतापूर्ण कार्य हो गया है ।

जडे गुणा डिठम पांहिजा, द्रिनिस घणूं हिकार ।
तरसी न्हारयम हक अडां, कियम पांण पुकार ॥ २३

जडे = जब, गुणा = दोष, डिठम = देखा, पांहिजां = अपना, द्रिनीस = डरी, घणूं = बहुत, हिकार = एक बार, तरसी = डरकर, न्हारयम = देखा गया, हक = धनीजी, अडां = तरफ, कियम = किया, पांण = आपने, पुकार = आवाज ।

जब मैंने अपने दोषोंकी ओर देखा तो मैं एक बार बहुत डर भी गई। डरके मारे मैंने प्रियतम धनीकी ओर देखा और स्वयं पुकार की।

गुणा डिठम पांहिजा, धणीजा आसांन।
उमर बेई धांऊं पांईदे, जफा डिठम जांण ॥ २४

गुणा = दोष, डिठम = देखा, पांहिजा = अपने, धणीजा = प्रियतमके, आसांन = एहसान, उमर = आयु, बेई = गई, धांऊं = पुकार, पांईदे = करते, जफा = नुकसान, डिठम = देखा, जांण = अङ्गका।

मैंने अपने दोष (अपराध) तथा प्रियतम धनीके उपकार (दोनों) देखे। फिर पुकार करते-करते पूरी आयु व्यतीत हो गई जिससे जीवनमें बड़ी हानि हुई।

किने न केयो कडईं, हेडो अधम कम।
डिसी डोह पांहिजो, फिरी करियूं कीं जुलम ॥ २५

किने = किसीने, न = नहीं, केयो = किया, कडईं = कभी भी, हेडो = ऐसा, अधम = नींच, कम = कार्य, डिसी = देखा, डोह = दोष, पांहिजो = अपना, फिरी = फिर, करियूं = किया, कीं = क्यों, जुलम = अपराध।

ऐसा अधम कार्य आज तक किसीने नहीं किया है। अपना दोष देख कर भी मैंने ऐसा अपराध क्यों किया ?

डाई जोए कीं करे, डिसी अंखिएं डो।
जीं जांणे तीं करे, मथें हुकम धणी जो ॥ २६

डाई = चतुर, जोए = औरत, कीं = कैसे, करे = करके, डिसी = देखकर, अंखिएं = आंखोसे, डो = दोष, जीं = जैसे,(जो) जांणे = जानो, तीं = वही, करे = करो, मथें = ऊपर, हुकम = आज्ञा, धणी = प्रीतम, जो = का।

चतुर अङ्गना (स्त्री) अपनी आँखोंसे देखकर ऐसा अपराध नहीं करती है। वह तो अपने धनीके आदेशके अधीन रहती है और मानती है कि वे जैसा ठीक समझें वैसा ही करें।

पांण फिरी जा न्हारियां, त गाल थेई हथ धणी ।
हित बे केहजो न हल्ले, जे करे दानाई घणी ॥ २७

पांण = अपना, फिरी = घुमकर, जा = जो, न्हारियां = देखती हूँ, त = तो, गाल = बात, थेई = हुई, हथ = हाथ, धणी = प्रियतमके, हित = यहाँ, बे = दूसरा, केहजो = किसीका, न = नहीं, हल्ले = चलता है, जे = जो, करे = करे, दानाई = चतुराई, घणी = बहुत ।

हम पुनः इस पर विचार कर देखते हैं तो ज्ञात होता है कि यह सब बात धामधनीके हाथोंमें है । यहाँ पर अन्य किसीका भी कुछ नहीं चलता है, चाहे वह कितनी भी चतुराई क्यों न करे ।

न्हारयम इलम धणीयजो, सभ हुकमें केयो ख्याल ।
बियो कोए न कितईं, रे हुकम नूरजमाल ॥ २८

न्हारयम = देखा, इलम = ज्ञान, धणीयजो = प्रियतमका, सभ = सम्पूर्ण, हुकमें = आदेशसे, केयो = किया, ख्याल = खेल, बियो = दूसरा, कोए = कोई, न = नहीं है, कितईं = कहीं, रे = बिना, हुकुम = हुकुम, नूरजमाल = अक्षरातीत धनीके ।

जब धामधनीके ज्ञान (तारतम ज्ञान) से देखा तो ज्ञात हुआ कि यह सब खेल धामधनीके आदेशसे ही बना है । इसलिए इसमें अक्षरातीत धनीके आदेशके अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं है ।

गुणा डिठम पांहिजा, जडे न्हारयम दिल धरे ।
हे पण गुणो खुदीयजो, जे फिरी न्हारयम सऊर करे ॥ २९

गुणा = दोष, डिठम = देखा, पांहिजा = अपना, जडे = जब, थेयम = हुआ, जांण = जानकारी, गुणा = दोष, डिठम = देखा, से = वह, पण = भी, खुदी = अहंकार, तरसीस = डरकर, पसी = देखा, पांण = आप।

जब मैंने हृदयपूर्वक देखा तो मुझे अपने ही दोष दिखाई दिए. फिर इस पर विचार किया तो पाया कि ये दोष अहङ्कारजन्य हैं ।

गुणा डिठम पांहिजा, जडे थेयम जांण ।
गुणा डिठम से पण खुदी, तरसीस पसी पांण ॥ ३०

गुणा = दोष, डिठम = देखा, पांहिजा = अपना, जडे = जब, थेयम = हुआ, जांण = जानकारी, गुणा = दोष, डिठम = देखा, से = वह, पण = भी, खुदी = अहंकार, तरसीस = डरकर, पसी = देखा, पांण = आप ।

जब मुझे ज्ञान हुआ तब मैंने अपने ही दोषोंको देखा । मुझे ज्ञात हुआ कि ये दोष भी अहङ्कारसे उत्पन्न हुए हैं । तब मैं स्वयंको देखकर डर गई ।

गुणा केयम अजांणमें, गुणा डिठम मय अजांण ।
दम न चुरे रे हुकम, जडे धणी पूरी डिंनी पेहेचान ॥ ३१

गुणा = दोष, केयम = किया, अजांणमें = अज्ञानमें, गुणा = दोष, डिठम = देखा, मय = बीच, अजांण = अन्जानमें, गुणा = दोष, डिठम = देखा, मय = बीच, अजांण = अन्जान, दम = थोडा, न = नहीं, चुरे = चलता, रे = बिना, हुकम = आदेश, जडे = जब, धणी = प्रीतम, पूरी = पूरी, डिंनी = दिया, पेहेचान = जानकारी ।

मैंने भूल भी अज्ञान अवस्थामें ही की है और उसे देखा भी अज्ञान अवस्थामें ही । जब धनीने पूर्ण पहचान करवा दी तब ज्ञात हुआ कि उनके आदेशके बिना एक श्वास भी नहीं लिया जा सकता है ।

जांण गिडम से पण खुदी, आंऊं जुदी थियां हिनसे ।
जुदी रहां त पण खुदी, खुदी किएं न निकरे हिनमें ॥ ३२

जांण = पहचान, गिडम = लिया, से = वह, पण = भी, खुदी = अभिमान, किएं = किसी प्रकार, न = नहीं, निकरे = जाता, हिनमें = इनमेंसे ।

'मैंने जान लिया है' यह भी एक अहङ्कार ही है. मैं स्वयं तो इससे भिन्न हूँ. 'मैं अहंभावसे दूर हो जाऊँ' यह (कहना) भी तो एक अहङ्कार ही है । इस प्रकार यह अहङ्कार किसी भी प्रकारसे दूर नहीं होता है ।

महामत चोए हे मोमिनो, कोई कितईं न धणी रे ।
फिरी फिरी लख भेरां, न्हारयम सऊर करे ॥ ३३

महामत = महामति, चोए = कहते हैं, हे = ए, मोमिनो = साथजी, कोई = कोई, कितईं = कहीं, न = नहीं, धणी = प्रियतमके, रे = बिना, फिरी फिरी = पुनः पुनः, लख = लाखों, भेरां = बार, न्हारयम = देखा, सऊर = विचार, करे = करके ।

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! धामधनीके बिना कुछ भी कहीं भी नहीं है । मैंने पुनः पुनः लाखों बार विचार करके देख लिया है ।

प्रकरण १० चौपाई ४७०

खुदी पेहेचान

लखे भतें न्हारयम, खुदी बंजे न किएं केई ।
हे मूर मंझा कीं निकरे, जा कांधे डेखारई बेई ॥ १

लखें = लाखों, भते = तरहसे, न्हारयम = देखा, खुदी = अहंकार, बंजे = जाता, न = नहीं, किए = कैसे, केई = किया, हे = यह, मूर = मूल, मंझां = बीचमें, कीं = कैसे, निकरे = निकले, जा = जो, कांधे = धनीने, डेखारई = दिखाया, बेई = दूसरी ।

मैंने लाखों प्रकारसे देखा किन्तु यह अहंभाव किसी भी प्रकारसे जाता ही नहीं है । यह जड़-मूलसे कैसे निकलेगा, जब धामधनीने ही इसे द्वैत (माया) के रूपमें दिखा दिया है ।

जे घुरां इसक, त हित पण पसां पांण ।
हे पण खुदी डिठम, जडे थेयम हक पेहेचान ॥ २

जे = जो, घुरां = मांगती हूं, इसक = प्रेम, त = तो, हित = यहाँ, पण = भी, पसां = देखती हूँ, पांण = आपको, हे = यह, पण = भी, खुदी = अहंकार, डिठम = देखा, जडे = जब, थेयम = हुआ, हक = प्रीतम, पेहेचान = जानकारी ।

यदि मैं प्रियतम धनीका प्रेम माँगती हूँ तो उसमें भी अपना अहंभाव दिखाई देता है । जब मैंने धनीकी पहचान की, उसमें भी अहंभाव ही देखा ।

हक पेहेचान केके थेई, हित बिओ न कोई आए ।
जे कढे बारीकियूं खुदियूं, डे थो हक सांजाए ॥ ३

हक = प्रियतमका, पेहेचान = पहचान, केके = किसको, थेई = हुआ, हित = यहाँ, बिओ = दूसरा, न = नहीं, कोई = कोई, आए = है, जे = जो, कढे = निकाले, बारीकियूं = सूक्ष्म, खुदियूं = अपनापन, डे = देते, थो = हो, हक = धनी, सांजाए = पहचान ।

यहाँ पर परब्रह्म परमात्माकी पहचान किसको हुई है । यहाँ तो कोई दूसरा ऐसा है ही नहीं जो अहङ्कारकी सूक्ष्मताको दूर कर परमात्माकी पहचान करवा दे ।

तन पांहिजा अरसमें, से तां सुतां निद्रमें ।
जागेथो हिक खावंद, ही निद्रडी आं दीजे ॥ ४

तन = शरीर, पांहिजा = अपना, अरसमें = धाममें, से = वह, तां = तो, सुतां = सोये हैं, निद्रमें = नींदमें, जागेथो = जाग्रत हैं, हिक = एक, खावंद = प्रियतम, हे = यह, निद्रडी = नींद, आं आपने, दी = दिया, जे = जिसने ।

हमारे मूल तन (पर-आत्मा) परमधाममें निद्रावस्थामें हैं । वहाँ पर मात्र धामधनी ही जागृत हैं जिन्होंने यह निद्रा दी है ।

डेई रूहें के निद्रडी, डिखार्यांई हे रांद ।
हे केर डिसेथो रांदके, हित को आए हुकम रे कांध ॥ ५

डेई = देकर, रूहें = आत्माओं, के = को, निद्रडी = नींद, डिखार्यांई = दिखाया है, हे = यह, रांद = खेल, हे = यह, केर = कौन, डिसेथो = देखता है, रांदके = खेलको, हित = यहां, को = कोई, आए = है, हुकुम = आज्ञा, रे = बिना, कांध = प्रियतम ।

उन्होंने ही ब्रह्मात्माओंको नींद देकर यह खेल दिखाया है । वास्तवमें इस खेलको कौन देख रहा है, यहाँ पर तो धामधनीके आदेशके अतिरिक्त अन्य है ही कौन ?

पांण तां सुत्यूं अरसमें, तरे धणी कदम ।
जे रमे रमाडे रांदमें, बिओ कोए आए रे हुकम ॥ ६

पांण = अपना, तां = तो, सुत्यूं = सोये हैं, अरसमें = परमधाममें, तरे = नीचे, धणी = प्रियतम, कदम = चरणोंमें, जे = जो, रमें = खेले, रमाडे = खेलावे, रांदमें = खेलमें, बिओ = दूसरा, कोए = कोई, आए = है, रे = बिना, हुकुम = आज्ञाके ।

हम ब्रह्मात्माएँ तो परमधाममें धामधनीके चरण तले सोई हुईं हैं । इस खेलमें जो खेल रहा है वह धामधनीके आदेशके अतिरिक्त अन्य कौन हो सकता है ?

धणी या रांद बिचमें, पडदो तो वजूद ।
पुठ डेई हकके ही पसो, हेजो न्हाए कीं नाबूद ॥ ७

धणी = प्रीतम, या = और, रांद = बिचमें, पडदो = परदा, तो = आपका, वजूद = शरीर, पुठ = पीठ, डेई = देकर, हकके = धनीको, ही = यह, पसो = देखती हूँ, हेजो = यह जो, न्हाए = नहीं, कीं = कुछ, नाबूद = नाशवंत ।

इस खेलमें प्रियतम धनी और हमारे बीच नश्वर शरीर ही परदा है । इसलिए धामधनीको पीठ देकर मैं यह नश्वर जगतको देख रही हूँ, जिसका कोई अस्तित्व ही नहीं है ।

हित हुकम हिकडो हकजो, उनहीं हकजो इलम ।
हुकम इलम या रांद के, पसो बेठ्यूं तरे कदम ॥ ८

हित = यहाँ, हुकम = आदेश, हिकडो = एक, हकजो = प्रियतमका, उनहीं = वे ही, हकजो = प्रीतमका, इलम = ज्ञान है, हुकुम = आदेश, इलम = ज्ञान, या = या, रांद = खेल, के = में, पसो = देखा, बैठयूं = बैठके, तरे = नीचे, कदम = चरणोंमें ।

यहाँ पर सर्वत्र एक धामधनीका ही आदेश है और उनका ही ज्ञान है । मैं उनके चरणोंमें बैठकर इस खेलमें कार्यरत उनके आदेश और ज्ञानको देख रही हूँ ।

चोए इलम कुंजी अंईं, पट पण आयो अंईं ।
अकल आंजी अगरे, पसो उलटी या सईं ॥ ९

चोए = कहते हैं, इलम = ज्ञान, कुंजी = चाबी, अंईं = आप हो, पट = परदा, पण = भी, आयो = हो, अंईं = आप, अकल = बुद्धि, आंजी = आपकी, अगरे = अधिक है, पसो = देखो, उलटी, या = अथवा, सईं = सीधी ।

हे धनी ! आपका तारतम ज्ञान कहता है कि कुञ्जी भी आपकी ही है और परदा भी आप ही है । देखो ! उलटी या सीधी बुद्धि भी आपकी ही अधिक है ।

हे रांद हुकम इलमजी, पाण के सुतडे डिखारे ।
खिल्लण बिच अरसजे, पांणके रांदयूं थोकारे ॥ १०

हे = यह, रांद = खेल, हुकम = आज्ञा, इलमजी = ज्ञानका, पांण = हम, के = को, सुतडे = सोये हुए में, डिखारे = दिखाया, खिल्लण = हँसानेको, बिच = बीचमें, अरसजे = धामके, पांणके = हमको, रांदयूं = खेल, थो = है, कारे = करते ।

आपने ही हमें अपने आदेश एवं ज्ञानसे यह खेल स्वप्नमें दिखाया है । परमधाममें हम पर हँसी करनेके लिए ही धामधनी हमें यह खेल खेला रहे हैं ।

हित बेयो कोई न कितईं, सभ डिसे हुकम इलम ।
जे उडे नाबूद हुकमें, त पसो बेठ्यूं तरे कदम ॥ ११

हित = यहाँ, बेओ = दूसरा, कोए = कोई, न = नहीं, सभ = सम्पूर्ण, डिसे = दिखता है, हुकुम = आदेश, इलम = ज्ञान, जे = जो, उडे = मिट जाता है, नाबूद = नाशवंत, हुकुमें = आज्ञासे, त = तो, पसो = देखूं, बेठ्यू = बैठकर, तरे = नीचे, कदम = चरणोंमें ।

यहाँ पर अन्य कोई कहीं नहीं है. सर्वत्र धामधनीका आदेश और ज्ञान ही दिखाई देते हैं. आपके आदेशसे जब यह नश्वर जगत (तन) उड़ जाएगा तब हम आपके चरणोंमें ही बैठी हुई पाएँगी ।

धणी द्वार डिंनो असां हथमें, बिओ इलम डिनाऊं जांण ।
त कीं सहूं आडो पट, को न उपट्यू पांण ॥ १२

धणी = प्रियतमनें, द्वार = दरवाजा, डिंनो = दिया, असां = हमारे, हथमें = अधिकारमें, बिओ = दूसरे, इलम = ज्ञानसे, डिनाऊं = दिया, जांण = जानकारी, त = तो, कीं = क्यों, सहूं = सहन करूं, आडो = बीचमें, पट = परदा, को = क्यों, न = नहीं, उपट्यूं = खोलुं, पांण = स्वयं ।

हे धनी ! आपने परमधामका द्वार भी हमारे हाथोंमें सौंप दिया है और अपनी पहचानके लिए तारतम ज्ञान भी दिया । अब मैं आप और मेरे बीच इस परदे (तन) को कैसे सहन करूँ ? इसको स्वयं क्यों न खोल दूँ ?

जे रे हुकम पट खोलियां, त द्रजां खुदीजे गुने ।
नतां कुंजी डिंनाऊं हथ आसिक, सा मासूक बिछोडो कीं सहे ॥ १३

जे = जो, रे = बिना, हुकुम = आज्ञा, पट = परदा, खोलियां = खोलूं, त = तो, द्रजां = डरती हूं, खुदीजे = अहांकारके, गुने = दोषसे, नतां = नहीं तो, कुंजी = चाबी, डिंनाऊं = दिया, हथ = हाथ, आसिक = प्रेमीको, सा = वह, मासूक = प्रियतम, बिछोडो = जुदाई, कीं = कैसे, सहे = सहन करें ।

यदि मैं आपके आदेशके बिना ही परदा खोल दूँ तो अपने अहंभावके दोषसे डरती हूँ, अन्यथा आपने इस अनुरागिणीके हाथ कुञ्जी दे ही दी है तो वह अपने प्रियतमका वियोग क्यों सहन करे ?

जे होयम जरा इसक, त न पसां खुदी हुकम ।
पण हिक न्हाएम इसक, बिओ पसां आडो हुकम इलम ॥ १४

जे = जो, होयम = होय, जरा = थोडासा, इसक = प्रेम, त = तो, न = नहीं, पसां = देखती, खुदी = अहंकार, हुकम = आज्ञा, पण = परन्तु, हिक = एक, न्हाएम = नहीं है, इसक = प्रेम, बिओ = दूसरा, पसां = देखती हूँ, आडो = बीच, हुकम = आदेश, इलम = ज्ञानको ।

यदि मुझमें लेशमात्र (थोड़ा-सा) भी प्रेम होता तो मैं आपके आदेशकी ओर क्यों देखती ? किन्तु मुझमें एक प्रेम ही नहीं है । इसलिए मैं ज्ञान और आदेशको दूसरे व्यवधानके रूपमें देखती हूँ ।

न तां जे दर उपटियां, पसण धणी रेहेमान ।
कीं न्हारियां बाट हुकमजी, धणी डिंनी कुंजी पेहेचान ॥ १५

न = नहीं, तां = तो, जे = जो, दर = दरवाजा, उपटियां = खोलकर, पसण = देखा, धणी = प्रीतम, रेहेमान = दयालु हैं, कीं = क्यों, न्हारियां = देखूं, बाट = रास्ता, हुकमजी = आज्ञाकी, धणी = प्रियतमने, डिंनी = दिया, कुंजी = चाबी, पेहेचान = जानकारी ।

अन्यथा परम कृपालु धनीके दर्शनके लिए द्वार खोल देती । जब धामधनीने मुझे तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी देकर अपनी पहचान करवा दी है तो अब उनके आदेशकी राह क्यों देखूँ ?

सुकेमें डिंया कीं डुबियूं, जे अचिम जरा इसक ।
त हुकुम खुदी न्हाए गुणो, पट दम न रखे बेसक ॥ १६

सुकेमें = बिना पानीके, डियां = देऊं, कीं = कैसे, डुबियूं = डुबकी, जे = जो, अचिम = आवे, जरा = थोडा, इसक = प्रेम, त = तो, हुकम = आदेश, खुदी = अभिमान, न्हाए = नहीं, गुणो = अवगुण, पट = परदा, दम = क्षण, न रखे = नहीं रखे, बेसक = निश्चय करके ।

यदि लेश मात्र भी प्रेम होता तो मैं शुष्क (सूखेमें) डूबकियाँ कैसे लगाती । तब आदेश और अहंभावका कोई दोष नहीं रह जाता । प्रेम निश्चय ही क्षण मात्रके लिए भी परदा रहने नहीं देता है ।

इसक मंगां त गुणो, खुदी पण गुनेगार ।
हुकम इलमजे न्हारियां, त आंऊं बंधिस बिंनी पार ॥ १७

इसक = प्रेम, मंगां = मांगती हूँ, त = तो, गुणो = गुनाह, खुदी = अहंभाव, पण = भी, गुनेगार = दोषित, हुकम = आज्ञा, इलम = ज्ञान, जे = जो, न्हारियां = देखती हूँ, त = तो, आंऊं = मैं, बंधिस = बँध गई हूँ, बिंनी = दोनों, पार = तरफसे ।

प्रेम माँगती हूँ तो भी दोष लगता है. अहंभाव भी स्वयं दोष स्वरूप है. यदि मैं आदेश और ज्ञानकी ओर देखती हूँ तो दोनों ओरसे बँध गई हूँ ।

जे सऊर करे न्हारियां, त खुदी मंगण तरे हुकम ।
त दर उपटे पांहिजो, गडजां को न खसम ॥ १८

जे = जो, सऊर = विचार, करे = करके, न्हारियां = देखा, त = तो, खुदी = मैं पना, मंगण = मांगना, तरे = नीचे, हुकुम = आज्ञा, त = तो, दर = द्वार, उपटे = खोलके, पांहिजो = अपने, (हम), गडजां = मिलें, को = क्यों, न = नहीं, खसम = प्रीतमसे ।

जब विचार कर विवेक पूर्वक देखती हूँ तो मेरा अहंभाव तथा याचना (माँगना) दोनों ही आदेशके अधीन हैं. तो फिर द्वार खोलकर अपने प्रियतम धनीसे क्यों न मिलूँ ?

खुदी गुणो हुकमें, घुरां कुछां हुकम ।
पट लाहियां या जे करियां, सभ हुकमें चयो इलम ॥ १९

खुदी = अहंपना, गुणो = दोष, हुकमे = आज्ञासे, घुरां = मांगना, कुछां = बोलना, पट = परदा, लाहियां = उतारना, या = अथवा, जे = जो, करियां = भी करती हूं, सभ = सभी, हुकमें = आज्ञासे, चयो = कहा, इलम = ज्ञान ।

मेरा अहंभावरूप दोष, याचना (माँगना) तथा बोलना भी आपके आदेशके अधीन है । फिर परदा दूर करूँ या जो भी करूँ वे सब आपके आदेशसे ही होता है । तारतम ज्ञान हमें इस प्रकारकी समझ देता है ।

हित खुदी न गुणो के सिर, दर उपट या ढक ।
पस पिरी या रांद के, आखर ईं चोए इलम हक ॥ २०

हित = यहाँ, खुदी = अभिमान, न = नहीं, गुणों = दोष, के = किसके, सिर = ऊपर, दर = द्वार, उपट = खोलना, या = अथवा, ढक = बंद रखना, पस = देखो, पिरी = प्रियतम, या = अथवा, रांद = खेल, के = को, आखर = अन्तमें, ईं = इस प्रकार, चोए = कहते हैं, इलम = ज्ञान, हक = परमात्मा ।

यहाँ पर (इस खेलमें) अहंभावका दोष भी किसीके सिर पर नहीं है । भला,

द्वार खोलो या बँध रखो । अपने धनीकी ओर देखो या खेलको देखो । धामधनीका तारतम ज्ञान अन्तिममें यही कहता है (यह सब आदेशके अधीन है) ।

सभ डिंनो दिल मोमिनजे, जो मोमिन दिल अरस ।
पस पांण पांहिजे दिलमें, दिल मोमिन अरस परस ॥ २१

सभ = सम्पूर्ण, डिंनो = दिया, दिल = दिल, मोमिनजे = ब्रह्मसृष्टियोंके, जो = जो, अरस = परमधाम, पस = देखो, पांण = आप, पांहिजे = आपके, दिलमें = दिलमें, मोमिन = ब्रह्मसृष्टि, अरस परस = एक आपसमें ।

जिन ब्रह्मात्माओंका हृदय परमधाम है उनके हृदयमें धामधनीने सब कुछ दे दिया है । स्वयं झाँक कर अपने हृदयमें देखें तो ज्ञात होगा कि ब्रह्मात्माओंका हृदय व परमधाम दोनों परस्पर एक ही है ।

अरस दिल मोमिनजो, जे पसे अरस मोमन ।
चाहिए कोठियां हक अरसमें, त तो पेरो न्हाए ए तन ॥ २२

अरस = धाम, दिल = दिल, मोमिन = आत्मा, जो = का, जे = जो, पसे = देखें, अरस = परमधाम, मोमन = ब्रह्मसृष्टि, चाहिए = इच्छा करते, कोठियां = बुलाना, हक = प्रीतम, अरसमें = धाममें, त = तब, तो = तो, पेरो = पहला, न्हाए = नहीं है, ए = यह, तन = शरीर ।

ब्रह्मात्माएँ परमधामको देखना चाहें तो उनका हृदय ही परमधाम है । यदि धामधनी उन्हें परमधाम बुलाना चाहें तो उनका नश्वर तन मानो है ही नहीं ।

महामत चोए हे मोमिनो, धणिएं पूरी केई खिल्ल ।
पिरी पसो या रांद के, हक बेठो अरस तो दिल ॥ २३

महामति = महामति, चोए = कहते हैं, हे = हे, मोमिनो = परमधामकी आत्माओं, धणिएं = प्रियतमने, पुरी = पूर्ण, केई = किया, खिल्ल = हँसी, पिरी = प्रीतम, पसो = देखो, या = अथवा, रांद = खेल, के = को, हक = धनी, बेठो = बैठे हैं, अरस = परमधाम, तो = आपके, दिल = दिलमें ।

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! धामधनीने हमारी पूरी हँसी की है । तुम चाहे खेलको देखो या अपने प्रियतमको देखो, वे तो तुम्हारे हृदयरूपी धाममें विराजमान हैं ।

प्रकरण ११ चौपाई ४९३

हुकमजी पेहेचान

ताडो कुंजी या दर उपटण, समझाए डिंनी सभ तो ।
बेठा आयो मूं दिलमें, जीं जांणो तीं गडजो ॥ १

ताडो = ताला, कुंजी = चाबी, ना = नहीं, दर = द्वार, उपटण = खोलना, समझाए = बताया, डिंनी = दिया, सभ = सम्पूर्ण, तो = आपने, बेठा-बैठे, आयो = है, मूं = मेरे, दिलमें = दिलमें, जीं = जैसे, जांणो = जानिए, तीं = वैसे, गडजो = मिलिए ।

हे धनी ! न कोई ताला है न कुञ्जी है और न ही द्वार खोलना है, ये सब बातें आपने समझा दी हैं । आप स्वयं मेरे हृदयमें आकर बैठे हैं । अब जैसा ठीक लगे वैसे ही मिलें ।

सेहेरग से ओडडो, आडो पट न द्वार ।
उघाडिए अंख समझजी, डिसंदी न डिसे भरतार ॥ २

सेहेरग = प्राणनली, से = से, ओडडो = नजदीक, आडो = बीच, पट = परदा, न = नहीं, द्वार = दरवाजा, उघाडिए = खोलिए, अंख = आंख, समझजी = पहचान की, डिसंदी = देखते हुए, न = नहीं, डिसे = देखती हुं, भरतार = धनीको ।

धामधनी प्राणनलीसे भी अति निकट हैं । उनके और हमारे बीच न कोई परदेका व्यवधान है और न कोई द्वार है । उन्होंने समझकी दृष्टि खोल दी है तथापि मैं देखती हुई भी उन्हें नहीं देख पा रही हूँ ।

हुकम इलम खेल हिकडो, ब्यो कोए न कितईं दम ।
हित रूह न कांए रूहनजी, जे कीं थेयो से सभ हुकम ॥ ३

हुकम = आज्ञा, इलम = ज्ञान, खेल = खेल, हिकडो = एक ही, ब्यो =

दूसरा, कोए = कोई, न = नहीं, कितईं = कहीं भी, दम = थोडी सी, हित = यहां, रूह = आत्मा, न = नहीं, कांए = कोई, रूहनजी-सखियोंकी, जे = जो, कीं = कुछ, थेयो = हुआ, से = वह, सभ = सम्पूर्ण, हुकम = आज्ञासे ।

श्री राजजीका आदेश, ज्ञान सब एक ही है । इसके अतिरिक्त यहाँ कुछ भी नहीं है. यहाँ पर कोई भी आत्मा परमधामसे नहीं आई है, जो कुछ भी हुआ है सब श्री राजजीके आदेशसे ही हुआ है ।

पांहिज्यूं सुरत्यूं हुकम, ही रांद डेखारे हुकम ।
रमे रांद मोहोरा हुकमें, डेखारे तरे कदम ॥ ४

पांहिज्यूं = अपनी, सुरत्यूं = सुरताएँ, हुकम = आज्ञा, ही = यह, रांद = खेल, डेखारे = दिखाया, हुकम = आज्ञासे, रमें = खेलते, रांद = खेल, मोहोरा = प्रकार(गोटी), हुकमें = आज्ञा, डेखारे = दिखाया, तरे = नीचे, कदम = चरणोंके ।

हमारी सुरताएँ इसी आदेशसे ही हैं और उनको खेल भी यही दिखा रहा है । इसी आदेशके कारण हमारी सुरताएँ क्रीड़ा पात्र बनकर खेल खेल रहीं हैं और यही आदेश ब्रह्मात्माओंको श्री राजजीके चरणोंमें बैठा कर यह सब दिखा रहा है ।

जे अरवाएं अरसजी, से सभ हकजी आमर ।
असां हुजत गिडी अरसजी, अग्यां बेठ्यूं हक नजर ॥ ५

जे = जो, अरवाहें = आत्माएं, अरसजी = धामकी, से = वह, सभ = सभी, हकजी = धनीकी, आमर = आज्ञासे, असां = हम, हुजत- दावा, गिडी = लेकर, अरसजी = धामके, अग्यां = आगे, बेठ्यूं = बैठी हैं, हक = प्रियतमके, नजर = सामने ।

परमधामकी सभी आत्माएँ श्री राजजीके आदेशके ही स्वरूप हैं. हम सभी ब्रह्मात्माएँ परमधामका अधिकार (दावा) लेकर नश्वर जगतमें खेल रहीं हैं । वस्तुतः हम सभी श्री राजजीकी ही दृष्टि समक्ष (चरणतले) बैठीं हैं ।

अरवा असांजी आमर, गुण अंग इंद्री आमर ।
असीं डिसूं सभ आमर के, रांद डिखारे पट कर ॥ ६

अरवा = आत्मा, असांजी = हमारी, आमर = आज्ञासे, गुण = गुण, अंग = अंग, इन्द्री = इन्द्रियां, आमर = आज्ञासे, असीं = हम, डियूं = देखती हैं, सभ = सम्पूर्ण, आमरके = आज्ञाके, रांद = खेल, डिखारे = दिखाते हैं, पट = परदा, कर = करके ।

हमारी सुरता तथा गुण, अङ्ग, इन्द्रियाँ सभी श्री राजजीके आदेशसे हैं । हम जो देख रहीं हैं वह सब श्री राजजीका ही आदेश है. वही हमारे बीच परदा डालकर यह सब दिखा रहा है ।

हित अचे अरवा अरसजी, त उडे चौडे तबक ।
हुकमें नाम धरायो रूहनजो, हे हुकमे केयो सभ हक ॥ ७

हित = यहाँ, अचे = आये, अरवा = आत्मा, अरसजी = धामकी, त = तो, उडे = मिट जाए, चौदे = चौदह, तबक = लोक, हुकमें = आज्ञाने, नाम = नाम, धरायो = रखा, रूहनजो = आत्माओंका, हे = यह, हुकमें = आज्ञा, केयो = किया, सभ = सभी, हक = प्रियतमने ।

यदि इस नश्वर जगतमें परमधामकी आत्माएँ आ जाएँ तो यहाँके चौदह लोक उड़ जाएँगे । श्री राजजीके आदेशने ही ब्रह्मात्माओंके नामोंसे स्वयंको व्यक्त किया है । यही आदेश यह सब कर रहा है ।

कूड न अचे अरसमें, रूह माधां न रहे कूड दम ।
न्हारयम अंतर मंझ बाहेर, कित जरो न रे हुकम ॥ ८

कुड = झूठ, न = नहीं, अचे = आता है, अरसमें = धाममें, रूह = आत्मा, माधां = सामने, न = नहीं, रहे = रहता, कूड = झूठ, दम = क्षणभर, न्हारयम = देखा, अंतर = आत्मासे, मंझ = दिलसे, बाहेर = शरीरसे, कित = कहीं, जरो = कुछ, न = नहीं, रे = बिना, हुकम = आज्ञाके ।

परमधाममें झूठ नहीं आ सकता है और ब्रह्मात्माओंके सामने क्षण मात्रके लिए टिक भी नहीं सकता है. मैंने इसे (जगतको) बाहर या भीतर सब ओरसे देखा। यहाँ पर श्री राजजीके आदेशके अतिरिक्त लेश मात्र भी नहीं है ।

डिठो डिखार्‌यो हुकमें, असीं थेयां हुकम ।
न्हाए न थ्यो न थींदो, कीं धारा हुकम खसम ॥ ९

डिठो = देखा, जिखारयो = दिखाया, हुकमें = आज्ञासे, असीं = हमको, थेयां = हुआ, हुकम = आज्ञा, न्हाए = नहीं है, न थयो = न हुआ, न = न, थींदो = होगा, कीं = कुछ भी, धारा = बिना, हुकम = आज्ञा, खसम = धनीके ।

इसी आदेशसे हमने खेल देखा है और इसीने हमें यह खेल दिखाया है। हम भी इसी आदेशसे हैं. श्री राजजीके आदेशके बिना न कुछ है, न था और न होगा ।

हुकमें डिखार्‌यो हुकमके, ते हुकमें डिठो हुकम ।
भिस्त दोजख थेई हुकमें, आखर सुख थेयो सभ दम ॥ १०

हुकमें = आज्ञाने, डिखारयो = दिखाया, हुकमके = आज्ञाके, ते = तो, डिठो = देखा, हुकम = आज्ञासे, भिस्त = मुक्ति सुख, दोजक = दुःख (नरक), थेई = हुआ, हुकमें = आज्ञासे, आखर = अन्तमें, सुख = आनन्द, थेयो = हुआ, सभ = सभी, दम = प्राणी मात्रको ।

इसी आदेशने ही आदेश (स्वरूप हम) को यह खेल दिखाया है और आदेशने ही आदेशको देखा है । मुक्तिस्थल (बहिश्त) एवं नरक दोनों ही इसी आदेशके अधीन बने हैं और अन्तमें इसीके द्वारा प्राणीमात्रको सुख प्राप्त होगा ।

नाला रूहें फिरस्तेजा, धर्‌या हक आमर ।
पुंना पांहिजी निसबतें, हुकमें पुजाया उपटे दर ॥ ११

नाला = नाम, रूहें = ब्रह्मसृष्टि, फिरस्तेजा = ईश्वरीसृष्टिके, धरया = रखा, हक = धनीके, आमर = हुकुमसे, पुंना = पहुंचे, पांहिजी = अपने, निसबतें = संबन्धको, हुकमें = आज्ञासे, पुजाया = पहुंचाया, उपटे = खोलकर, दर = द्वार ।

इसी आदेशने ब्रह्मात्माओं तथा ईश्वरीसृष्टिका नाम धारण किया है । इसी आदेशने उनको अखण्डके द्वार खोल कर अपने-अपने सम्बन्धके अनुरूप धाममें पहुँचाया है ।

असीं उथी बेठां अरसमें, असां के हुकमें डिंनों याद ।
हुकमें हुकम खेल डिखारियो, हुकमें हुकम आयो स्वाद ॥ १२

असीं = हम, उथी = उठकर, बेठां = बैठे, अरसमें = परमधाममें, असांके = हमको, हुकमें = आज्ञासे, डिंनो = दिया, याद = याद, हुकमें = आज्ञाने, हुकम = आज्ञासे, खेल = खेल, डिखारियो = दिखाया, हुकमें = आज्ञासे, हुकम = आदेशको, आयो = आया, स्वाद = लज्जत ।

जब इस आदेशने हमें स्मरण करवाया तब हम परमधाममें ही जागृत होकर बैठ गईं । वस्तुतः आदेशने ही आदेशको खेल दिखाया है और आदेशसे ही आदेशको खेलका स्वाद प्राप्त हुआ है ।

हे बारीक गाल्यूं हुक म ज्यूं, हुकम थेयो सभ में हक ।
असीं अरसमें सिर गिंनी करे, केयूं गाल्यूं बेसक ॥ १३

हे = यह, बारीक = रहस्यमय, गाल्यूं = बातें, हुकमज्यूं = आज्ञाकी, हुकम = आदेश, थेयो = हुआ, सभमें = सभीमें, हक = धनीका, असीं = हम, अरसमें = धाममें, सिर = सर, गिंनी = ले, करे = करके, केयूं = किया, गाल्यूं = बातें, बेसक = निसंदेह ।

आदेशकी ये बातें सूक्ष्म हैं । वस्तुतः सर्वत्र श्री राजजीका आदेश छाया हुआ है. हम परमधाममें जागृत होकर इसी आदेशको अपने सिर पर लेकर खेलकी बातें करेंगे ।

असां अरस न छडयों, धारा थेयांसी बेसक ।
रूहें न आयूं रांदमें, असां चई गाल मुतलक ॥ १४

असां = हमने, अरस = धामको, न = नहीं, छडयों = छोडा, धारा = अलग, थेयांसी = हुये, बेसक = अवश्य, रूहें = सखियां, न = नहीं, आयूं = आई, रांदमें = खेलमें, असां = हमने, चई = कहा, गाल = बात, मुतलक = अवश्य ।

हमने परमधामको छोड़ा भी नहीं है और हम निःसन्देह परमधामसे दूर भी हुए हैं । हम ब्रह्मात्माएँ मायाके खेलमें नहीं आईं हैं तथापि जागृत होकर निश्चय ही खेलकी बातें करेंगी ।

हे भत सभे हुकमें केई, रांद डेखारी खिलवतमें घर ।
गाल्यूं खिलवतज्यूं केयूं रांदमें, जो हक दिल गुझांदर ॥ १५

हे = इस, भत = प्रकार, सभे = सभी, हुकमें = आज्ञाने, केई = किया, रांद = खेल, डेखारी = दिखाया, खिलवतमें = एकांतमें, घर = परमधामका, गाल्यूं = बातें, खिलवतज्यूं = एकान्तकी, केयूं = किया, रांदमें = खेलमें, जो = जो, हक = परमात्मा, दिल = दिल, गुझांदर = छिपा हुआ दृष्य है ।

यह सम्पूर्ण कुशलता आदेशकी है । उसीने हमें परमधाम मूलमिलावामें बैठाकर यह खेल दिखाया है । हमने नश्वर खेलमें भी श्री राजजीके साथ हुई मूलमिलावेकी गूढ़ चर्चा प्रकट की है ।

गाल्यूं सभे रांदज्यूं, थींद्यूं मय खिलवत ।
थींदा खिलवतमें सुख खेलजा, गिडां खेलमें सुख निसबत ॥ १६

गाल्यूं = बातें, सभे = सभी, रांदज्यूं = खेलकी, थींदयूं = होगी, मय = बीच, खिलवत = मूलमिलावेमें, थींदा = होगा, खिलवतमें = मूलमिलावेमें, सुख = आनन्द, खेलजा = खेलका, गिडां = लिया, खेलमें = खेलमें, सुख = आनन्द, निसबत = संबन्ध ।

अब परमधाम मूलमिलावामें भी नश्वर खेलकी सभी चर्चाएँ होंगी । जिस प्रकार खेलमें परमधामके सुखोंका अनुभव किया है उसी प्रकार परमधाममें भी खेलका अनुभव प्राप्त किया जाएगा ।

असां न छड्यों अरसके, रांदमें पण आयूं ।
थेयो बिछोडो अरसमें, रांदमें पण न आयूं ॥ १७

अंसा = हमनें, न = नहीं, छड्यों = छोड़ा, अरसके = परमधामको, रांदमें = खेलमें, पण = भी, आयूं = आये, थेयो = हुई, विछोडो = जुदाई, अरसमें = धाममें, रांदमें = खेलमें, पण = भी, न = नहीं, आयूं = आये ।

वस्तुतः हमने परमधाम भी नहीं छोड़ा और हम इस खेलमें भी आईं । परमधाममें वियोग भी हुआ और हम खेलमें भी नहीं आईं ।

हे भत्यूं सभ हुकमें, परी परी कारे ।
कारण बाद इसकजे, डिंनाऊं बए हंद डिखारे ॥ १८

हे = यह(इस), भत्यूं = तरह, सभ = सम्पूर्ण, हुकमें = आज्ञासे, परी परी = भाँती भाँतीसे, कारे = करते है, कारण = लिए, बाद = प्रतिबाद, इसकजे = प्रेमका, डिंनाऊं = दिया, बए = दोनों, हंद = जगह (ठिकाने), डिखारे = दिखाकर ।

यह सब आदेशकी कुशलता है, जिसने भाँति-भाँतिसे कार्य किया है । वस्तुतः प्रेम परिचर्चाके कारण ही हमें दोनों स्थानोंके सुखोंका अनुभव करवाया है।

पातसाही पांहिजी, डिखारी भली पर ।
कीं चुआं बडाई हकजी, मूं धणी बडो कादर ॥ १९

पातसाही = महानता, पांहिजी = अपनी, डिखारी = दिखाया, भली = अच्छी, पर = तरह, किं = क्या, चुआं = कहूं, बडाई = श्रेष्ठता, हकजी = प्रियतमके, मूं = मेरे, धणी = प्रीतम, बडो = बडे, कादर = समर्थ ।

इस प्रकार श्री राजजीने अपनी प्रभुता भलीभाँति दिखाई । मैं उनकी प्रभुताको कैसे कहूँ ? मेरे धनी सर्व प्रकारसे समर्थ हैं ।

महामत चोए हे मोमिनो, पांण के बिहारे तरे कदम ।
खिल्लकंदा बडी अरसमें, जा केई हुकम इलम ॥ २०

महामत = महामति, चोए = कहते हैं, हे = हे, मोमिनो = सखियों, पांण = हम, के = को, बिहारे = बैठाया, तरे = नीचे, कदम = चरणोंके, खिल्लकदां = हंसी करेंगे, बडी = भारी, अरसमें = परमधाममें, जा = जो, केई = किया, हुकम = आज्ञाने, इलम = ज्ञानसे ।

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! श्री राजजीने हमें अपने चरणोंमें ही बैठा कर इस प्रकार अपने आदेश एवं ज्ञानके द्वारा परमधाममें हमारी बड़ी हँसी की है ।

कांध रूह भाइयां सिफत करियां ,
तोहिजी हित थिए न सिफत किएं केई ।
से न्हारयम जडे बेबरो करे, आंऊं उरझी तेमें रही ॥ १

कांध = प्रीतम, रूह = आत्मा, भाइयां = चाहती है, सिफत = बडाई, करियां = करूं, तोहिजी = आपकी, हित = यहां, थिए = होती, न = नहीं, सिफत = प्रसंशा, किएं = कैसे, केई = करके, से = वह, न्हारयम = देखो, जडे = जब, बेबरो = निरूपण, करे = करके, आंऊं = मैं, उरझी = फसीं, तेमें = उसमें, रही = रही ।

हे धनी ! मेरी आत्मा आपकी प्रशंसा करना चाहती है किन्तु यहाँ पर किसी भी प्रकार आपकी महत्ता बताई नहीं जा सकती । जब मैंने उसका निरूपण करके देखा तो मैं उसीमें उलझ गई ।

हे दिलजी गाल केसे करियां, रूहजी तूं जांणे ।
कुछण भेणी लाथिए, कांध चओ से चुआं हांणे ॥ २

हे = यह, दिलजी = दिलकी, गाल = बातें, केसे = किससे, करियां = करूं, रूहजी = अत्माकी, तूं = आप, जाणे = जानते हैं, कुछण = बोलनेकी, भेणी = ठिकाना, लाथिए = नहीं रखा, कांध = धनी, चओ = कहो, से = वह, चुआं = कहूं, हांणे = अब ।

मेरे हृदयकी ये बातें मैं किससे कहूँ ? आप ही मेरी आत्माको जानते हैं । अब तो कहनेके लिए भी कोई स्थान (ठिकाना) नहीं रखा है. हे धनी ! अब आप जैसा कहें मैं वैसा ही कहूँगी ।

उताइयां आलममें, मूं जेडी केई न कांए ।
अजां तरसे मूं जिंदुओ, हे केही पर तोहिजी आए ॥ ३

उताइयां = भेजकर, आलममें = संसारमें, मूं = मुझे, जेडी = जैसी, केई = किया, न = नहीं, कांए = किसीको, अजां = अभी, तरसे = ललचाता, मूं = मेरा, जिंदुओ = जीव, हे = यह, केही = कौन(किस), पर = तरह, तोहिजी = आपकी, आए = है ।

आपने हम ब्रह्मात्माओंको जगतके खेलमें भेजा और इसमें मुझे जैसी महत्ता दी वैसी अन्य किसीको नहीं दी है । तथापि मेरा जीव अभी भी व्याकुल है । यह आपकी कौन-सी रीति है ।

पांण जेड्यूं डिंने दातड्यूं, से डिठ्यूं मूं नजर ।
अजां मंगाइए मूं हथां, मूं कांध एहेडो कादर ॥ ४

पांण = आप, जेडयूं = जैसी, डिंने = दिया, दातड्यूं = उदारता, से = वह, डिठ्यूं = देखा, मूं = मैंने, नजर = आँखोसे, अजां = अभी, मंगाइए = मँगवाते हैं, मूं = मेरे, हथां = हाथोंसे, मूं = मेरे, कांध = प्रीतम, एहेडो = ऐसे, कादर = शक्तिमान ।

आपने मुझे जितनी सम्पदाएँ दीं हैं । उनको मैंने अपने आँखोंसे देखा । आप मेरे धनी इतने समर्थ हैं फिर भी मुझसे मँगवाते हैं ।

जे बड्यूं केइए हिन रांद मे, तिनी ज्यूं कै कोडी सिफतूं कन ।
से बडा मंगन खाक पेरनजी, असां अरस रूहन ॥ ५

जे = जो, बड्यूं = बडे, केइए = किये, हिन = इस, रांदमें = खेलमें, तिंनी = उन, ज्यूं = को, कै = कई, कोडी = करोडों, सिफतूं = बडाई, कन = करते हैं, से = वे बडे, मगंन = मांगते हैं, खाक = रज(धूल), पेरनजी = चरणोंकी, असां = हम, अरस = परमधाम, रूहन = सखियोंकी ।

आपने इस खेलमें जिनको महान् बनाया है उन (त्रिदेवों) की करोड़ों प्रकारसे प्रशंसा होती है । वे महान भी हम परमधामकी ब्रह्मात्माओंकी चरणरज माँगते हैं ।

सिरदार ते रूहन में, मूंके केइए कांध ।
बडी बडाई डिंनीएं, अची मय हिन रांद ॥ ६

सिरदार = अग्रसर, ते = उन, रूहन = सखियों, में = में, मूंके = मुझे, केइए = किया, कांध = प्रियतमने, बडी = बडी, बडाई = बडप्पन, डिनिएं = दिया, अची = आकर, मय = बीच, हिन = इस, रांद = खेलमें ।

हे धनी ! आपने मुझे ऐसी ब्रह्मात्माओंमें अग्रणी बनाया है । इस खेलमें आकर भी आपने मुझे विशेष महत्ता दी है ।

हे जे बड्यूं केइए हिन आलममें, हिनज्यूं सिफतूं तिंनी न पुजन ।
से बडा बडयूं सिफतूं करीन, पुजे न खाक मोमन ॥ ७

हे = यह, जे = जो, बड्यूं = बडा, केइए = किया, हिन = इस, आलममें = संसारमें, हिनज्यूं = इनकी, सिफतूं = प्रशंसा, तिंनी = उनको, न = नहीं, पुजन = पहुंचती है, से = वह, बडा = बडा, बड्यूं = बडाई, सिफतूं = प्रशंसा, करीन = करते, पुजे = पहुंचता, न = नहीं, खाक = धूल, मोमन = सखियोंकी ।

इस जगतमें आपने जिनको महान बनाया है, उनकी भी कोई प्रशंसा नहीं कर सकता है । उन महान लोगोंकी बड़ी-बड़ी प्रशंसा होती है किन्तु वे भी ब्रह्मात्माओंकी चरणरज प्राप्त नहीं कर सकते हैं ।

तेमें बडी मुके केइए, मूंजी सिफत न थिए मय रांद ।
जे ए सिफत न पुजे, त सिफत तोहिजी करियां की कांध ॥ ८

तेमें = उनमें, बडी = बडा, मूंके = मुझे, केइए = किया, मूंजी = मेरी, सिफत = बडाई, न = नहीं, थिए = होती, मय = बीचमें, रांद = खेलके, जे = जो, ए = यह, सिफत = प्रशंसा, न = नहीं, पुजे = पहुंचता, त = तो, सिफत = बडाई, तोहिजी = आपकी, करियां = करूं, कीं = कैसे, कांध = प्रियतम ।

ऐसी ब्रह्मात्माओंमें आपने मुझे महत्ता दी है । इस नश्वर जगतमें मेरी प्रशंसा नहीं हो सकती है । जब मेरी प्रशंसा भी नहीं हो सकती तो हे धनी ! मैं आपकी प्रशंसा कैसे करूँ ?

जा न्हाए अकल हिन आलममें, सा डिंनिएं मूंके मत ।
जेसे आंऊं सभ समझी, कायम आलम सिफत ॥ ९

जा = जो, न्हाए = नहीं, अकल = बुद्धि, हिन = इस, आलममें = संसारमें, सा = वह, डिंनिएं = दिया, मूंके = मुझे, मत = ज्ञान, जेसे =

जिससे, आंऊं = मैं, सभ = सभी, समझी = जानकारी, कायम = अखण्ड, आलम = दुनियामें, सिफत = प्रशंसा ।

जो बुद्धि इस जगतमें नहीं है, वह जागृत बुद्धि आपने मुझे दी है । उसीके द्वारा मैं इस जगतमें भी अखण्ड परमधामकी महत्ता समझ सकी हूँ ।

गाल आंजी जाणुं असीं, जे डिंन्यूं असां के इलम ।
कांध हित न भेंणी कुछण, गाल्यूं घरे थींद्यूं खसम ॥ १०

गाल = बात, आंजी = आपकी, जाणुं = जानते, असीं = हमको, जे = जो, डिंन्यू = दिया, असां = हम, के = को, इलम- ज्ञान, कांध = प्रियतम, हित = यहां, न = नहीं, भेणी = ठिकाना, कुछण = बोलनेका, गाल्यूं = बातें, घरें = परमधाममें, थींद्यूं = होगी, खसम = प्रीतमसे ।

आपने हमें जो (तारतम) ज्ञान दिया है उससे हम आपकी बातें जानतीं हैं । हे धनी ! अब यहाँ कहनेके लिए भी कोई स्थान (ठिकाना) नहीं रहा है । अब सभी बातें परमधाममें ही होंगी ।

महामत चोए मूं धणी, मूंके बडी डेखारई रांद ।
कर मूंसे मिठ्यूं गालियूं, मूंजा मिठडा मियां कांध ॥ ११

महामत = महामति, चोए = कहते हैं, मूं = मेरे, धणी = प्रियतम, मूकें = मुझे, बडी = भारी, डेखराई = दिखाया, रांद = खेल, कर = करो, मूंसे = मुझसे, मिठ्यूं = मधुर, गालियूं = बातें, मूंजा = मेरे, मिठडा = मिठास भरे, मिंया = प्रियतम, कांध = धनीजी ।

महामति कहते हैं, हे मेरे धनी ! आपने मुझे बड़ा खेल दिखाया है । हे मेरे मीठे प्रियतम ! अब तो मुझसे मीठी बातें कीजिए ।

प्रकरण १३ चौपाई ५२४

॥ श्री सिंधी वाणी संपूर्ण ॥

आसिकके गुनाह

सुनो रूहें अरस की, जो अपनी बीतक ।
जो हमसे लटी भई, ऐसी करे न कोई मुतलक ॥ १

हे परमधामकी आत्माओ ! हमारे अपने वृत्तान्तको सुनो. हमसे जो विपरीत कार्य हुआ है निश्चय ही ऐसा किसीसे नहीं हुआ है ।

कहूं तिनका बेवरा, सुनियो कांनों दोए ।
ए देख्या मैं सहूर कर, तुम भी सहूर कीजो सोए ॥ २

मैं उसका विवरण देती हूँ । तुम दोनों कानोंसे सुनो. इस पर मैंने विचार पूर्वक देखा है. तुम भी इस पर विचार करना ।

पिछे जो दिल में आवे साथ के, आपन करेंगे सोए ।
भूली रोवे तेहेकीक, गए हाथ पटकते रोए ॥ ३

पश्चात् सब सुन्दरसाथके हृदयमें जो बात आएगी उसीके अनुरूप हम कार्य करेंगे । जिसने भूल की होगी वह निश्चय ही हाथ पटकते हुए रोएगी ।

तिसवास्ते क्यों भूलिए, हाथ आए अवसर ।
जो पीछे जाए पछतावना, क्यों आगे देख न चलें नजर ॥ ४

इसलिए हाथमें आए हुए सुन्दर अवसरको क्यों भूलें । यदि बादमें जाकर पछताना पड़े तो पहलेसे ही आँखें खोल कर क्यों न चलें ।

अपनी गिरो आसिक, कहावत हैं मिने इन ।
चलना देख कहत हों, ए अकल दई तुमें किन ॥ ५

इस नश्वर जगतमें हम ब्रह्मात्माओंका समुदाय अनुरागी (आशिक) कहलाता है । किन्तु हमारे व्यवहारको देखकर मैं कहता हूँ कि यह बुद्धि तुम्हें किसने दी है ।

लेनी हकीकत हक की, और देनी इन लोकन ।
आसिक को ए उलटी, जो करत हैं आपन ॥ ६

अपने धामधनीके यथार्थ सुखको लेकर नश्वर जगतके लोगोंको कहना, यह

विपरीत कार्य अनुरागिणियोंका नहीं है, जो हम कर रहे हैं ।

मिठा गुझ मासूक का, काहूं आसिक कहे न कोए ।
पडोसी भी ना सुने, यों आसिक छिपी रोए ॥ ७

अनुरागिणी आत्माएँ अपने प्रियतम धनीकी गुप्त मधुर बातें किसीसे नहीं कहतीं हैं । इतना ही नहीं वह पडोसी भी न सुने इस प्रकार छिप कर रोती है ।

आसिक कहिए तिनकों, जो हक पर होए कुरबान ।
सौ भांतें मासूक के, सुख गुझ लेवे सुभान ॥ ८

अनुरागिणी आत्माएँ उन्हींको कहा जाता है जो अपने प्रियतम धनी पर समर्पित हो जातीं हैं और सैंकड़ों रीतिसे अपने धनीके गुह्य सुख प्राप्त करतीं हैं ।

जो पडे कसाला कोटक, पर कहे न किनको दुख ।
किसीसों ना बोलहीं, छिपावे हक के सुख ॥ ९

करोड़ों कठिनाइयाँ क्यों न आएँ वह अपना दुःख किसीको भी नहीं कहती है । वह अपने प्रियतम धनीके सुख भी किसीसे नहीं कहती है अपितु छिपा कर रखती है ।

गुझ सुख लेवे हक के, रहे सोहोबत मोमिन ।
अपना गुझ मासूक का, कबूं कहें न आगे किन ॥ १०

वह ब्रह्मात्माओंके साथ रहते हुए भी अपने प्रियतमका एकान्त सुख प्राप्त करती है एवं अपने धनीकी गुह्य बातोंको किसीसे भी नहीं कहती है ।

तिन आगे भी ना कहे, जो हक के खबरदार ।
पर कहा कहूं मैं तिनकों, जो बाहेर करे पुकार ॥ ११

वह इन गुह्य बातोंको उन आत्माओंके समक्ष भी नहीं कहती है जो धामधनीके प्रति सावचेत हैं । किन्तु मैं उन आत्माओंके विषयमें क्या कहूँ जो बाहर जाकर (दूसरोंको) ऐसी बातोंको प्रकट करतीं हैं ।

हक बोलावें सरत पर, आपने रेहेने चाहें इत ।
लेवें गुझ मासूक का, कहें दुनियां कों हकीकत ॥ १२

धामधनी अपने वचनोंके अनुरूप हमें परमधाम बुला रहे हैं । परन्तु हम इसी

खेलमें रहना चाहतीं हैं। इतना ही नहीं अपने प्रियतम धनीकी गुह्य बातोंको लेकर दुनियाको सुनाना चाहतीं हैं।

ऐसी आसिक कबूं ना करे, पीछे रहे बुलावते हक।
दुख कुफर में पडके, सुख बका छोडे इसक ॥ १३

अनुरागिणी आत्माएँ कभी भी ऐसी भूल नहीं करतीं हैं कि प्रियतम धनी बुलाएँ और वे न जाएँ तथा इस जगतके नश्वर दुःखोंमें पड़ कर परमधामके अखण्ड सुख एवं शाश्वत प्रेमको छोड़ दें।

प्यारे जिनकों मासूक, तिनके प्यारे लगें वचन।
सो कबूं न केहेवे और को, मासूक प्यारा जिन ॥ १४

जिन आत्माओंको अपने धनी प्यारे लगते हैं उन्हें उनके वचन भी प्रिय लगते हैं। वे अपने प्रियतमकी बातें अन्य किसीसे नहीं करतीं हैं।

आसिक कबूं ना करे, ऐसी उलटी बात।
केहेने सुख लोकन को, पाए बिछोहा हक जात ॥ १५

अनुरागिणी आत्माएँ ऐसी विपरीत बातें कभी भी नहीं करतीं कि अपने धनीसे वियोग लेकर अन्य लोगोंको उनकी गुप्त बातें कहती फिरें।

आसिक गुझ मासूक का, सो लेवत हैं रोए रोए।
ऐसी उलटी अकल आसिक की, सुख केहे औरों कों सोए ॥ १६

अनुरागिणी आत्माएँ तो अपने प्रियतमके सुखोंको रो-रोकर प्राप्त करतीं हैं परन्तु हम जैसी आत्माओंकी बुद्धि ऐसी विपरीत हो गई है कि हम अपने धनीके सुख दूसरोंको कहती फिर रहीं हैं।

ए निपट बातें रिजालियां, सो आपन करी दिल धर।
जैसी हुई हमसे खेल में, तैसी हुई न किनके सिर ॥ १७

निश्चय ही ये बातें अनुचित हैं जो हमने हृदयपूर्वक कीं हैं। इस नश्वर खेलमें हमसे जैसी भूल हुई है वैसी अन्य किसीसे भी नहीं हुई है।

आसिक कहावें आपकों, फेरें बोलावना भरतार ।
जाए न बोलाई खसम की, सो औरत बेइतबार ॥ १८

स्वयंको अनुरागिणी कहलाना और अपने प्रियतम धनीके आमन्त्रणको अस्वीकार करना अनुचित होता है । जो स्त्री अपने पतिके बुलाने पर नहीं जाती है वह विश्वासपात्र नहीं कहलाती है ।

गुझ मासुक का आसिक, सो केहेना न कासों होए ।
जो कै पडें कसालें, तो बाहेर माहें रोए ॥ १९

अनुरागिणी आत्माएँ अपने धनीकी गुप्त बातें किसीसे भी नहीं करतीं हैं । करोड़ों कष्ट क्यों न आ जाएँ वह तो अन्दर ही अन्दर रोती रहती है ।

एक तो गुझ जाहेर किया, और गैयां न बोलावते सोए ।
ऐसी एक भी कोई ना करे, सो आपन करीं दोए ॥ २०

किन्तु हमने एक तो अपने धनीकी गुप्त बातें प्रकट कीं दूसरा उनके बुलाने पर उनके निकट नहीं गईं । इस प्रकारकी एक भी भूल कोई नहीं करता है जैसी हमने दो-दो कीं हैं ।

रूहों को ऐसी ना चाहिए, अरस की कहावे हम ।
सहूर करके देखिया, तो हम किया बडा जुलम ॥ २१

ब्रह्मात्माओंको ऐसा नहीं करना चाहिए क्योंकि हम परमधामकी आत्माएँ कहलातीं हैं । विचारपूर्वक देखते हैं तो हमने बहुत बड़ा अपराध किया है ।

हम कहें झूठी दुनियां, तिनमें ऐसी करे न कोए ।
जो उलटी हम सांचों से भई, ऐसी झूठोंसे ना होए ॥ २२

जिस दुनियाँको हम झूठी कहते हैं उसमें भी ऐसा कोई नहीं करता है । हम सत्य कहलाने वाली ब्रह्मात्माओंसे जो भूल हुई है ऐसी तो इस नश्वर दुनियाँसे भी नहीं होती है ।

मैं देख तक्सीर अपनी, पेहेलें देख डरी एक बार ।
देख डरी सामी हक, तब मैं किया पुकार ॥ २३

मैं अपनी भूलको देखकर पहले एक बार तो डर गई । जब धामधनीके

आदेशको सम्मुख देखा तभी मैंने डर कर यह पुकार की है ।

मैं देखे गुनाह अपने, हक के देखे एहेसान ।
उमर गई पुकारते, बीच हलाकी जहान ॥ २४

मैंने अपनी भूल देखी और धामधनीके उपकारको भी देखा. इस झूठी दुनियामें इस प्रकार पुकार करते-करते मेरी आयु ही व्यतीत हो गई है.

कबहूं किनहूं ना किए, ऐसे काम अधम ।
देख गुनाह अपने, फेर किए जुलम ॥ २५

ऐसा अधम कार्य कभी भी किसीने नहीं किया है किन्तु मैं अपनी भूलोंको देखती हुई भी वारंवार अपराध करती रही ।

स्यानी जोरू क्यों करे, जान के गुनाह ए ।
खावंद जाने त्यों करें, हुआ सब हुकम के ॥ २६

समझदार स्त्री जानबूझ कर ऐसी भूलें नहीं करती है । वह तो अपने धनीके आदेशके अधीन होकर वे जैसा कहते हैं वैसा ही करती है ।

जो फेर देखें आपन, तो ए हुई हाथ धनी ।
और किसी का ना चले, जो कोई करे स्यानप घनी ॥ २७

इस प्रकार पुनः मैं अपनी ओर देखती हूँ तो लगता है कि यह सब धामधनीके हाथोंमें है । यहाँ पर किसीका भी कुछ नहीं चलता है । भला, वह कितना ही चातुर्य्य क्यों न दिखाए ।

मैं देख्या इलम हक का, तो ए सब हुकम के ख्याल ।
और ना कोई कहूं, बिना हुकम नूरजमाल ॥ २८

जब मैंने धामधनीके तारतम ज्ञानसे देखा तो ज्ञात हुआ कि यह सब श्री राजजीके आदेशके कारण ही हो रहा है । यहाँ पर धामधनीके आदेशके अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं है ।

ए गुनाह देखे अपने, जब देख्या दिल धर ।
ए भी गुनाह खुदीय का, जब फेर देख्या सहूर कर ॥ २९

जब मैंने हृदयपूर्वक विचार किया तो मुझे अपने ही दोष दिखाई दिए. जब

मैंने पुनः विचार किया तो ज्ञात हुआ कि यह दोष भी अहंभावका ही है ।

गुन्हे भी अपने तब देखे, जब मैं हुई हुसियार ।
देखी हुसियारी ए भी खुदी, डरी हुई खबरदार ॥ ३०

जब मैं सावधान हो गई तभी मुझे अपने दोष दिखाई दिए । जब मैंने अपने चातुर्यको देखा तो वहाँ भी अहंभाव ही दिखाई दिया । इसलिए मैं डर कर सावचेत हो गई ।

गुन्हे किए अजान में, गुन्हे देखे सो भी अजान ।
दम न ले बीच हुकमें, जब हकें पूरी दै पेहेचान ॥ ३१

मैंने जो भूलें कीं हैं, वह भी अज्ञानावस्थामें ही है और उनको देखा भी अज्ञानवस्थामें ही । जब धामधनीने मुझे पूर्ण पहचान करवाई तब ज्ञात हुआ कि उनके आदेशके बिना एक श्वास भी नहीं लिया जा सकता है ।

पेहेचान लई सो भी खुदी, मैं न्यारी हुई तिनसें ।
न्यारी होत सो भी खुदी, ए खुदी निकलत नाहीं मैं ॥ ३२

मुझे पहचान हुई है इसमें भी अहङ्कार झलकता है इसलिए मैं उससे भी अलग हो गई । यदि मैं अलग भी हो जाती हूँ तो वहाँ भी अहंभाव ही आ जाता है । इस प्रकार यह अहंभाव किसी भी प्रकार दूर नहीं होता है ।

महामत कहें ऐ मोमिनो, कोई नाहीं हक बिगर ।
लाख बेर मैं देखिया, फेर फेर सहूर कर ॥ ३३

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! धामधनीके अतिरिक्त अन्य कोई भी नहीं है । मैंने पुनःपुनः विचार कर लाखों बार देख लिया है ।

प्रकरण १४ चौपाई ५५७

मैं खुदी की पेहेचान

मैं लाखों विध देखिया, कहूं खुदी क्योंए न जाए ।
ए क्यों जावे पेडसे, जो दूजी हकें दै देखाए ॥ १

मैंने लाखों प्रकारसे प्रयत्न करके देखा किन्तु यह अहंभाव किसी भी प्रकारसे

दूर नहीं होता है । वस्तुतः यह कैसे निर्मूल हो जब श्री राजजीने ही इसे द्वैत (स्वयंसे भिन्न) के रूपमें दिखाया है ।

जो मैं मांगों इसक कों, तो इत भी आप देखाए ।
ए भी खुदी देखी, जब इलमें दै समझाए ॥ २

यदि मैं प्रेमकी याचना करती हूँ तो इसमें भी यही अहंभाव दिखाई देता है । जब मुझे तारतम ज्ञानसे स्पष्ट पहचान हुई तब ज्ञात हुआ कि प्रेमकी याचनामें भी अहं भाव ही छिपा हुआ है ।

हक पेहेचान किनकों हुई, इत दूसरा कौन केहेलाए ।
ऐसी काढी बारीकी खुदियां, हक भी पेहेचान कराए ॥ ३

इस नश्वर जगतमें अक्षरातीत परमात्माकी पहचान किसको हुई है ? यहाँ पर उनके अतिरिक्त अन्य है भी कौन ? अहङ्कारकी इस सूक्ष्मताको दूर करने पर ही श्री राजजीकी पहचान होती है ।

तन तो अपने अरस में, सो तो सोए नींदमें ।
जागत हैं एक खावंद, ए नींद दई जिनने ॥ ४

हमारे मूल तन (पर आत्मा) तो परमधाममें नींदमें सोए हुए हैं. वहाँ पर एक धामधनी ही जागृत हैं जिन्होंने यह नींद दी है ।

दे कर नींद रूहन को, खेल देखावत नजर ।
तो ए खेल कौन देखत, कोई है बिन हुकम कादर ॥ ५

अपनी अङ्गनाओंको भ्रमकी निद्रामें डालकर धामधनी अपनी दृष्टिके समक्ष उन्हें यह खेल दिखाते हैं. वस्तुतः यह खेल कौन देख रहा है, समर्थ धनीके आदेशके अतिरिक्त यहाँ पर अन्य कोई है ?

आपन सोए है अरस में, तले हक कदम ।
ए जो खेल खेलावे खेलमें, कोई है बिन हक हुकम ॥ ६

हम तो परमधाममें धामधनीके चरणोंमें सोई हुई हैं । किन्तु जो इस संसारके खेलमें विभिन्न प्रकारके खेल खेला रहा है क्या वह श्री राजजीके आदेशके अतिरिक्त अन्य कोई हो सकता है ?

इत हुकम एक हक का, और हकै का इलम ।
हुकम इलम या खेल को, देखो सोइयां तले कदम ॥ ७

यहाँ पर तो एक श्री राजजीका आदेश है और दूसरा उनका ज्ञान है. हम उनके चरणोंमें सोई हुई इस खेलमें कार्यरत उनके आदेश और ज्ञानको देख रहीं हैं।

कहे इलम तुमहीं पट, तुमहीं कुंजी पट की ।
कुल अकल दै तुम कों, देखो उलटी या सीधी ॥ ८

तारतम ज्ञान यह कहता है कि तुम ही परदा हो और तुम ही उसकी कुञ्जी हो । जागृत बुद्धिका ज्ञान भी तुमको ही दिया है । इससे तुम सीधे ढँगसे देखो या विपरीत ढँगसे ।

बीच खेल और खावंद, पट तुमारा वजूद ।
पीठ दे हक कों ए देखत, जो ना कछू है नाबूद ॥ ९

यह नश्वर खेल और श्री राजजीके बीच तुम्हारा शरीर ही आवरण स्वरूप है । इसलिए तुम श्री राजजीको पीठ देकर नश्वर जगतको देख रही हो जिसका कोई अस्तित्व ही नहीं है ।

ए खेल हुकम इलम का, हमें नींदमें देखावत ।
करने हांसी अरस में, खेलमें भुलावत ॥ १०

यह खेल तो आदेश और ज्ञानका है (धामधनीके आदेशसे उत्पन्न हुआ है और उनके ज्ञानके द्वारा जाना जा सकता है) । स्वयं धामधनी हमें इसको नींदमें दिखा रहे हैं । परमधाममें हमारी हँसी करनेके लिए ही वे हमें इस खेलमें भूला रहे हैं ।

इत दूसरा कोई कहूं नहीं, सब देख्या हुकम इलम ।
जो ए उडे नाबूद हुकमें, तो देखो बैठे आगे खसम ॥ ११

यहाँ पर दूसरा कुछ भी नहीं है. सर्वत्र आदेश और ज्ञान ही दिखाई देते हैं । जब श्री राजजीके आदेशसे यह नश्वर खेल उड़ जाएगा तब हम स्वयंको अपने धनीके सम्मुख बैठी हुई पाएँगी ।

हकें द्वार दिया हाथ अपने, और दै इलम पूरी पेहेचान ।
तो क्यों सहें आडा पट, क्यों न खोलें द्वार सुभान ॥ १२

धामधनीने हम ब्रह्मात्माओंके हाथोंमें परमधामके द्वारकी कुञ्जी सौंपी है और तारतम ज्ञान देकर उसकी पूर्ण पहचान करवाई है । तो फिर हम इस आवरणको क्यों सहन करें ? और परमधामके द्वारको क्यों नहीं खोलें ?

जो पट खोलूं हुकम बिना, लगत खुदी गुन्हे डर ।
नातो हाथ कुंजी दै आसिक के, हक बिछोहा सहें क्यों कर ॥ १३

यदि मैं श्री राजजीके आदेशके बिना धामका द्वार खोल देती हूँ तो मुझे अहङ्कारके दोषका डर लगता है । अन्यथा मुझ जैसी अनुरागिनी आत्माके हाथमें जब तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी दे रखी है तो हम धामधनीका वियोग क्यों सहन करें ?

जो होए मुझपें इसक, तो देखों न खुदी हुकम ।
एक नाही मोपें इसक, तो आडा देखों हुकम इलम ॥ १४

यदि मुझमें प्रेम होता तो मैं अहंभाव तथा आदेशका भी डर नहीं रखती किन्तु मुझमें धामधनीके प्रति प्रेम ही नहीं है । इसलिए मैं अपने सामने आदेश एवं ज्ञानको व्यवधानके रूपमें देखती हूँ ।

नातो द्वार खोल के, आगे देखे न अरस रेहेमान ।
इत क्यों देखों राह हुकम की, हकें दै कुंजी पेहेचान ॥ १५

अन्यथा परमधामके द्वार खोलकर हम धामधनीके दर्शन क्यों नहीं कर लेते । जब धामधनीने तारतम ज्ञानरूपी कुञ्जी देकर अपनी पहचान करवाई है तो मैं उनके आदेशकी राह क्यों देखूँ ?

गोते न खाऊं बिना जल, जो आवे इसक ।
तो हुकुम खुदी ना कछू गुना, पट दम न रखे बेसक ॥ १६

यदि मुझमें प्रेम जागृत हो जाता तो मैं पानीके बिना गोते नहीं खाती । फिर मुझे आदेश और अहंभावका भी दोष नहीं लगता । तब निश्चय ही आत्मा धामधनी और अपने बीच पल मात्रके लिए भी आवरण रहने नहीं देती ।

इसक मांगूं तो भी गुना, और खुदी एभी गुना होए ।
जो देखों हुकम इलम कों, मोहे बांध लै विध दोए ॥ १७

यदि मैं धनीका प्रेम माँगती हूँ तो भी अपराध हो जाता है । मुझमें स्थित अहङ्कार भी दोष स्वरूप है । जब मैं धामधनीके आदेश और ज्ञानकी ओर देखती हूँ तो मुझे ज्ञात होता है कि धामधनीने मुझे दोनों प्रकारसे बाँध रखा है ।

ए देखों सहूर खुदी मांगना, ए दोऊ तलें हुकम ।
तो खोल दरवाजा अपना, क्यों न मिलों अपने खसम ॥ १८

विचार पूर्वक देखने पर अहंभाव एवं प्रेमकी याचना दोनों ही धामधनीके आदेशके अधीन हैं तथापि परमधामके द्वार खोलकर अपने धनीसे क्यों न मिल लिया जाए ?

खुदी गुनाह सब हुकमें, मांगूं बोलूं सब हुकम ।
पट खोलूं या जो करूं, सब हुकम कहे इलम ॥ १९

अहंभावका दोष भी आदेशके अधीन है और प्रेमकी याचना भी उसीके अधीन है । इसलिए अब मैं आवरणको दूर करूँ या अन्य जो कुछ भी करूँ यह सब धामधनीका आदेश ही है । यह तारतम ज्ञान मुझे इस प्रकार समझाता है ।

इत खुदी न गुनाह किन सिर, या ढांप खोल तेरे हाथ ।
देख खावंद या खेल को, हुकम इलम तेरे साथ ॥ २०

यहाँ पर किसीके भी सिर पर अहंभाव या दोष नहीं है । इसलिए पारके द्वार खोले या बँध करे यह सब तेरे हाथमें है. हे आत्मा ! अब तू अपने धनीको देख या इस खेलको देख । उनका आदेश तथा उनका ज्ञान दोनों तेरे साथ हैं ।

सब मोमिनों कों सौंपिया, कह्या मोमिन दिल अरस ।
देख आप दिल बिचार के, दिल मोमिन अरस परस ॥ २१

यह सब दायित्व ब्रह्मात्माओंको सौंप दिया है और कहा है कि ब्रह्मात्माओंका

हृदय ही परमधाम है. अब तू विचार कर अपने हृदयको देख, ब्रह्मात्माओंका हृदय तथा परमधाम दोनों ही परस्पर जुड़ गए हैं अर्थात् एकाकार हो गए हैं।

दिल मोमिन का अरस है, जो देखे अरस मोमन ।
हक चाहें उठाया अरस में, तो तेरा आगेहीं नहीं तन ॥ २२

ब्रह्मात्माएँ विचार पूर्वक देखें तो उनका हृदय ही परमधाम है। जब धामधनी उन्हें परमधाममें जागृत कर बैठाना चाहेंगे तो उनका यह नश्वर तन मानों पहलेसे ही अस्तित्वहीन हो जाएगा ।

महामत कहें ऐ मोमिनो, हकें हांसी करी पूरन ।
देख खावंद या खेल कों, ए कुंजी तेरा दिल मोमन ॥ २३

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! धामधनीने हम पर पूर्ण हाँसी की है । अब तुम अपने धनीको देखो या इस खेलको देखो. तारतम ज्ञानकी यह कुञ्जी तुम्हारे हृदयमें है ।

प्रकरण १५ चौपाई ५८०

हुकमकी पेहेचान

ताला द्वार न कुंजी खोलना, समझाए दई सबों आप ।
दिल अपनेमें हक बसें, ज्यों जाने त्यों कर मिलाप ॥ १

न कोई द्वार है, न ताला है, न कुञ्जी है और न ही उसे खोलना है । ये सम्पूर्ण बातें स्वयं धामधनीने तारतम ज्ञान द्वारा समझा दी है और वे स्वयं हमारे हृदयमें आकर विराजमान हो गए हैं। अब अपनी इच्छा अनुसार उनसे मिलो ।

सेहेरग से हक नजीक, आडा पट न द्वार ।
खोली आंखें समझ की, देखती न देखे भरतार ॥ २

धामधनी हमारे प्राणनलीसे भी अति निकट हैं। अब न कोई परदा या द्वार ही व्यवधान स्वरूप है। उन्होंने स्वयं तुम्हारी आत्मदृष्टि खोल दी है तथापि तुम देखते हुए उनको नहीं देख रही हो ।

हुकम इलम खेल एकै, और कोई कहूं दम ।
इत रूह न कोई रूहन की, जो कछू होए सो हुकम ॥ ३

यह तारतम ज्ञान तथा नश्वर खेल दोनों ही एक ही आदेशके अधीन हैं । आदेशके अतिरिक्त यहाँ पर किसी भी प्रकारकी कोई शक्ति नहीं है । यहाँ पर ब्रह्मात्माओंकी आत्माएँ भी नहीं हैं । यहाँ पर जो कुछ भी है एक श्री राजजीका आदेश ही है ।

अपनी सुरतें हुकम, खेलावत हुकम ।
खेलत सामी हुकमें, ए देखावत तलें कदम ॥ ४

हमारी सुरताएँ भी इसी आदेशके द्वारा इस खेलमें आई हैं और यही आदेश उन्हें खेला रहा है तथा वे इसी आदेशके साथ खेल रहीं हैं. वस्तुतः धामधनीके चरणोंमें बैठी हुई आत्माओंको यह आदेश ही सब कुछ दिखा रहा है.

अरवाहें जो कोई अरस की, सो सब हक आमर ।
हम हुजत लई सिर अरस की, बैठीं आगूं हक नजर ॥ ५

यहाँ पर परमधामकी जो भी आत्माएँ हैं सभी श्री राजजीके आदेशके ही स्वरूप हैं । इसलिए हम सभीने परमधामके होनेका अधिकार जताया है क्योंकि हम श्री राजजीकी दृष्टिके समक्ष ही बैठी हुई हैं ।

अरवाह हमारी आमर, गुन अंग ईंद्री आमर ।
हम देखें सब आमर, हक देखावत पट कर ॥ ६

हमारी आत्मा तथा गुण, अङ्ग, इन्द्रियाँ आदि सभी इसी आदेशसे हैं । हम जो कुछ देख रहीं हैं वह सब यही आदेश है । यही भ्रमका आवरण डालकर हमें खेल दिखा रहा है ।

जो इत अरवाह होए अरस की, तो उडावें चौदे तबक ।
रूहें नाम धराए हम, ऐसा हुकमें कर दिया हक ॥ ७

इस नश्वर जगतमें यदि परमधामकी आत्माएँ होतीं तो ये चौदह लोक सभी उड़ जाते न श्री राजजीके आदेशने ही हम ब्रह्मात्माओंका नाम धारण किया है ।

झूठ न आवे अरस में, सांच नजरों रहे न झूठ ।
देख्या अंतर मांहे बाहेर, कछू जरा न हुकमें छूट ॥ ८

परमधाममें झूठ नहीं आ सकता और सत्य आत्माओंकी दृष्टिके समक्ष वह टिक भी नहीं सकता । जब मैंने अन्दर और बाहर सब ओरसे देखा तो पाया कि यहाँ श्री राजजीके आदेशके बिना लेश मात्र भी नहीं है ।

देख्या देखाया हुकमें, और हम भी भए हुकम ।
ना हुआ ना है ना होएगा, बिना हुकम खसम ॥ ९

वस्तुतः श्री राजजीका आदेश ही देखने अथवा दिखाने वाला है । हम स्वयं भी उसीके अधीन हैं । श्री राजजीके आदेशके बिना न कुछ हुआ है, न हो रहा है और न भविष्यमें होने वाला है ।

हुकमें देखाया हुकम कों, तिन हुकमें देख्या हुकम ।
भिस्त दोजक उन हुकमें, आखर सुख सब दम ॥ १०

श्री राजजीके आदेशने ही आदेशस्वरूप इन आत्माओंको यह खेल दिखाया है. इसलिए इसी आदेशने आदेशको देखा है । मुक्तिस्थल तथा नरक भी इसी आदेशके अधीन हैं एवं अन्तिम समयमें सभीको सुख भी इसीके कारण प्राप्त होगा ।

जिन नाम धराया हुकमें, रूहें फिरस्ते सिर पर ।
पोहोंचे अपनी निसबतें, द्वार बका खोल कर ॥ ११

श्री राजजीके आदेशने ही ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरीसृष्टिका नाम धारण किया है । वे सभी अखण्डका द्वार खोलकर इसी आदेशके कारण अपने सम्बन्धके अनुरूप परमधाम तथा अक्षरधाममें पहुँचेंगी ।

हम उठ बैठे अरस में, हमकों हुकमें दिया सब याद ।
हुकमें हुकम खेल देखाइया, सो हुकमें हुकम आया स्वाद ॥ १२

जब हम परमधाममें उठकर बैठ जाएँगी तब यह आदेश ही हमें खेलकी बात याद कराएगा । वस्तुतः इस आदेशने ही आदेशको खेल दिखाया है और आदेशसे ही आदेशको खेलका स्वाद प्राप्त होता है ।

यों मिहीं बातें कै हुकम की, हुआ हुकम सब में एक ।
अरस में हम सिर ले उठे, सब सिर ले कहे विवेक ॥ १३

इस प्रकार श्री राजजीके आदेशका रहस्य अत्यन्त सूक्ष्म है । सर्वत्र एक श्री राजजीका आदेश ही कार्य कर रहा है । जब हम परमधाममें जागृत होकर बैठ जाएँगी तब इसी आदेशके कारण इस नश्वर जगतके खेलकी बातें करेंगी ।

हम जुदे न हुए अरस से, और जुदे हुए बेसक ।
हम रूहें खेल देख्या नहीं, और खेल की बातें करीं मुतलक ॥ १४

वस्तुतः हम ब्रह्मात्माएँ परमधामसे अलग नहीं हुई हैं और इस आदेशके द्वारा सुरता रूपमें अलग भी हुई हैं. वास्तवमें हम ब्रह्मात्माओंने यह खेल भी नहीं देखा है तथापि हम निश्चय ही परमधाममें इस खेलकी बातें करेंगी ।

इन बिध सब हुकमें कर, खेल देखाया खिलवत अंदर ।
बातें खिलवत की करीं खेलमें, जो गुझ हक के दिल भीतर ॥ १५

इस प्रकार श्री राजजीके आदेशने ही ब्रह्मात्माओंको मूलमिलावामें यह खेल दिखाया है । ब्रह्मात्माओंने इस खेलमें सुरता रूपमें आकर श्री राजजीके हृदयकी गुप्त बातें भी प्रकट कीं हैं ।

और खेल की बातें सब, होसी बीच खिलवत ।
लेसी खेलका सुख खिलवत में, लिया खेलमें सुख निसवत ॥ १६

इसी प्रकार इस नश्वर खेलकी बातें भी मूलमिलावामें होंगी । जिस प्रकार इस नश्वर खेलमें परमधामके सुखका अनुभव किया उसी प्रकार मूल मिलावामें भी नश्वर खेलके सुखोंका अनुभव करेंगी ।

छोड्या नहीं अरस कों, और खेलमें भी गैयां ।
अंतराए भी हुई अरस से, और जुदियां भी न भैयां ॥ १७

यह सब श्री राजजीके आदेशका ही प्रभाव है कि हमने परमधामको भी नहीं छोड़ा और हम नश्वर खेलमें भी चलीं गईं । परमधामसे अन्तराय भी हुआ और हम उससे दूर भी नहीं रहीं ।

ए विध सब हुकम की, हुकमें किए बनाए ।
वास्ते इसक रबदके, दोऊ ठौर दिए देखाए ॥ १८

यह सम्पूर्ण विशेषता ही श्रीराजजीके आदेशकी है । उसीने यह सब कुछ किया है । प्रेमकी परिचर्चाके लिए (कारण) ही ब्रह्मात्माओंको परमधाम तथा नश्वर जगतके सुखोंका अनुभव करवाया है ।

और साहेबी अपनी, देखाई नीके कर ।
क्यों कहु बडाई हक की, मेरा खसम बडा कादर ॥ १९

इस प्रकार श्री राजजीने हमें अपनी प्रभुताका भलीभाँति दर्शन करवाया । मैं धामधनीकी महत्ताका क्या वर्णन करूँ ? मेरे धनी बड़े समर्थ हैं ।

महामत कहें ऐ मोमिनो, हकें बैठाए तलें कदम ।
करसी हांसी बीच अरस के, जो करी हुकमें इलम ॥ २०

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! धामधनीने हमें अपने चरणोंमें ही बैठाया है । उनके आदेश और ज्ञानने इस जगतमें हमारी जो स्थिति की है वे परमधाममें उसका उपहास करेंगे ।

प्रकरण १६ चौपाई ६००

श्री सिन्धी (हिन्दुस्तानी प्रकरणों सहित) सम्पूर्ण

श्री ५ नवतनपुरीधाम, जामनगर